• जयपुर, शुक्रवार, 31 मई 24 • वर्ष 13 • अंक 274 • पृष्ठ : 8 • मूल्य : 1 रुपये

www.chamaktarajasthan.in| Email : chamaktarajasthan8789@gmail.com

डाक पंजीयन संख्याः RJ/JPC/D19/2024-25

RNI. No. RAJHIND/2011/40950

दैनिक

राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

सच के साथ मजबूती से बढ़ाये क़दम

चमकता राजस्थान

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

विज्ञापन के लिए : 93145 05000

अजमेर, सीकर, झुंझनुं, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिंडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

सुविचार

''सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।''

● **स्वामी विवेकानंद**

पेज @3 मुख्यमंत्री भजनलाल ने किया पंप हाउस का निरीक्षण, दिये आवश्यक.....

पेज @5 प्रभारी सचिव ने समीक्षा बैठक लेकर अधिकारियों को दिए दिशा-निर्देश...

पेज @8 » भाजपा के वरिष्ठ नेता स्व.भंवर लाल शर्मा की पुण्यतिथि...

न्यूज अपडेट

प्रवर्तन निदेशालय ने अभिनेत्री ऋतुपर्णा सेनगुप्ता को भेजा समन

● बंगाल राशन वितरण घोटाला

कोलकाता/एजेंसी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गुरुवार को लोकप्रिय बंगाली फिल्म अभिनेत्री ऋतुपर्णा सेनगुप्ता को समन जारी कर पश्चिम बंगाल के करोड़ों रुपये के राशन वितरण घोटाले में पूछताछ के लिए बुलाया है।

सूत्रों ने बताया कि अभिनेत्री को 5 जून को कोलकाता के उत्तर बाहरी इलाके में सॉल्ट लेक स्थित सीजीओ कॉम्प्लेक्स में एजेंसी के कार्यालय में उपस्थित होने के लिए कहा गया है। हालांकि, अधिकारी राशन वितरण घोटाले से अभिनेत्री के संबंध के बारे में पूरी तरह से चुप्पी साधे हुए हैं। खबर लिखे जाने तक सेनगुप्ता ने इस संबंध में कोई प्रतिक्रिया नहीं दी थी। यह पहली बार नहीं है जब सेनगुप्ता को ईडी अधिकारियों ने समन जारी किया है। इससे पहले 2019 में पश्चिम बंगाल के करोड़ों रुपये के रोज वैली चिट फंड घोटाले में भी केंद्रीय एजेंसी ने उन्हें तलब किया था। उस समय उन्हें रोज वैली ग्रुप के कुछ एंटरटेनमेंट वेंचर में शामिल होने के कारण समन किया गया था। उन्होंने उस समूह की कुछ फिल्मों में भी काम किया था।

नहाने के लिए जाने पर डूब जाने से तीन बच्चों की मौत

गिरिडीह/एजेंसी। एक ओर जहां जिले भर में इन दिनों भीषण गर्मी पड़ रही है।लोगों का हाल बेहाल है। जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया है। पूर्वाह्न 9 बजे के बाद ही सड़कों पर सन्नाटा पसरने लगता है।

वहीं गुरुवार को जिले के दो थाना क्षेत्र में तीन बच्चों की नहाने के लिए जाने पर डूब जाने से मौत हो गई। पहली घटना जहां जिले के डुमरी थाना क्षेत्र अंतर्गत बंद पत्थर खदान में हुई। यह चीनो ग्राम निवासी वसी अंसारी का पुत्र शोएब अपने दोस्तों के साथ पत्थर खदान में नहाने गया था। जहां पैर फिसल जाने से वह डूब गया और उसकी मौत हो गई।वही देवरी में दो बच्चों के डूब जाने से मौत हुई। देवरी थाना इलाके के हरला गांव के तालाब में डूबने से दो नाबालिग की मौत हो गई। मृतकों में देवरी थाना इलाके के गार्डीह गांव निवासी शिवम विश्वकर्मा और भोजपुर गांव निवासी प्रियांशु कुमार शामिल हैं।

आज फिर कह रहा हूं 21वीं सदी भारत की सदी होगीः मोदी

होशियारपुर/एजेंसी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लोकसभा चुनाव के प्रचार के आखिरी दिन पंजाब पहुंचे. जहां होशियारपुर में उन्होंने एक जनसभा को संबोधित किया. इस दौरान पीएम मोदी ने अपने सरकार में कराए गए कामों का जिक्र किया और नई सरकार में किए जाने वाले कामों के बारे में बताया. पीएम मोदी ने कहा कि होशियापुप को छोटी काशी कहा जाता है, ये गुरु रविदास जी की तपोभूमि है. और ये संयोग देखिए काशी जहां से मैं सांसद हूं, वहां गुरुरविदास जी का जन्म हुआ था. इसलिए होशियारपुर की इस पुण्यभूमि पर चुनाव अभियान का समापन होना मेरे लिए अपने आप में सौभाग्य से कम नहीं है.

पीएम मोदी ने कहा कि गुरु रविदास जी कहते थे कि मन चंगा तो कठौती में गंगा. मैं भी पूरे ईमानदार मन से देश की सेवा में जुटा हूं. इसीलिए देश की जनता का आशीर्वाद मेरे साथ है. मैं देशभर में जाकर के आया हूं. जनता जनार्दन ने तीसरी बार मोदी सरकार बनाना पक्का कर लिया है. आज देश में आकांक्षाएं नई हैं, आज देश में उम्मीदें नई हैं आज देश में आत्मविश्वास नया है. दशकों बाद ऐसा समय आया है पूर्ण बहुमत वाली सरकार हैट्रिक बनाने जा रही है. जिसकी वजह है विकसित भारत का सपना. पीएम मोदी ने आगे कहा कि आज हर भारतीय विकसित भारत के सपने के साथ एक रूप हो गया है. जुड़ गया है इसलिए हर देशवासी हमें आशीर्वाद दे रहा है. पीएम मोदी ने कहा कि मैंने लाल किले से कहा था यही समय है सही समय है. और आज फिर कह रहा हूं 21वीं सदी भारत की सदी होगी. पीएम ने कहा कि पिछले दस साल में भारत ने जो विकास करके दिखाया है वो अभूतपूर्व रहा है. आज जब पंजाब के लोग दूसरे राज्यों के लोग विदेश जाते हैं तो खुद देखते हैं कि वहां भारत और भारतीयों की इज्जत कितनी बढ़ गई है. जब देश में दमदार सरकार होती है तो विदेशी सरकार भी हमारा दम देखती है.

पीएम मोदी ने कहा कि गरीब कल्याण मेरी सरकार की बहुत बड़ी प्राथमिकता, इसमें गुरु रविदास जी की बहुत बड़ी प्रेरणा है. पीएम मोदी ने कहा कि बीते दस वर्षों में हमने गरीब से गरीब को मुफ्त अनाज और मुफ्त इलाज की सुविधा दी है. आज किसी भी गरीब, दलित, वंचित मां की संतान को भूखे पेट नहीं सोना पड़ता. आज गरीब महिला को अपनी बीमारी छिपाने की मजबूरी नहीं है. आज उसके पास राशन कार्ड है आयुष्मान कार्ड है.

पीएम मोदी ने आगे कहा कि यही लोग हैं जो अपने वोट बैंक के लिए लगातार राम मंदिर का विरोध करते रहे. यही वजह है कि इंडी गठबंधन अपनी तुष्टिकरण की राजनीति की वजह से सीएए का भी विरोध कर रहा है. आज कल देश के लोग इंडी गठबंधन वालों से संविधान-संविधान की रट सुन रहे हैं. ये वे लोग हैं जिन्होंने इमरजेंसी में संविधान का गला घोंट दिया था. जब चौरासी के दंगों में सिखों के गले में टायर डालकर जलाया जा रहा था. तो इन्हें संविधान की नहीं सूची. मोदी ने ने एक संकल्प लिया है कि वो दलितों-पिछड़ों आदिवासियों का आरक्षिण किसी को छीनने नहीं देगा.

नोएडा के सेक्टर 100 की ब्लूबर्ड सोसायटी में फटा एसी, आग की चपेट में कई घर

नोएडा/एजेंसी।

प्रचंड गर्मी के बीच देशभर के कई इलाकों में इन दिनों आग लगने की घटनाओं ने हर किसी की चिंता बढ़ा दी है. इस बीच उत्तर प्रदेश की नोएडा सिटी से दिल दहला देने वाली खबर सामने आई है. दरअसल एनसीआर का हिस्सा रहे नोएडा की सेक्टर 100 स्थित हाईराइज सोसायटी में बड़ा हादसा हो गया. यहां गुरुवार सुबह अचानक एक फ्लैट के बाहर लगा एयर कंडीशनर फट गया. यह ब्लास्ट इतना जोरदार था कि इसकी आवाज से ही पूरी सोसायटी हिल गई. इस धमाके के बाद फ्लैट में आग लग गई और इस आग की चपेट में कई फ्लैट आ गए. मिली जानकारी के मुताबिक एसी फटने की ये घटना सेक्टर 100 में स्थित लोटस बुलेवार्ड सोसायटी में हुई है. यहां पर एक फ्लैट में अचानक एसी में जोरदार धमाका हुआ और इसके बाद फ्लैट में आग लग गई. इस आग ने अपने ऊपर और आस-पास के फ्लैटों को भी चपेट में ले लिया. आग लगने की वजह से सोसायटी में अफरा तफरी मच गई.

लोग फ्लैट छोड×कर भागने लगे. कई और फ्लैट भी आग की चपेट में आने की संभावना जताई जा रही है. हालांकि लोगोंने इस आग लगने की सूचना तुरंत फायर ब्रिगेड को दी और दमकल की गाडियां भी मौके पर पहुंच गई हैं. फिलहाल आग पर काबू पाने का प्रयास किया जा रहा है.

एक दिन पहले यानी बुधवार को नोएडा से सटे गाजियाबाद स्थिति इंद्रापुरम में भी एक घर में ऐसी ही आग लगने की घटना सामने आई थी. इस घटना से इलाके में हड×कंप मच गया था. यहां भी एसी के फटने की वजह से घटना घटी थी. हालांकि इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ था.

उत्तर प्रदेश में गर्मी का कहर, लू की चपेट में आने से अब तक 51 लोगों की मौत

सूबे में 49 के पास पहुंचा पारा

लखनऊ/एजेंसी।

उत्तर भारत के अधिकांश हिस्से में इनदिनों प्रचंड गर्मी पड़ रही है. गर्मी की आलम ये है कि अब इससे मौत होने की खबरें भी सामने आने लगी हैं. उत्तर प्रदेश में भी गर्मी तांडव मचा रही है.

रिपोर्ट के मुताबिक, बुंदेलखंड में लू की चपेट में आने से बुधवार को 31 लोगों की मौत हो गई. सबसे ज्यादा लोगों की जान महोबा में हुई. जहां आठ लोग लू लगने से काल के गाल में समा गए. इसके बाद हमीरपुर में सात तो चित्रकूट में 6 लोगों की मौत लू की चपेट में आने से हुई है.

वहीं फतेहपुर में पांच, बांदा में तीन और जालौन में लोगों की मौत लू लगने से हुई है. बताया जा रहा है कि इनमें से ज्यादातर लोग किसी काम के चलते घर से बाहर निकले थे और रास्ते में अचेत होकर गिर गए. अस्पताल पहुंचने से पहले ही उन्होंने दम तोड़ दिया. वहीं बहराइच में लू लगने से नानपारा और कैसरगंज इलाके में दो लोगों की मौत की खबर है. वहीं प्रयागराज में लू की चपेट में आने से एक दरोगा समेत चार लोगों की मौत हुई है. वहीं दिल्ली से सटे ग्रेटर नोएडा में मेरठ के रहने वाले एक बुजुर्ग की लू लगने से मौत हो गई. इसके अलावा बलिया में एक महिला की जान गई है तो वहीं वाराणसी में छह, मिर्जापुर में तीन, आजमगढ़, जौनपुर और सोनभद्र में एक-एक की मौत लू की चपेट में आने से हुई है. ऐसी आशंका जताई जा रही है कि इन सभी लोगों की मौत लू लगने से हुई है. हालांकि, मौत की पुष्टि के लिए सभी शवों का पोस्टमार्टम कराया गया है. जिसेस मरने की सही वजह सामने आ सके. बुधवार को उत्तर प्रदेश के ज्यादातर इलाकों में लू चली. वहीं जिन इलाकों में लू नहीं रही. वहीं गर्मी हवाओं ने लोगों को लू का एहसास कराया.

आखिरी चरण में आठ राज्यों की 57 सीटों पर मतदान, पीएम मोदी समेत कई दिग्गजों की प्रतिष्ठा दांव पर

नईदिल्ली/एजेंसी।

लोकसभा चुनाव के सातवें और अंतिम चरण के चुनाव प्रचार का आज आखिरी दिन है. आज शाम 6 बजे अंतिम चरण के चुनाव प्रचार का शोर शांत हो जाएगा. आखिरी चरण के लिए मतदान शनिवार यानी 1 जून को होगा. इस चरण में आठ राज्यों की 57 लोकसभा सीटों के लिए वोट डाले जाएंगे. इस चरण में पीएम मोदी की वाराणसी लोकसभा सीट भी शामिल है. पीएम मोदी के अलावा इस चरण में कई दिग्गजों की प्रतिष्ठा दांव पर है.

बता दें कि इस बार लोकसभा चुनाव सात चरणों में कराया गया है. पहले चरण के लिए मतदान 19 अप्रैल और दूसरे चरण के लिए 26 अप्रैल को वोटिंग हुई थी. जबकि तीसरे चरण के लिए 7 मई और चौथे चरण के लिए मतदान 13 मई को हुआ. वहीं पांचवें चरण के लिए 20 मई को वोटिंग हुई थी. जबकि छठे चरण के लिए 25 मई को वोट डाले गए थे.

लोकसभा चुनाव के आखिरी चरण में 8 राज्यों की 57 सीटों पर वोट डाले जाएंगे. इस चरण में उत्तर प्रदेश की 13, बिहार की 8, ओडिशा की 6, झारखंड की 3, हिमाचल प्रदेश की 4, पश्चिम बंगाल की 9 और चंडीगढ़ की एक सीट के लिए वोट डाले जाएंगे. इसी के साथ लोकसभा चुनाव 2024 का मतदान समाप्त हो जाएगा. वहीं वोटों की गिनती 4 जून को होगी और इसी दिन नतीजे भी जारी कर दिए जाएंगे.

लोकसभा चुनाव के सातवें चरण में वाराणसी में भी वोटिंग होगी. इस सीट से पीएम मोदी लगातार तीसरी बार चुनाव लड़ रहे हैं. वहीं पश्चिम बंगाल की डायमंड हार्बर सीट भी इस चरण में बेहद खास है. क्योंकि इस सीट पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी चुनावी मैदान में हैं. जबकि पाटलिपुत्र लोकसभा सीट के लिए भी इस चरण में मतदान होगा. इस सीट से लालू प्रसाद यादव की बेटी मीसा भारती चुनावी मैदान में हैं.

लोकसभा चुनाव के आखिरी चरण में उत्तर प्रदेश की जिन 13 सीटों पर चुनाव होना है उनमें 65 विधानसभा आती हैं. इन 65 विधानसभा सीटों में से 43 पर बीजेपी का कब्जा है. जबकि 11 पर सपा और दो पर अपना दल (एस), वहीं 4 पर सुभासपा और 03 पर निषाद पार्टी के विधायक हैं. अगर एनडीए के घटक दलों को जोड़ लिया जाए तो इन 65 विधानसभा सीटों में से 52 विधानसभाओं पर एनडीए ने जीत दर्ज की है. इसलिए बीजेपी के लिए यूपी में आखिरी चरण का मतदान काफी अहम है. इसके अलावा पंजाब के लिए भी लोकसभा चुनाव का आखिरी चरण बेहद खास है. क्योंकि 1 जून को राज्य की 13 सीटों पर मतदान होना है. 2019 में इनमें आठ सीटों पर कांग्रेस ने जीत हासिल की थी, जबकि आम आदमी पार्टी ने एक और बीजेपी ने दो सीटों पर जीत हासिल की थी. जबकि 2 सीटों पर शिरोमणि अकालीदल के उम्मीदवार विजयी हुए थे. आम आदमी पार्टी के नेता डा. अरुण धवन का कहना है कि इस बार लड़ाई तगड़ी है. आम आदमी पार्टी 08 सीट जीत सकती है. कांग्रेस 03 सीट पर अच्छा लड़ रही है. वहीं बीजेपी तीन सीट पर कांटे के मुकाबले में है.

कई इलाकों में झमाझम बारिश शुरू, नॉर्थईस्ट में भी आज ही होगी एंट्री

भीषण गर्मी के बीच बड़ी खुशखबरी, केरल पहुंचा मानसून

नई दिल्ली/एजेंसी।

सूरज के सितम से जूझ रहे देश को बड़ी राहत मिल गई है. भीषण गर्मी के बीच भारत में मॉनसून ने दस्तक दे दी है. ये दस्तक केरल में हुई है. अपने तय समय से दो दिन पहले मॉनसून ने केरल में एंट्री ले ली है. दरअसल देश में दो मॉनसून आते हैं एक साउथ वेस्ट यानि दक्षिण पश्चिम और दूसरा नॉर्थईस्ट यानी पूर्वोत्तर. खास बात यह है कि 2017 के बाद पहली बार देश में एक साथ दोनों मॉनसून एक ही दिन आ रहा है.

देश के दक्षिण राज्य केरल में आखिरकार मॉनसून ने अपना आमद दर्ज करवा ली. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक केरल में मॉनसून अपने तय से समय से पहले ही आ गया है. प्रदेश के कई इलाकों में एक साथ झमाझम बारिश भी हो रही है. इस बारिश की वजह से लोगों ने गर्मी से राहत की सांस ली है. आईएमडी के मुताबिक इस बार मॉनसून के दो दिन पहले आने की बड़ी वजह है चक्रवाती तूफान रेमल. इस तूफान की वजह से मॉनसून की गति भी बढ़ गई और यह अपने तय समय से 48 घंटे पहले ही केरल पहुंच गया. इसी तूफान के कारण पूर्वोत्तर में भी मॉनसून जल्दी पहुंचा और देश में दोनों मॉनसून एक साथ दस्तक दे रहे हैं. बता दें कि पूर्वोत्तर के भी कई राज्यों में बारिश का दौर जारी है. सबसे ज्यादा बारिश मेघालय में हो रही है.

मॉनसून की बात करें तो मुंबई में इसकी एंट्री 10 जून तक होने की संभावना मौसम विभाग की ओर से जताई गई है. जबकि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में मॉनसून 27 जून तक दस्तक दे सकता है. इसी तरह दक्षिण राज्यों की बात करें तो बैंगलूरू में इसकी एंट्री 13 या 14 जून को हो सकती है.

शशि थरूर का पूर्व कर्मचारी सोने की तस्करी में पकड़ा गया

नईदिल्ली/एजेंसी। दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर बुधवार को सीमा शुल्क के अधिकारियों ने एक व्यक्ति को 55 लाख रुपये के सोने के साथ गिरफ्तार किया है।आरोपी का नाम शिव प्रसाद है, जो केरल के तिरुवनन्तपुरम से कांग्रेस सांसद शशि थरूर का पूर्व कर्मचारी है।मामले में जानकारी सामने आने के बाद भाजपा हमलावर है। तिरुवनन्तपुरम में उनके प्रतिद्वंद्वी भाजपा उम्मीदवार राजीव चंद्रशेखर ने कहा कि इंडिया गठबंधन का सोने के तस्करों से संबंध है।

मामले में थरूर का नाम जुडने पर उन्होंने एक्स पर लिखा, धर्मशाला में चुनाव प्रचार के दौरान मुझे अपने स्टाफ के एक पूर्व सदस्य से जुड़ी घटना के बारे में सुनकर झटका लगा।थरूर ने आगे लिखा, उसे अनुकंपा के आधार पर अंशकालिक आधार पर रखा गया था। मैं किसी भी कथित गलत काम का समर्थन नहीं करता और मामले की जांच के लिए अधिकारियों के प्रयास का पूरा समर्थन करता हूं। कानून को अपना काम करना चाहिए। दिल्ली हवाई अड्डे पर बुधवार को सीमा शुल्क के अधिकारियों ने गोपनीय सूचना के आधार पर जांच के दौरान शिव प्रसाद को गिरफ्तार किया था।

चुनावी मौसम... तपती धरती-झुलसता जीवन

आम चुनाव के अंतिम चरण में चढ़े सियासी पारा के साथ देश चढ़ते पारे से परेशान है। उत्तर, पश्चिम, मध्य और पूर्वी भारत के तापमान से हाहाकार मचा हुआ है। एक ओर जहां समग्र मतदान प्रतिशत 2019 के स्तर पर नहीं आ पा रहा है वहीं सूर्यदेव को लगता है स्वयं से ही तापमान बढ़ाने की होड़ चल रही हैं। 29 मई को देश की राजधानी दिल्ली का पारा 52 के आंकड़े को छू गया, हो सकता है इसको लेकर कोई मत भिन्नता हो पर इसमें कोई दोराय नहीं कि दिल्ली का पारा 50 डिग्री सेल्सियस से तो ज्यादा ही रहा है।

देश के 17 से अधिक शहरों में तापमान उच्चतम स्तर पर चल रहा है। यह एक तरह का प्राकृतिक आपाकाल है। हीटवेव या यूं कहें कि लू के थपेड़ों ने जनजीवन को प्रभावित करके रख दिया है। तापघात के कारण देश के विभिन्न हिस्सों में मौत के समाचार भी आ रहे हैं। तस्वीर का एक पहलू यह है कि अभी तक सही मायने में हमारे देश में हीटवेव को डिजास्टर मैंनेजमेंट में पूरी तरह से शामिल नहीं किया गया है। कहीं-कहीं सड़कों पर पानी छिड़कने या लोगों को घर या कार्यस्थल से बाहर नहीं निकलने की सलाह दी जाती रही है। लू से बचाव के उपायों खासतौर से खाली पेट नहीं रहने और तरल पदार्थ का अधिक से अधिक सेवन करने की सलाह दी जाती है। 1850 के बाद 2023 का साल सबसे गर्म साल रहा है पर जिस तरह से तापमान दिन प्रतिदिन बढ़ते हुए जन जीवन को प्रभावित कर रहा है। उससे साफ हो जाता है कि 1850 के बाद 2023 नहीं बल्कि अब तो 2024 सबसे गर्म साल रहने वाला है।

समूचा उत्तरी, पश्चिमी, मध्य व पूर्वी भारत हीटवेव के चपेट में आ गया है। देश की राजधानी दिल्ली के साथ ही राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तर प्रदेश, विदर्भ आदि गंभीर हीटवेव से प्रभावित इलाके हैं। राजस्थान के चुरु और फलोदी आदि का पारा तो 50 के आसपास ही चल रहा है। पानी, बिजली और हीटवेव के कारण बीमारी के हालात गंभीर होते जा रहे है। इतनी तेज गर्मी में पेयजल की उपलब्धता, बिजली की आपूर्ति व ट्रिपिंग की समस्या से निजात पाना मुश्किल हो रहा है। इस समय हीटवेव के कारण जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त होने के साथ ही सड़कों पर कर्फ्यू जैसे हालात हो रहे हैं। असली समस्या तो सरकार के सामने पानी, बिजली और हीटवेव से प्रभावित लोगों को तत्काल इलाज की व्यवस्था सुनिश्चित करना है। आदर्श आचार संहिता लागू होने के बावजूद सभी प्रदेशों की सरकारें बेहतर प्रबंधन कर रही है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा 29 मई को जहां स्वयं भरी दोपहरी सिर पर गमछा लपेट राजस्थान की राजधानी जयपुर में पेयजल व्यवस्था को देखने निकल पड़े तो निश्चित रूप से प्रशासन और आमजन में एक संदेश गया है। प्रदेश के सभी जिलों में 28 व 29 मई को दो दिन के लिए सभी प्रभारी सचिवों को प्रभार वाले जिलों में जाकर पानी, बिजली, दवा, इलाज आदि की व्यवस्थाओं का जायजा लेने भेजकर साफ संकेत दे दिए हैं। गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि जहां दो दिन तक सरकार के वरिष्ठ अधिकारी इस गर्मी के मौसम में अपने कार्यालयों से निकल कर जिलों में स्थानीय प्रशासन व जिले के अधिकारियों के साथ व्यवस्थाओं की समीक्षा कर रहे हैं वहीं आपदा के इस दौर में आवश्यक दिशा-निर्देश देकर लोगों को राहत पहुंचाने में जुट गए हैं।

इतना ही नहीं, मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा व मुख्य सचिव सुधांश पंत स्वयं प्रभारी सचिवों व जिला कलक्टरों सहित अधिकारियों से 31 मई को संवाद कायम कर फीड बैक लेने के साथ ही आवश्यक दिशा-निर्देश देंगे। राजस्थान तो एक उदाहरण है। कमोबेश ऐसे प्रयास हीटवेव से प्रभावित अन्य राज्यों में भी किए जा रहे होंगे, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। सामान्यत: एक मार्च से लेकर 21 जून तक सूर्य देव धरती के नजदीक होते हैं। देशी पंचाग के अनुसार नौतपा चल रहे हैं और माना जाता है कि इन नौ दिनों तक गर्मी का प्रकोप कुछ अधिक ही रहता है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के प्रमुख मृत्युजंय महापात्र के अनुसार आने वाले दिनों में पश्चिमी विक्षोभ और अरब सागर में नमी के कारण गर्मी से राहत मिलने के आसार अवश्य हैं। पर सवाल यह है कि इस भीषण लू या यूं कहें कि हीटवेव के लिए बहुत कुछ हम भी जिम्मेदार है। आज शहरी करण और विकास के नाम पर प्रकृति को विकृत करने में हमने कोई कमी नहीं छोड़ी है। पेड़ों की खासतौर से छायादार पेड़ों की अंधाधुंध कटाई में हमने कोई कमी नहीं छोड़ी तो दूसरी और चाहे गांव हो या शहर आंख मींचकर कंक्रीट का जंगल खड़ा करते रहे और उसका दुष्परिणाम सामने हैं। जल संग्रहण के परंपरागत स्रोतों को नष्ट करने में भी हमने कोई गुरेज नहीं किया। हमारे यहां मौसम के अनुसार खान-पान की समृद्ध परंपरा रही है पर उसे आज भुला दिया गया है। मौसम विज्ञानियों का मानना है कि पहले समुद्र में तापमान बढ़ने के साथ ही आंधी तूफान का माहौल बन जाता था और बरसात होने से लोगों को तात्कालिक राहत मिल जाती थी। पर आज तो समुद्र का तापमान बढ़ने के बावजूद हीटवेव का असर ही अधिक हो रहा है।

ऐसे में अब तात्कालिक व दीर्घकालीक योजनाएं बनाकर भविष्य की रूपरेखा तय करनी होगी, क्योंकि यह तो साफ हो चुका है कि प्रकृति का हमने इतना दोहन कर लिया है कि हालात निकट भविष्य में सुधरते नहीं दिख रहे। अब सुविधाओं और प्रकृति के बीच सामंजस्य की और ध्यान देना होगा नहीं तो आने वाले साल और अधिक चुनौती भरे होंगे। कंक्रीट के जंगलों से लेकर हमारे दैनिक उपयोग के अधिकांश साधन तापमान को बढ़ाने वाले ही हैं। इस चुनौती से निपटना ही होगा। अब सम्मेलनों के प्रस्तावों से आगे बढ़कर क्रियान्वयन पर जोर देना होगा।

भगवान के लिए छोड़ दीजिए बीड़ी-सिगरेट

योगेश कुमार गोयल

धूम्रपान को लेकर पिछले कई दशकों में दुनियाभर में हुए अनेक अध्ययन हुए हैं। इनका सार यही है कि धूम्रपान हर दृष्टि से सेहत के लिए हानिकारक है। लेकिन जब तमाम जानकारियों और तथ्यों के बावजूद हम अपने आसपास किशोरवय बच्चों को भी धूम्रपान करते देखते हैं तो स्थिति काफी चिंताजनक प्रतीत होती है। दरअसल ऐसे किशोरों के मन मस्तिष्क में धूम्रपान को लेकर कुछ गलत धारणाएं विद्यमान होती हैं, जैसे धूम्रपान से उनके शरीर में चुस्ती-फुर्ती आती है, उनका मानसिक तनाव कम होता है, मन शांत रहता है, व्यक्तित्व आकर्षक बनता है, कब्ज की शिकायत दूर होती है आदि-आदि। तमाम वैज्ञानिक शोधों के बावजूद ऐसे व्यक्ति समझना ही नहीं चाहते कि धूम्रपान करने से उनके अंदर ऐसी कोई ताकत पैदा नहीं होने वाली कि देखते ही देखते वो किसी ऊंचे पर्वत पर छलांग लगा सकें या महाबली पवनपुत्र हनुमान की भांति विशाल समुद्र लांघ जाएं। वास्तविकता यही है कि धूम्रपान एक ऐसा धीमा जहर है, जो धीमे-धीमे इसका सेवन करने वाले व्यक्ति का दम घोंटता है।

धूम्रपान शरीर में कई प्रकार की प्राणघातक बीमारियों को जन्म देता है और ऐसे व्यक्ति को धीमी गति से मृत्यु शैया तक पहुंचा देने का माध्यम बनता है। प्रतिवर्ष विश्वभर में 31 मई को 'विश्व तम्बाकू निषेध दिवस' मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य तम्बाकू सेवन के व्यापक प्रसार और नकारात्मक स्वास्थ्य प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित करना है, जो दुनियाभर में प्रतिवर्ष लाखों मौतों का कारण बनता है। इस वर्ष विश्व तंबाकू निषेध दिवस 'तंबाकू उद्योग के दखल से बच्चों की रक्षा करना' थीम के साथ मनाया जा रहा है ताकि भविष्य की पीढ़ियों की रक्षा की जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि तंबाकू के इस्तेमाल में गिरावट जारी रहे।

धूम्रपान करने वालों द्वारा सालभर में सात हजार करोड़ से ज्यादा सिगरेट फूंक दी जाती हैं। हर साल फूंकी जाने वाली इन्हीं सिगरेट के धुएं से वातावरण भी कितना प्रदूषित होता है, इसका अनुमान इसी से लगा सकते हैं कि इस खतरनाक धुएं से करीब 50 टन तांबा, 15 टन शीशा, 11 टन कैडमियम तथा कई अन्य खतरनाक रसायन वातावरण में घुलते हैं। हालांकि सिगरेट महंगी होने के कारण भारत में बीड़ी का प्रचलन निम्न तथा मध्यमवर्गीय तबके में ज्यादा है और ऐसा अनुमान है कि देश में प्रतिवर्ष सौ अरब रुपये मूल्य से भी अधिक की बीड़ी का सेवन किया जाता है। एक सरकारी अध्ययन के मुताबिक तम्बाकू सेवन से होने वाली बीमारियों के इलाज पर सालभर में करीब 1.04 लाख करोड़ रुपये खर्च हो जाते हैं। तीन दशक पूर्व प्रकाशित पुस्तक 'मौत को खुला निमंत्रण' में विस्तार से यह बताया गया है कि धूम्रपान वास्तव में एक ऐसा धीमा जहर है, जो हमारे शरीर में धीरे-धीरे प्राणघातक रोगों को जन्म देता है और व्यक्ति को धीमी गति से मृत्यु शैया पर पहुंचा देता है।

दुनियाभर में धूम्रपान के कारण 2019 में 77 लाख लोगों की मौत हुई, जिनमें से 17 लाख मौतें इस्केमिक हार्ट डिजीज के कारण, 16 लाख सीपीओडी के कारण, 13 लाख ट्रैकियल, ब्रोंकस और फेफड़ों के कैंसर से तथा 10 लाख स्ट्रोक के कारण हुई। रिपोर्ट के मुताबिक दुनियाभर में होने वाली मौतों में से हर 5 में से 1 पुरुष की मौत धूम्रपान के कारण हो रही है। विभिन्न सर्वेक्षणों के अनुसार माना गया है कि विकसित देशों में चालीस फीसदी से ज्यादा पुरुष और इक्कीस फीसदी से ज्यादा स्त्रियां धूम्रपान करती हैं जबकि विकासशील देशों में सिर्फ आठ फीसदी स्त्रियों को इसकी लत लगी है तथा पुरुषों की संख्या पचास फीसदी से अधिक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार तम्बाकू के सेवन के कारण प्रतिदिन करीब आठ हजार व्यक्ति फेफड़ों के कैंसर के शिकार होकर मर जाते हैं।

संगठन का अनुमान है कि यदि दुनियाभर में धूम्रपान की लत ऐसे ही बढ़ती रही तो बहुत जल्द धूम्रपान के कारण पचास करोड़ लोग मारे जा चुके होंगे और अगले तीस वर्षों में केवल गरीब देशों में ही धूम्रपान से मरने वालों की संख्या दस लाख से बढ़कर सत्तर लाख तक पहुंच जाएगी। संगठन का अनुमान है कि प्रतिवर्ष विश्वभर में आठ हजार से ज्यादा नवजात शिशु धूम्रपान की वजह से असमय काल के ग्रास बन जाते हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि सभी प्रकार के कैंसर में से करीब 40 फीसदी का कारण धूम्रपान ही होता है। डब्ल्यूएचओ का कहना है कि कैंसर, हृदय रोग, सांस की बीमारी, डायबिटीज इत्यादि बीमारियों में भी धूम्रपान काफी खतरनाक हो सकता है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को धूम्रपान से बचना चाहिए। बहरहाल, धूम्रपान छोड़ने के फायदों के बारे में विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि धूम्रपान छोड़ने के सिर्फ बीस मिनट के अंदर उच्च रक्तचाप में गिरावट आती है तथा बारह घंटे के बाद रक्त में कार्बन मोनोक्साइड के विषैले कणों का स्तर सामान्य हो जाता है। दो से बारह सप्ताह में फेफड़ों की कार्यक्षमता में तेजी से वृद्धि होती है तथा एक से नौ माह में खांसी तथा श्वसन संबंधी समस्याएं कम हो जाती हैं। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक मनुष्य के फेफड़ों में जादुई क्षमता होती है, जो धूम्रपान से होने वाले कुछ नुकसान को स्वयं ठीक कर देती है और जो व्यक्ति धूम्रपान छोड़ देते हैं, उनकी चालीस फीसदी कोशिकाएं ऐसे लोगों की तरह ही हो जाती हैं, जिन्होंने कभी धूम्रपान नहीं किया।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

सबके लिए आदर्श है अहिल्याबाई का जीवन

रमेश शर्मा

संसार में कुछ ऐसी विभूतियां भी जन्मी हैं जो अवतारी तो नहीं थीं लेकिन उनका व्यक्तित्व और कृतित्व अवतारी शक्तियों के समतुल्य रहा। इंदौर की महारानी देवि अहिल्याबाई का व्यक्तित्व ऐसा ही था। उन्हें "देवि" किसी दरवारी कवि ने नहीं कहा, अपितु जन सामान्य ने कहकर पुकारा। उनका सादगीपूर्ण जीवन, धर्म, संस्कृति और राष्ट्र के लिये समर्पण जीवन, उनके द्वारा किये गये जन कल्याणकारी कार्य, विशेषकर किसानों और महिलाओं के हित में लिये गये उनके निर्णयों ने उनकी ओर पूरे भारत के शासकों का ध्यान आकर्षित किया। यह उनके व्यक्तित्व की विशेषता ही है कि आज लगभग तीन सौ वर्ष बीत जाने के बाद भी वे जन सामान्य में सम्मान और श्रृद्धा का केन्द्र हैं।

वे सही मायने में अजातशत्रु थीं। उनके जीवन के किसी प्रसंग पर, कोई नई नीति बनाने या निर्णय लेने के औचित्य पर अथवा उनकी कार्यशैली पर कभी किसी ने कोई नकारात्मक टिप्पणी की। न उनके जीवनकाल में और उनके बाद इतिहास के शोधकर्ताओं ने। वे अपने जीवन में भी एक आदर्श थीं और आज भी सबके लिये आदर्श हैं। ब्रिटिश इतिहासकार जॉन कीस ने तो उन्हें "द फिलॉसफर क्वीन" की उपाधि दी है। उनकी प्रसिद्धि उनके परिवार की पृष्ठभूमि से नहीं अपितु व्यक्तित्व और कृतित्व से है। होल्कर परिवार में कितनी महारानियां रहीं हैं पर किसी को इतनी प्रसिद्धि नहीं मिली जितनी अहिल्याबाई को मिली। यदि भारत की शासक महिलाओं के बारे में विचार करें। भारत में महिला शासक उनसे पहले भी रहीं और बाद में भी इतनी सादगी से भरा जीवन और अपने राज्य क्षेत्र को सुरक्षित समृद्ध और शांत बनाने का ऐसा उदाहरण कहीं नहीं। सबसे महत्वपूर्ण बात है विषम और विपरीत परिस्थितियों को चीरकर न केवल अपने राज्य क्षेत्र में अपितु पूरे भारत में उन्होंने सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अभियान चलाया और सनातन मानविन्दुओं को पुनर्प्रतिठित किया, यह असाधारण है। मानों वे छत्रपति शिवाजी महाराज के सपने को आकार दे रहीं थीं।

अहिल्याबाई व्यवहार में जितनी सरल और शांत थीं, संकल्पपूर्ति के लिये उतनी ही कठोर। वे बहुत विचार करके निर्णय लेतीं थीं और एक बार निर्णय लेकर फिर कभी पीछे नहीं हटतीं थीं। उन्होंने भारत के प्रत्येक भाग और प्रत्येक समाज वर्ग के व्यक्ति के हित को ध्यान में रखकर काम किये। इन कार्यों पर जितना धन उन्होंने व्यय किया उतना किसी रियासत ने नहीं किया फिर भी उनका राजकोष समृद्ध था। उनकी विचारशीलता बहुत व्यापक थी। पूरा भारत राष्ट्र और सनातन विचार उनके चिंतन में समाया थी। वे बहुत दूरदर्शी थीं। भविष्य का भारत कैसे प्रतिष्ठित हो, आने वाली पीढ़ी और समाज कैसे सुसंस्कृत हो और कैसे भारत राष्ट्र का सांस्कृतिक गौरव पुनर्प्रतिठित हो, वे दिन रात इसी चिंतन में डूबी रहतीं थीं। इसकी झलक उनकी कार्यशैली में भी दिखती है। ऐसी विलक्षण प्रतिभा की धनी देवि अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिला अंतर्गत जामखेड़ कस्बे के ग्राम चांडी में हुआ था। उनके पिता मनकोजी राव शिंदे मराठा सेना में एक सैनिक थे। जो बाद में नायक बने। माता सुशीला बाई भी गांव के एक सामान्य किसान परिवार से थीं। सुशीला बाई का विवाह भी बालवय में हुआ और बधु बनकर चांडी आ गई थीं। पिता मनकोजी राव और माता सुशीला बाई के पूर्वज भी मराठा सेना में थे और शिवाजी महाराज के अभियानों में सहभागी रहे। दक्षिण भारत के लगभग सभी युद्धों में पिता मनकोजी राव शिन्दे पेशवाओं के साथ रहे। मनकोजी शिन्दे के भाई भी मराठा सेना में थे। शिवाजी महाराज ने अपने सैन्य परिवारों में महिला सुरक्षा का एक अभियान छेड़ा था। इसके लिये मराठा सैनिकों के परिवार की महिलाओं को आत्मरक्षा के लिये कुछ सैन्य प्रशिक्षण देकर आत्मरक्षा का अभ्यास कराया जाता था। इसका कारण यह था कि जब गांव के युवा सैन्य अभियान पर होते तब योजनापूर्वक असामाजिक तत्व गांव पर धावा बोल देते थे। विशेषकर तब भारत की मुक्ति के शिवाजी महाराज सेना का गठन किया, युवा उनकी ओर आकर्षित हुये और यह जब वे बाहर कहीं युद्ध अभियान में जाते तो आसामाजिक तत्व सीमावर्ती गांवों पर धावा बोल देते थे, लूट के साथ महिलाओं को भी निशाना बनाया जाता था। इसलिये शिवाजी महाराज ने सैन्य परिवारों की महिलाओं और गांव की बेटियों के आत्मरक्षा के लिये शारीरिक सामर्थ्य बढ़ाना और कुछ शस्त्र प्रशिक्षण देना आरंभ किया था। गांव में महिलाओं की सुरक्षा टोली भी बनाई जाती थी। ताकि जब गांव के पुरुष युद्ध अभियान हों पर तब महिलाएं अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकें। माता सुशीला देवी अपने गांव में ऐसी सुरक्षा टोली का संचालन करती थी। जिसमें महिलाएं लाठी, भाला और तीर कमान चलाने का अभ्यास करतीं थीं। अहिल्याबाई अपने माता-पिता की इकलौती संतान थीं। वे मां के साथ रहतीं थीं। आंख खोलते ही उन्होंने हर आयु वर्ग की महिलाओं को स्वाभिमान से जीना और आत्मरक्षा के लिये सक्रिय होते देखा। माता के साथ रहकर समन्वय भी सीखा। इसलिये तीर कमान और भाला चलाना सीख गई थीं। माता सुशीला बाई शिवभक्त थीं। घर में व्रत उपवास और पूजन पाठ का भी वातावरण था। परिवार ने अहिल्याबाई को आत्मरक्षा का अभ्यास कराने के साथ उनकी शिक्षा पर भी ध्यान दिया गया था। अहिल्याबाई आत्मरक्षा टोली के समागम में माता के साथ रहती थीं। गाँव में होने वाले प्रवचन और सत्संग में दादी के साथ जातीं थीं। इससे उनका चेतन अवचेतन आत्मरक्षा की सतर्कता के साथ धर्म ग्रंथों के कथा प्रसंगों की महत्ता से अवगत हो गया था। उन्हें अनेक पौराणिक कथाएं मुखाग्र थीं। वे उन कथाओं की अपने शब्दों में समीक्षा करना भी सीख गई थीं उन कथाओं की शिक्षा और संदेश क्या है, यह भी समझने लगीं थीं। बचपन से ही मां के अनुरूप शिव भी भक्त बन गई थीं। उनकी भक्ति एक प्रकार से शिवजी के प्रति समर्पण था। वे बिना पूजन किये जल भी ग्रहण नहीं करतीं थीं। 1733 में उनका विवाह इंदौर के महाराजा मल्हार राव होल्कर के पुत्र खांडेराव होल्कर से हुआ। इस विवाह का प्रसंग भी रोचक है। एक बार युद्ध अभियान के लिये मल्हार राव होल्कर दक्षिण भारत जा रहे थे। मल्हारराव होल्कर अपने समय के सुविख्यात मराठा सेनापति बाजीराव पेशवा के विश्वस्त माने जाते थे। दक्षिण भारत जाते हुये मार्ग में वे विश्राम के लिये चांडी गांव रुके। उन्होंने चांडी गांव के मंदिर में एक आठ वर्षीय बालिका को गरीबों को भोजन वितरण की व्यवस्था करते देखा। उस बालिका का व्यवहार गरीबों के प्रति बहुत मधुर था। भोजन के लिये सबको पंक्तिबद्ध बैठाना, फिर भोजन वितरण के लिये अपनी बाल टोली को समन्वित करने का काम भी बालिका कर रही थी। यह सब मल्हारराव जी ने ध्यान से देखा। भोजन वितरण के बाद वह बालिका भगवान का भजन करने लगी।

मल्हाररावजी को बालिका द्वारा की गई भोजन वितरण व्यवस्था और भजन की तन्मयता भा गई। वे अपने पुत्र खांडेराव की कुछ आदतों से व्यथित रहते थे। पुत्र खांडेराव बहुत जिद्दी, चिड़चिड़ा और गुस्से स्वभाव वाला था। मल्हारराव चाहते थे कि कोई ऐसी वधु आये जिसमें निभने और निभाने की कला हो और बेटे को सही मार्ग पर ला सके। उन्हें यह बालिका उचित लगी। उन्होंने बालिका का परिचय जाना। पता चला कि यह सैनिक मनकोजी राव की बेटी है। यद्यपि वे मनकोजी राव को नहीं जानते थे फिर भी मराठा सैनिक के नाते उनके मन में अपनत्व का भाव आया। उन्होंने मनकोजी राव को मिलने का संदेश भेज दिया। अंततः 1733 में अहिल्याबाई का विवाह खांडेराव होल्कर से हो गया। तब उनकी आयु मात्र आठ वर्ष की थी। और उनसे दो वर्ष बड़े खांडेराव थे। यह बाल विवाह था। इसलिये अहिल्याबाई विवाह के चार वर्ष तक मायके में ही रहीं। 1737 में गौना हुआ और विदा होकर में इंदौर आईं। अब वे एक सामान्य सैनिक की पुत्री से राजवधु बन गईं थीं । प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में उठना, सबसे पहले स्नान पूजन सूर्य को अर्ध्य देकर अपनी दिनचर्या आरंभ करने का क्रम यहां यथावत रखा। इससे पूरा परिवार प्रभावित हुआ। वे अपनी माता की भांति अच्छी समन्वयक थीं। यह देखकर घर के अधिकांश कामों का दायित्व उन्हें ही मिल गया। समय के साथ 1745 में उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम माले राव रखा गया। 1748 में पुत्री को जन्म दिया। पुत्री का नाम मुक्ता बाई रखा गया। 24 मार्च 1754 में कुंभेर के युद्ध में तोप का गोला लगने से पति खांडेराव की मृत्यु हो गई। तब अहिल्याबाई की आयु मात्र 29 वर्ष थी। वे पति की चिता के साथ सती होना चाहती थीं लेकिन श्वसुर मल्हारराव जी ने बच्चों का वास्ता देकर रोक लिया। तब बेटे मालेराव की उम्र मात्र नौ वर्ष और बेटी मुक्ताबाई की उम्र मात्र छह वर्ष थी। बच्चों की ओर देखकर अहिल्याबाई मान गईं। इस घटना के बाद मल्हारराव जी ने अहिल्याबाई को राजकाज के कामों भी सहयोग लेना आरंभ किया। अहिल्याबाई ने घर के भीतर का समन्वय बहुत कुशलता से संभाला हुआ। इसका प्रभाव मल्हारराव जी पर था। इसलिये उन्होंने अहिल्याबाई को आंतरिक व्यवस्था के समन्वय और सूचना एकत्र करके उन्हें पहुंचाने का काम सौंपा। 23 अगस्त 1766 में मल्हारराव होल्कर की मृत्यु हुई। तब मल्हारराव होल्कर के पौत्र और अहिल्या बाई के पुत्र मालेराव ने सिंहासन संभाला लेकिन वे केवल एक वर्ष भी शासन न संभाल सके। 5 अप्रैल 1767 में मालेराव की भी मृत्यु हो गई। तब अहिल्याबाई चाहतीं थीं कि तुकोजीराव शासन व्यवस्था संभाल लें। तुकोजीराव होल्कर परिवार के ही सदस्य थे और वे स्वर्गीय महाराज मल्हारराव होल्कर दत्तक पुत्र माने जाते थे। पर तुकोजीराव तैयार नहीं हुये। अंततः दिसम्बर 1767 में अहिल्याबाई ने स्वयं शासन संभाला। उन्होंने लगभग अट्ठाइस वर्ष तक शासन किया। उन्होंने सबसे पहले अपने राज्य में सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ की। 1767 का समय पूरे भारत में अस्थिरता का समय था।

मुगल सल्तनत कमजोर हो रही थी। अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण और मराठा शक्ति में भी कमी आ रही थी। ऐसे में पठानों, रूहेलों और पिण्डारियों के दल पूरे भारत में लूटमार करते घूम रहे थे। उनके साथ कुछ स्थानीय समूह भी जुड़ गये। इनके भय से गांव उजड़ने लगे, कृषिकार्य भी बाधित हुआ इससे आय भी घटी। देवि अहिल्याबाई ने स्थानीय समूहों से सम्पर्क साधा उन्हें सुरक्षा तंत्र से जोड़कर सीमावर्ती गावों में तैनात की। देवि अहिल्याबाई की इस युक्ति से दोहरा लाभ हुआ। एक तो राज्य की सीमाएं सुरक्षित हुई और दूसरे शांति स्थापना से पुनः कृषि कार्य व्यवस्थित होने लगा। जिससे राज्य की समृद्धि के साथ आय भी बढ़ी। उन्होंने कृषि कार्य को बढ़ावा दिया। विशेषकर अनाज के साथ कपास दलहन, तिलहन फसलों को प्रोत्साहन दिया। कृषि उत्पादन आधारित कुटीर उद्योगों की स्थापना की। इससे समाज और राज्य दोनों की आर्थिक समृद्धि बढ़ी।

पत्रकारिता में अब स्वतंत्रता एक चुनौती है

जितेन्द्र कुमार सिन्हा

चौथे स्तंभ का निर्माण तीनों स्तंभों की प्रहरी के लिए किया गया था, लेकिन अब मीडिया कर रहा है ब्लैकमेलिंग का धंधा। ऐसा मैं नहीं कह रहा हूँ, ऐसा कह रहा है समाज के वे प्रबुद्ध लोग जो इसके शिकार हुए है या हो रहे है। पहले पत्रकार का नाम सुनते ही लोग घबराते थे, लेकिन इज्जत भरी नजरों से देखते थे, वही आज लोग नफरत भरी आँखों से देखते है। इसी का नतीजा है की भारत सरकार की सूचना प्रसारण मंत्रालय जाली पत्रकारों एवं फजी चैनलों पर शिकंजा कसने के लिए सभी राज्यों के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को निर्देश जारी कर दिया है। आधुनिक युग में पत्रकारिता को लोग पैसा कमाने का साधन के रूप में देखने लगा है। पहले भी यह स्थिति थी, लेकिन अब बद से बदतर होती जा रही है। पत्रकार का परिभाषा यह है कि, पत्रकार वह है जो कोई खबर को बिना तोड़ मरोड़ कर, निष्पक्ष और सटीक जानकारी को आम जन तक पहुँचाये और उनकी कलम से लिखी खबर जनहित में हो। जिसकी कलम बिकाऊ ना हो, उसने सच्चाई लिखने, बोलने का संकल्प लिया हो। जो निष्पक्ष हो, सटीक हो। यही एक पत्रकार की देशभक्ति होती है। लेकिन अब पत्रकारों की स्थिति ऐसी नहीं रही, बल्कि सत्ता बदलने के साथ-साथ पत्रकार की कलम में निष्पक्ष होने की कला भी बदलती जा रही है। ये लोकतंत्र के लिए घातक ही नहीं बल्कि बहुत घातक है। क्योंकि अब जागरूक आम-जन अखबार को पढ़ते ही चाटूकारिता को स्पष्ट रूप से समझ जाती है। अब चैनलों को ही देखें तो कुछ गिने-चुने न्यूज चैनल ने तो, पत्रकारिता की हत्या ही कर दी हो, ऐसा दिखाई देता है। पारदर्शिता, जवाबदेही भी अब समाप्त हो चुकी है। क्योंकि ना तो अब पत्रकार तीखे सवाल करता है और ना ही जवाब मांगता है। जबकि आज पत्रकारिता का महत्व पहले से अधिक बढ़ गया है। पत्रकारिता को समाज का दर्पण होना चाहिए। पत्रकारों की लेखनी, समाज की गंदगी को दूर करने के लिए होनी चाहिए और देश एवं राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। लेकिन स्थिति ऐसी हो गई है कि अब बहुत कम पत्रकार पत्रकारिता की राह चुनते है।

पाठक निष्पक्ष और निर्भीक खबरें पढ़ना और देखना चाहता है, यही पत्रकारिता की खास पहचान भी है। वर्तमान समय काल से पूर्व भी देश में पत्रकारिता थी और समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों पर विश्वास करते थे। कहावत भी थी सौ बकी एक लिखी। पहले "प्रेस" शब्द को सशक्त लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में देखा जाता था। जबकि उस समय भी दलीय पत्रकारिता थी। जैसे संघ विचारधारा का "पांचजन्य" था, तो वामपंथी विचारधारा का "ब्लिट्ज" और कांग्रेस की विचारधारा पर था "नेशनल हेराल्ड"। इसी प्रकार के और भी अन्य समाचार पत्र थे। पहले के समाचारों में मिलावट बहुत कम या नगण्य होती थी, लेकिन आज ऐसा नहीं है सब कुछ बदल गया है। सच कहा जाय तो पूंजीवाद इस कदर हावी हुआ है कि पूरी सिस्टम की निष्पक्षता शब्द अब केवल डिक्शनरी की बन कर रह गई है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या आज मीडिया निष्पक्ष पत्रकारिता करता है? तो कहा जा सकता है कि जो समाचार पत्र और न्यूज चैनल सरकारी व अन्य विज्ञापन पर चलते हैं तो वह निष्पक्ष कैसे हो सकते है। एक तरह से कहा जाय तो सरकार और अन्य के विज्ञापन के चक्कर में निष्पक्षता तो छोड़ ही चुके है। लेकिन वहीं कुछ ऑनलाइन न्यूज पोर्टल अभी भी निष्पक्ष पत्रकारिता कर रहे हैं, लेकिन सरकार की ओर से उन्हें दबाने की करवाई की जा रही है।

वर्तमान समय में जो सही पत्रकार है, उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है। क्योंकि वे आज भी सुबह से शाम तक मेहनत करते हैं और उन्हें बड़े शहरों में बमुश्किल से 15-20 हजार रुपये मिल पाते हैं, जिससे इस महंगाई के युग में उनका घर खर्चा तक नहीं चल पाता है। लेकिन ठीक इसके विपरीत दूसरी ओर हर दिन एक नया नैरेटिव बेचने वाले समाज को "भ्रमित करने वाला धंधा" खूब जोर-सोर से चला रहे हैं। मीडिया हाउस को अब बुद्धिजीवी पत्रकारों की आवश्यकता नहीं है बल्कि उन्हें धंधेबाज लोगों की आवश्यकता है, ताकि ऐसे लोग कमाई कर मीडिया हाउस को भी दें और खुद भी रखें। ऐसी स्थिति में एक श्रमजीवी पत्रकार कैसे अपना जीवन जी सकता है। कुछ तो ऐसा होना चाहिए ताकि श्रमजीवी पत्रकारों की आजीविका सुनिश्चित हो सके।

भारत मे कई चैनल्स है और लगभग सवा लाख पत्र पत्रिकाएं भी हैं। इनमें राष्ट्रीय हित और राष्ट्रीय संस्कृति को बढ़ावा देने वाले कितने हैं? यह सोचनीय विषय है। इसलिये पत्रकारों के लिए निष्पक्ष होकर जरूरी कदम उठाने की आवश्यकता है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में, कुछ दोषी पत्रकारों के कारण अच्छे, सच्चे और ईमानदार पत्रकारों की छवि खराब हो रही है और उनके कार्य करने में बाधा उत्पन्न हो रही है। कोरोना काल के समय से पूरे देश में, बगैर आर. एन. आई के दैनिक समाचार पत्र, साप्ताहिक समाचार पत्र, पाक्षिक समाचार पत्र, ई-समाचार पत्र या न्यूज चैनल आदि चलाया जा रहा हैं। इतना ही नहीं छद्धम पत्रकारों की बाढ़ सी आ गई है और इसके कारण ऐसे पत्रकार प्रेस के नाम पर ब्लैकमेलिंग करने का धंधा खूब चला रहा है। जाली प्रेस आईडी लेकर, पत्रकार की जाली नियुक्ति पत्र लेकर, प्रेस के नाम पर ब्लैकमेलिंग करने का धंधा फल-फूल रहा है। जिस पर पत्रकारों के हित के लिए अंकुश लगना अत्यावश्यक है। ऐसे देखा जाय तो, मनुष्य का स्वभाव ही होता है कि, वह पहले अपने स्वार्थ के बारे में सोचता है और ऐसे पत्रकार सही मायने में पत्रकार नहीं हो सकते हैं। क्योंकि हकीकत में पत्रकारिता रोजगार नहीं है बल्कि एक उपाधि है, जो खुद से पहले देश हित के बारे में विचार करता है।

खुली अर्थव्यवस्था ने समाचार पत्र को उत्पाद (प्रोडक्ट) बना दिया है। पाठक अब समाचार पत्र के पाठक नही रहे। अब अवमूल्यन होकर पाठक को ग्राहक कहा जाने लगा है। पहले किसी भी समाचार पत्र के संपादक विद्वान और अनुभवी व्यक्ति होता था, उसके नाम से समाचार पत्र की पहचान होती थी। संपादक और पत्रकार निष्पक्ष और निर्भीक होते थे, फोटोग्राफर जीवंत फोटो लेते थे। समाचार पत्र में छपी खबर का उल्लेख देश के संसद और राज्य के विधान सभा में होता था। अब स्थिति बदल चुकी है, समाचार पत्र में छपे समाचार पर अब संसद या विधान सभा में चर्चा नहीं होता है क्योंकि छपे समाचार पर विश्वास करना कठिन हो गया है।समाचार पत्र में अब अक्सर पेड न्यूज रहता है। अब वह सब कुछ छपने लगा है जो वास्तव में पत्रकारिता होती ही नहीं है। निष्पक्ष पत्रकारिता का अर्थ ही होता है कि पत्रकार किसी भी समाचार का लॉजिकल तर्क दोनों तरफ का जनता तक पहुँचाये और उसमें पत्रकार के खुद के विचार की बू नहीं आने दे। जबकि आज के पत्रकार बोलने की कला प्रदर्शित करते है लेकिन इस कलाकारी में ख़बरों की तथ्य ही गायब हो जाती है। उसी तरह लिखने में भी सभी बातों को लिखते है लेकिन एक तरफा पक्ष को ही लिखते है। पत्रकारिता में भी अब व्यवसाय ने अपनी प्रबलता स्थापित कर दी है। पत्रकारिता का यह बदलता हुआ स्वरूप नकारात्मकता को अपनी तरफ खींच रहा हैं, कहीं न कहीं सब लोग इसे महसूस कर रहे हैं। अब तो ऐसी स्थिति हो गई है कि अगर आपको राज्य ब्यूरो या संपादक बनना है तो संस्थान आपके विज्ञापन लाने या वार्षिक लाभ देने की बात करते है। पत्रकारिता में पहले स्वतंत्रता रहती थी लेकिन अब स्वतंत्रता एक बड़ी चुनौती बन गई है। इस तरह की चुनौती केवल भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया भर के पत्रकारों को करना पड़ रहा है। वैसे भी इस क्षेत्र में चुनौतियों का सिलसिला कोई नई बात नहीं है। नैतिक पत्रकारिता करना आज के परिवेश में बड़ी समस्या बन गई है, जिसके कारण कई खबरें या तो दब जाती है या फिर उसे दबा दिया जाता है। अब वह समय आ गया है कि पत्रकारों को चाहिए कि वे न केवल निष्पक्ष तरीके से मुद्दों को देखें बल्कि एक निष्पक्ष रवैया भी अपनाएं, ताकि कहानियों को तर्कसंगत और शांत तरीके से प्रस्तुत किया जा सके।

फर्जी पत्रकारों के खिलाफ कार्रवाई करने की पहल शुरु की है सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय। उनका कहना है कि रजिस्टर्ड हो या जो टीवी/रेडियो सूचना प्रसारण मंत्रालय से रजिस्टर्ड हो, उसी के द्वारा पत्रकार/संवाददाता की नियुक्ति की जा सकती है और केवल उसका सम्पादक ही प्रेस कार्ड जारी कर सकता है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि इंटरनेट पर चल रहे न्यूज पोर्टल के रजिस्ट्रेशन का प्रावधान सूचना प्रसारण मंत्रालय में नहीं है और कोई भी न्यूज पोर्टल या केवल (डिश) टीवी पर चल रहे समाचार चैनल, किसी भी तरह के पत्रकार की नियुक्ति नहीं कर सकता है, और न ही प्रेस आईडी जारी कर सकता है। उन्होंने कहा है कि यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो वह अवैध है और उसके विरुद्ध कार्रवाई निश्चित रूप से होगी।

चित्तौड़गढ़ जिले में डीएसटी की थाना चंदेरिया इलाके में कार्रवाई

अवैध कैमिकल प्लांट में दबिश देकर 6000 लीटर हाइड्रोक्लोरिक एसिड सहित उपकरण किये जब्त

चमकता राजस्थान

जयपुर/चित्तौड़गढ़,!(खलील कुरैशी) 30 मई। चितौड़गढ़ में जिला विशेष टीम व चन्देरिया थाना पुलिस ने चन्देरिया थाना क्षेत्र में अवैध रूप से चल रहे केमिकल प्लांट में दबिश देकर 6 हजार लीटर हाइड्रोक्लोरिक एसिड सहित भारी मात्रा में अन्य उपकरण जब्त कर एक आरोपी को नामजद किया है।एसपी सुधीर जोशी ने बताया कि जिला विशेष टीम को सूचना मिली कि चन्देरिया थाना क्षेत्र में घोसुंडा का खेड़ा गांव में धोलेश्वर महादेव के पास पहाड़ी की तलहटी में अवैध रूप से केमिकल प्लांट का संचालन हो रहा है, जिससे कभी भी बड़ी दुर्घटना घटित होकर जन हानि हो सकती है।सूचना पर थाना चंदेरिया से हैड कांस्टेबल प्रेम शंकर जाप्ता सहित मौके पर पहुंचे। सूचना के मुताबिक वहां पर बने दो मकानों के बीच खाली पड़ी पडत जमीन पर भारी मात्रा में प्लास्टिक के जरीकेन दिखाई दिये। पुलिस टीम को आते हुए देख कर मौजूद एक व्यक्ति पहाड़ी के ऊपर जंगल में भाग गया, जिसकी पुलिस टीम ने काफी तलाश की, किंतु घना जंगल होने के कारण आरोपी भागने में सफल रहा।पुलिस ने तलाशी में वहां रखे 120 जरीकेनों से 6 हजार लीटर हाइड्रो क्लोरिक एसिड के साथ मौके से भारी मात्रा में बोतलों पर लगाने वाले लेबल, बोतलें व ढक्कन जब्त किये। इस कार्रवाई के दौरान कैमिकल के दुष्प्रभाव के कारण पुलिस टीम के सदस्यों की आंखों में जलन, शरीर पर खुजली के साथ श्वास लेने में भी काफी परेशानी हुई। कैमिकल के कारण आसपास का वातावरण बहुत ही प्रदूषित हो गया था तथा उससे काफी तेज दुर्गंध आ रही थी। भागने वाले आरोपी घोसुंडा का खेड़ा निवासी लेहरु लाल पुत्र रतनलाल भोई को नामजद कर लिया है।

इस काम में आता है हाइड्रोक्लोरिक एसिड

» यह कैमिकल एसिड के रूप में मार्बल पत्थर , टॉयलेट व बाथरूम के क्लीनर के रूप में काम आता है।इस कार्रवाई में डीएसटी से प्रभारी गोरधन सिंह पुलिस निरीक्षक, हैड कांस्टेबल भूपेंद्र सिंह, कांस्टेबल ललित सिंह, चन्द्र करण सिंह, मुनेंद्र सिंह, राजदीप सिंह,अजय, दुर्गा राम व दिनेश तथा थाना चन्देरिया से हेड कांस्टेबल प्रेम शंकर कांस्टेबल विजय सिंह, रवि कुमार, सचिन, बहादुर सिंह, प्रहलाद सिंह व देवी लाल शामिल थे।

संक्षिप्त समाचार

सडक हादसा में वाइक सवार की मौत

● पीली मोड पर हुआ हादसा

चमकता राजस्थान। हलैना,(राजवीर सिंह)। नदबई-से हलैना वाया खांगरी सडक मार्ग स्थित हलैना-नदबई थाना की सीमा निकट पीली मोड के पास बुधवार की देर सायं अज्ञात वाहन की टक्कर से वाइक सवार की मौत हो गई। जिसका गुरूवार को हलैना स्थित राजकीय सामुदायिक अस्पताल में पोस्टमार्टम हुआ। ये नदबई से वैर थाना के गांव गोविन्दपुरा लौट रहा था। गोविन्दपुरा के पूर्व सरपचं रामसुख सैनी ने बताया कि बुधवार की देर सायं हलैना पुलिस का फोन आया कि आपके गांव निवासी 35 वर्षीय एक युवक की मौत हो गई। जिसका षव हलैना के सरकारी अस्पताल के मुर्दाघर में रखा हुआ है। सूचना प्राप्त होते ही गांव के लोग हलैना थाना एवं सरकारी अस्पताल पहुंचे। जहां गांव गोविन्दपुरा निवासी 35 वर्षीय डालचन्द सैनी पुत्र सोहनलाल सैनी मुर्दाघर में मृतक मिला। हलैना थाना प्रभारी बृजेन्द्र कुमार ने बताया कि ये घटना नदबई थाना इलाका की है। हमने हादसे की सूचना नदबई पुलिस को रात्रि में ही भेज दी। जहां से पुलिस आई और मृतक का पोस्टमार्टम करा षव परिजनों को सौंप दिया।

देवेंद्र ने 10 वीं बोर्ड परीक्षा में 91.50 प्रतिशत अंक प्राप्त कर किया नाम रोशन

चमकता राजस्थान। भुसावर (राजवीर सिंह) भुसावर उपखण्ड के गांव जसवर निवासी छात्र देवेंद्र जाटव ने 10 वीं बोर्ड परीक्षा में 91.50 प्रतिशत अंक प्राप्त कर गांव के साथ जिले का नाम रोशन किया है। छात्र देवेंद्र के पिता महेंद्र सिंह पेशे से किसान है और माता कमला गृहणी है। छात्र देवेंद्र ने अपनी सफलता का श्रेय रजनीश पी सेकेंडरी स्कूल समूची पीएस कठूमर जिला अलवर के विद्यालय के गुरुजनों के साथ अपने माता पिता को देते हैं। छात्र देवेंद्र जाटव भविष्य में डॉक्टर बनकर समाज सेवा करना चाहते हैं। छात्र देवेंद्र का विद्यालय के गुरुजनों सहित माता पिता व रिश्तेदारों ने माला एवं साफा पहनाकर एवं मिठाई खिलाकर होनहार छात्र देवेंद्र का अभिनंदन किया।

उप निदेशक परिवार कल्याण डॉ. मोहन लाल सालोदिया ने किया चिकित्सा संस्थानों का दौरा

● लू ताप घात और मौसमी बीमारियों को लेकर व्यवस्थाओ का लिया जायजा

चमकता राजस्थान धौलपुर से रामदास तरुण धौलपुर,30 मई को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के उप निदेशक परिवार कल्याण .डॉ. मोहन लाल सालोदिया जिले के दो दिवसीय दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने आधा दर्जन से अधिक चिकित्सा संस्थानों का दौरा कर लू तापघात, मौसमी बीमारियों के संबंध में आवशयक व्यवस्था दुरुस्त करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के क्रम में उन्होनें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मनियां, सैंपऊ, सरमथुरा, उप जिला अस्पताल बाड़ी, राजाखेड़ा तथा जिला अस्पताल धौलपुर में व्यवस्थाओ का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने चिकित्सा अधिकारी प्रभारियों को निर्देश देते हुए कहा कि मौसम विभाग पूर्वानुमान में आगामी समय में लू-तापघात के प्रकोप का प्रकोप रहने के आसार हैं। ऐसे में आमजन को तुंरत चिकित्सा सुविधा मुहैया कराने के लिए अस्पतालों में आवशयक प्रबंध सुनिश्चित करें। लू तापघात से संबंध दवाईयों व उपकरणों के प्रबंध रखें। वार्डों में कूलर , एयरकंडीशनर क्रियाशील स्थिति में होना चाहिए। पर्याप्त मात्रा में आईस पैक, आईस क्यूब की उपलब्धता रखें। हीट स्ट्रोक के मरीजों के लिए बेड आरक्षित रखें। इस दौरान सभी चिकित्सा संस्थानों पर व्यवस्थाएं दुरुस्त पाई गई। इस दौरान उन्होंने जिले के स्वास्थ्य भवन पर समस्त खंड मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं सीएचसी प्रभारियों की बैठक लेकर संस्थानो में आमजन को लू ताप घात और मौसमी बीमारियों से बचाव के पर्याप्त इंतजामात रखने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जयंती लाल मीणा ने जिले भर के चिकित्सा संस्थाओं में किए गए व्यापक व्यवस्थाओं के बारे में अवगत कराया। बैठक में उप मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. चेतराम मीणा, जिला प्रजन्न एवं शिशु स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. शिव कुमार शर्मा सहित अन्य चिकित्सा अधिकारी प्रभारी मोजूद रहे।

29 मई से 29 जून तक चलेगा विटामिन-ए अभियान''

● जिले के 1लाख 59 हजार 306 बच्चों को पिलायेंगे विटामिन-ए की खुराक

चमकता राजस्थान। धौलपुर!(रामदास तरुण)धौलपुर, 30 मई। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जयंती लाल मीणा ने बताया कि जिले में विटामिन-ए का अभियान 29 मई से 29 जून 2024 तक चलाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत 9 माह से 5 वर्ष तक के बच्चों को आंगनबाडी केन्द्रों पर विटामीन ए की खुराक पिलाई जायेगी। यह खुराक 6 माह के अन्तराल से पिलाई जाती है। विटामिन-ए आंखों बीमारियों जैसे रतौधीं अंधता से बचाव के साथ-साथ बच्चों के शरीरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता वृद्धि के लिये भी आवशयक है। विटामिन-ए 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों कि मृत्युदर में भी कमी लाता है। कार्यक्रम के दौरान 1 से 5 वर्ष तक के बच्चों को आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, आंगनबाड़ी केन्द्र के बच्चों को विटामिन-ए की 2 एम.एल. खुराक पिलाती है एवं 9 माह के बच्चों को जिन्हे मिजल्स के साथ विटामिन-ए नही दी गयी है को 1 एम.एल. खुराक पिलाती है तथा जिन स्थानों पर आंगनबाडी केन्द्र नही है वहॉ एएनएम 1 से 5 साल के बच्चों को यह खुराक देती है। अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. गौरव मीणा ने बताया कि जिले के 1 लाख 59हजार 306 बच्चों को पिलाई जाएगी विटामिन-ए की खुराक। विटामिन-ए के इस चरण में राजकीय चिकित्सालयों के साथ-साथ प्राइवेट विद्यालयों एवं प्राइवेट अस्पताल के द्वारा भी विटामिन-ए पिलाई जाने हेतु जिले के समस्त ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी, समस्त चिकित्सा अधिकारी प्रभारियों को आवशयक निर्देश दिये गये हैं।

टीकाराम जूली ने गुरदासपुर लोकसभा से कांग्रेस प्रत्याशी रंधावा के समर्थन बाईक रैली निकालकर, किया सघन प्रचार

चमकता राजस्थान

अलवर/पंजाब। कांग्रेस पार्टी के स्टार प्रचारक, नेता प्रतिपक्ष एवं गुरदासपुर लोकसभा क्षेत्र के पर्यवेक्षक टीकाराम जूली ने पंजाब के गुरदासपुर लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी सुखजिंदर सिंह रंधावा के समर्थन में हल्काभोआ विधानसभा क्षेत्र सुंदरचक से मलिकपुर तक विशाल रैली की।जूली बोले पंजाब और देश की जनता की तकदीर बदलने वाली है क्योंकि पिछले 10 वर्षों से अन्याय, जुल्म, महंगाई और बेरोजगारी का सितम सह रहे लोग ईवीएम में अपना जनादेश कैद करेंगे। उन्होंने कहा कि देश का दुर्भाग्य देखिए 10 वर्षों तक लगातार जनता को बेवकूफ बनाने के बाद 75 वर्ष का बुजुर्ग अपने लिए मौका मांग रहा है और इनके कुशासन में 22 साल का युवा रिटायर होकर घर आ रहा है। उन्होंने कहा कि देश का किसान खून के आंसू रो रहा है और केंद्र की मोदी सरकार उद्योगपति मित्रों का कर्ज माफ करने में जुटी हुई है। उन्होंने कहा देश के पीएम भारतीय जनता पार्टी के एजेंट के रूप में जन- विरोधी नीति बनाकर लोकतंत्र का मखौल उड़ाते हैं। उन्होंने कहा कि सत्ता की कुर्सी की ऐसी लालसा की धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि देश की पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी ने जरूरत के समय देश के लिए अपने आभूषण दे दिए थे और मोदी कहते हैं कि कांग्रेस के लोग आपका मंगलसूत्र चुराएंगे ऐसी निम्न स्तर की भाषा देश के पीएम सार्वजनिक मंच से बोल रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी देश की जनता के हित के लिए काम करती हैं जबकि भारतीय जनता पार्टी चंद उद्योगपतियों के हाथों की कठपुतली है।

कांग्रेस के स्टार प्रचारक जूली ने लोकसभा प्रत्याशी के पक्ष में किया रोड शो

कांग्रेस पार्टी के स्टार प्रचारक एवं पंजाब के गुरदासपुर के पर्यवेक्षक कांग्रेस लोकसभा प्रत्याशी सुखजिंदर सिंह रंधावा के समर्थन में रोड शो आयोजित किया। जूली कभी ओपन जीप में तो कभी बाइक पर सवार होकर प्रचार प्रसार कर रहे थे। इस दौरान स्थानीय लोगों ने जूली का हाथ हिलाकर अभिवादन किया। इस दौरान जूली ने कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी सुखजिंदर सिंह रंधावा के पक्ष में शत प्रतिशत मतदान करने की अपील की।

चुरु पुलिस की ऑपरेशन शिकंजा में बड़ी कार्रवाई

● एजीटीएफ ने पकड़ा टॉप 25 वांटेड में शुमार बदमाश

● 7 साल से लगातार बदल रहा था ठिकाने, 50 हजार रुपये का है इनामी

चमकता राजस्थान। जयपुर/चूरू (खलील कुरैशी) 30 मई। एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स चूरू की टीम ने राज्य स्तर पर टॉप 25 में चयनित मोस्ट वांटेड अपराधी सुरेश कुमार उर्फ सुरेश बुंटिया पुत्र भंवरलाल नाई निवासी बुंटिया थाना सदर चूरू को सालासर इलाके से दस्तयाब करने में सफलता हासिल की है। करीब 7 साल से फरार चल रहे इस बदमाश के ऊपर 50 हजार का इनाम घोषित किया हुआ है। इसको पकड़ने में एजीटीएफ ने लगातार पीछा करते हुए करीब 2300 किलोमीटर का सफर तय किया।एसपी जय यादव ने बताया कि शातिर बदमाश सुरेश कुमार उर्फ सुरेश बुंटिया थाना तारानगर, थाना सदर एवं दूधवाखारा में साल 2017 में दर्ज जानलेवा हमला व आर्म्स एक्ट के मुकदमे में फरार चल रहा था। पुलिस मुख्यालय से टॉप 25 सक्रिय वांटेड अपराधियों की श्रेणी में शामिल किया गया, वहीं आईजी रेंज द्वारा इसकी गिरफ्तारी पर 50 हजार के इनाम की घोषणा की गई। एसपी यादव ने बताया कि लंबे समय से फरार चल रहे आरोपी की गिरफ्तारी के लिए योजना बनाई जाकर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक किशोरी लाल व एएसपी राजगढ़ प्रशांत किरण तथा एसएचओ राजगढ़ पुष्पेंद्र झाझडिया के नेतृत्व में एजीटीएफ के हेड कांस्टेबल सज्जन कुमार, राकेश कुमार एवं कांस्टेबल रमाकांत की टीम गठित की गई।गठित टीम द्वारा विभिन्न माध्यमों से आसूचना संकलन की गई। जिसमे आरोपी सुरेश की दिल्ली में होने की सूचना पर एजीटीएफ तुरंत दिल्ली पहुंची। जहां तलाश के दौरान कांस्टेबल रमाकांत को मुखबिर से सूचना मिली कि वांछित अपराधी सुरेश वर्तमान में बेंगलुरु में है। फिर पीछा करते हुए टीम बेंगलुरु पहुंची।बेंगलुरु में आरोपित के घर पर दबिश देने से पहले ही वह मौके से फरार हो गया। इसके बाद टीम ने तकनीकी व मुखबिरों की मदद से आसूचना संकलन कर लगातार पीछा करते हुए सालासर के पास आरोपी सुरेश कुमार को दबोच लिया। इस दौरान एजीटीएफ ने बगैर रुके करीब 2300 किलोमीटर का सफर तय किया।एसपी यादव ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी सुरेश कुमार बड़ा ही शातिर प्रकृति का है, जो लगातार 8 सालों से अपने ठिकाने बदल-बदल कर पुलिस को गुमराह कर रहा था। इसके विरुद्ध चूरू जिले के थाना कोतवाली, सदर, दुधवाखारा, सरदार शहर, हमीरवास एवं तारानगर में आर्म्स व आबकारी एक्ट, प्राण घातक हमले, पुलिस कर्मियों पर हमला, मारपीट, चोरी, अपहरण कर दुष्कर्म आदि के 14 आपराधिक मामले दर्ज है।

बीएसएन स्कूल तथा लिटिल एंजलस स्कूल का कक्षा 10ँ का बोर्ड परीक्षा परिणाम रहा 100% प्रतिशत

चमकता राजस्थान। जयपुर। बीएसएन स्कूल,देवी नगर सोडाला ,बीएसएन स्कुल सांगानेर तथा लिटिल एंजलस स्कूल कटेवा नगर जयपुर का कक्षा 10३ का बोर्ड परीक्षा परिणाम 100% प्रतिशत रहा, जिसमें 97% विद्यार्थियों प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए,ग्रुप के समस्त विद्यार्थियों में छात्र सूरज कुमार ने 94.70% अंक प्राप्त कर स्कूल टॉप किया ।छात्रा अनन्या ने 90% तथा यशराज ने 89% अंक प्राप्त किए। विद्यालय के एक तिहाई बच्चों ने 85% से अधिक अंक प्राप्त किए। गणित विषय में 50% बच्चों ने 90% से अधिक प्राप्त किए तथा दो बच्चे श्रेया जांगिड़ व यशराज ने 100 में से 100 अंक प्राप्त कर गौरांवित किया। सभी विषयो मे छात्र-छात्राओं का स्कोर शानदार रहा,शानदार परीक्षा परिणाम पर शैक्षिक निदेशिका किरण खुलवे ने छात्र-छात्राओं / शिक्षकों/तथा अभिभावकों को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि "success is the sum of , many small efforts." ग्रुप के निदेशक डॉ प्रकाश चंद्र खुल्वे ने इस परिणाम के लिए विद्यालय परिवार के सभी कार्मिकों ,अभिभावकों को बधाई दी एवं छात्र-छात्राओं को उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएं दी।

जिला पशु क्रूरता निवारण समिति की कोर कमेटी का होगा गठन

चमकता राजस्थान

● जिला कलक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई पशु क्रूरता निवारण समिति की बैठक

जयपुर,!(खलील कुरैशी) 30 मई। कलक्ट्रेट सभागार में गुरुवार को पशु क्रूरता निवारण समिति की बैठक का आयोजन किया गया। जिला कलक्टर की अध्यक्षता में आयोजित हुई बैठक में पशु क्रूरता संबंधी कई बिन्दुओं पर चर्चा हुई।अतिरिक्त जिला कलक्टर (उत्तर) अलका विश्नोई ने बताया कि बैठक में जिला पशु क्रूरता निवारण समिति की कोर कमेटी बनाने पर भी सहमति बनीं जो कि समिति से संबंधित दैनिक समस्याओं का निराकरण कर सकेगी। उक्त कमेटी में भारतीय पशु कल्याण बोर्ड के सदस्य सचिव नामित सदस्य एवं दो निर्वाचित सदस्य होगें। यह कमेटी प्रत्येक माह में एक बैठक का आयोजन कर गत माह में किये गये कार्यों की समीक्षा करेगी।जिला पशु क्रूरता निवारण समिति के सदस्य सचिव एवं पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. हनुमान सहाय मीणा ने बताया कि बैठक में नगर निगम के अधिकारियों को पेट शॉप के रजिस्ट्रेशन करवाने एवं पे-ट्स के खिलाफ क्रूरता रोकने के लिए प्रभावी कार्रवाई अमल में लाने के निर्देश दिये गए। इसके लिए पुलिस विभाग द्वारा जयपुर ग्रामीण के लिए पुलिस उप अधीक्षक प्रियंका वैष्णव एवं जयपुर शहर हेतु पुलिस उप अधीक्षक हरीराम कुमावत को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।साथ ही उन्होंने बताया कि बैठक में निगम अधिकारियों ने मृत पशुओं के निस्तारण हेतु इंसीनरेटर उपलब्ध नहीं होने की जानकारी दी साथ ही आवारा श्वानों हेतु पशु प्रजनन नियंत्रण प्रोग्राम की गति बढ़ाने हेतु जयपुर शहर के चारों दिशाओं में चार सेटेलाईट केन्द्र बनवाये जाने का सुझाव भी समिति के समक्ष प्रस्तुत किया। बैठक में पशु क्रूरता निवारण समिति के सदस्यों, पशुपालन विभाग, पुलिस विभाग, नगर निगम के अधिकारियों सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों ने शिरकत की।

सेप्टिक टैंक की सफाई के समय हुआ हादसा

जहरीली गैस की चपेट से तीन की मौत, दो की हालत चिन्ताजनक

➲ टैंक में बेहोश हुए युवक को बचाने उतरे चार लोग

➲ सीएम भजनलाल शर्मा ने घटना को बताया दुःखद

चमकता राजस्थान

भरतपुर (राजवीर सिंह)। नदबई की उप तहसील लखनपुर क्षेत्र के गांव नगला मई में गुरूवार को सुबह एक जने के निजी सेप्टिक टैंक की सफाई कार्य के समय एक मजदूर बेहोश होकर टैक में गिर गया। जिसे बचाने के लिए एक के बाद एक पांच लोग टैंक में उतर गए। जिनमें से टैंक की जहरीली गैस की चपेट में आने से तीन लोगों की मौत हो गई तथा दो लोग गम्भीर रूप से घायल हो गए। सूचना की भनक लगते ही प्रशासन व पुलिस में खलबली मच गई और गांव में हा-हाकार मच गया। प्रशासन ने ग्रामीणों की मदद से टैंक में से तीन लोगों के शव निकाले और दो लोगों को बेहोशी की हालत में निकाला गया। जिन्हे भरतपुर स्थित आरबीएम अस्पताल पहुँचाया गया, जहां चिकित्सकों ने तीन को मृत घोषित कर दिया। जबकि दो लोगों का उपचार जारी है। इधर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने घटना की विस्तार से जानकारी लेकर दुःख जताया और मृतकों के परिजन व रिस्तेदारों को ढांढस बन्धया। साथ ही बीमार अन्य दो लोगों की स्वास्थ्य लाभ की कामनाए की।

प्राप्त जानकारी के अनुसार नदबई उपखण्ड एवं उप तहसील लखनपुर क्षेत्र के गांव नगला मई में इसी गांव निवासी इन्द्र कुमार के घर बने सेप्टिक टैंक की सफाई का कार्य चल रहा था। जहां चार मजदूर कार्य कर रहे थे। एक मजदूर कार्य करते समय बेहोश होकर टैंक में गिर गया। जिसे बचाने के लिए अन्य चार लोग मदद को आए और टैंक से बेहोश मजदूर को निकालने लगे। जो भी बेहोश हो कर टैंक में गिर पडे। बताया जा रहा है कि उक्त सेप्टिक टैंक में जहरीली गैस बन गई थी। जिस जहरीली गैस से ये हादसा हो गया। टैंक में जहरीली गैस से लोगों के मरने की खबर गांव नगला मई सहित आसपास के गांवों में आग भी तरह फैल गई। जिसने भी सुना वह

मृतक आश्रितों को सहायता का प्रस्ताव भिजवाया

चमकता राजस्थान

➲ जिला कलक्टर ने अस्पताल पहुंचकर घायलों के उपचार की जानकारी ली, बेहतर उपचार के निर्देश दिए

भरतपुर, (राजवीर सिंह)। जिले के नदबई उपखण्ड के गांव नगला मई में सेप्टिक टेंक की सफाई के दौरान दुर्घटना में 3 व्यक्तियों की मृत्यु हो जाने पर जिला प्रशासन द्वारा मृतक आश्रितों को सहायता का प्रस्ताव भिजवाया गया है। जिला कलक्टर डॉ. अमित यादव के निर्देश पर उपखण्ड अधिकारी नदबई गंगाधर मीना ने मौके पर पहुंचकर घटना की जानकारी ली तथा घायल व्यक्तियों को आरबीएम अस्पताल पहुंचाया जहां जिला कलक्टर ने घायलों से मिलकर कुशलक्षेम पूछी तथा अस्पताल प्रशासन को बेहतर चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के निर्देश दियेअतिरिक्त कलक्टर प्रशासन नीरज कुमार मीना ने बताया कि गुरूवार को प्रातः 7 बजे गांव नगला मई में सेप्टिक टेंक की सफाई के लिए आकाश पुत्र बिज्जो उम्र 19 साल, करण सिंह उर्फ बोली पुत्र सुरेश उम्र 20 साल, भोलू पुत्र रोशन उम्र 50 साल कार्य कर रहे थे। टैंक की आठ फीट के आस-पास सफाई की जा चुकी थी, नीचे सफ्टिक टैंक में जहरीली गैस होने से मृत्यु हो गई। सफाई में उतरे व्यक्तियों ने सुरक्षा उपकरण नहीं पहने हुए थे। सफाई कर रहे तीनों व्यक्तियों को बचाने के लिए सेप्टिक टैंक में ग्राम नगला मई निवासी नरेश पुत्र रोशन उम्र 45 साल एवं इंद्र पुत्र जंगली उम्र 50 साल घायल हो गए। उन्होंने बताया कि जेसीबी की सहायता से साईड में गड्ढा खुदवाकर सेप्टिक टैंक को तोडकर व्यक्तियों को बाहर निकाला गया। उन्होंने बताया कि सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचकर सेप्टिक टैंक की सफाई में उतरे लोगों को निकालकर आरबीएम अस्पताल पहुंचाया गया जहां उपचार के दौरान तीन व्यक्तियों की मृत्यु हो गई तथा दो व्यक्तियों का उपचार किया जा रहा है।

जिला कलक्टर ने दिए बेहतर उपचार के निर्देश

जिला कलक्टर डॉ. यादव घटना की सूचना मिलते ही आरबीएम अस्पताल पहुंचे तथा घटना पर दुःख व्यक्त करते हुए उपचाराधीन व्यक्तियों से मिलकर कुशलक्षेम पूछी तथा अस्पताल प्रशासन को बेहतर चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि अस्पताल में दवाओं की उपलब्धता के साथ विशेष स्टाफ लगाकर उपचार में किसी तरह की ढिलाई नहीं बरती जाये।

घटना स्थल पर मदद को दौडा आया। हादसे की सूचना जब प्रशासन को लगी,तो भरतपुर,नदबई व लखनपुर आदि स्थान से प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन मोके पर पहँच गया। जिन्होने ग्रामीणों की मदद से टैंक से पांचों मजदूरों को निकाला, जिनमें से तीन ने दम तोड दिया ओर दो लोगों की हालत चिन्ताजनक बताई गई। प्रशासन ने टैंक से निकाल कर पांच लोगों को भरतपुर स्थित आरबीएम अस्पताल पहुंचाया, जहां सेप्टिक टैंक मालिक सहित तीन लोगों को मृतक घोषित कर दिया। जबकि अन्य लोगों का उपचार जारी है। हादसे में सेप्टिक टैंक मालिक एवं मजदूर आकाश व करनसिंह की मौत हो गई। पुलिस व प्रशासन ने मृतकों का पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिए।

संक्षिप्त खबर

गहराया घोर जल संकट, जन जीवन हुआ बेहाल

चमकता राजस्थान, चौहमला (रमेश मोदी)। चौमहला नगर के कई वार्डों के बाशिंदे पेयजल की समस्या से जूझ रहे है , सबसे ज्यादा समस्या नगर के बीच बसी वार्ड नंबर 7 और 13 नंबर में है वार्ड नंबर 7 में हनुमान मंदिर से सटी हरिजन बस्ती व नायक मोहल्ले की है ,जंहा न तो जलदाय विभाग की लाइन है ,ओर न ही यहाँ पंचायत द्वारा लगी एक मात्र ट्यूब वेल जिसकी मोटर दो माह से खराब पड़ी है जिससे टंकी नही भर रही है ,यंहा के निवासी दूर दराज से ठेलों में टंकियां रख कर पीने का पानी ला रहे है ,यहाँ लोगो ने बताया कि ट्यूब वेल चालू करवाने के लिए कई बार पंचायत में शिकायत कर चुके है कोई सुनवाई नही हुई, ऐसी विकट जल समस्या को देखते हुवे जल ही जीवन है नर सेवा नारायण सेवा को आदर्श मानते हुवे समाजसेवी, बगदीराम गायरी ने कस्बे के प्रत्येक वार्ड में निशुल्क पानी के टैंकर शुरू किए है, जिससे आमजन को काफी राहत मिली है, जिसकी नागरिको ने सराहना की है, जिला परिषद सदस्य प्रतिनिधि अशोक गायरी ने बताया कि पानी के दो टैंकर सुबह से शुरू हो जाते है जो देर रात्रि तक जारी रहते है ,यह क्रम बरसात होने तक व पेयजल व्यवस्था सुचारूहोने तक जारी रहेगा ।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतगणना स्थल की तैयारियों का किया निरीक्षण

चमकता राजस्थान, अलवर। जिला निर्वाचन अधिकारी आशीष गुप्ता ने बाबूशोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय में पहुंचकर लोकसभा आम चुनाव के लिए 4 जून को होने वाली मतगणना की तैयारियों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतगणना कक्ष, सीसीटीवी कैमरों, बैरिकेटिंग्स, वाहन पार्किंग, प्रवेश द्वार, सुरक्षा व्यवस्था आदि का सघन निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने नगर विकास न्यास, पीडब्ल्यूडी, विद्युत विभाग व संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया कि मतगणना स्थल एवं मतगणना कक्ष की सभी व्यवस्थाएं भारत निर्वाचन आयोग की गाइडलाइन की पालना करते हुए कराई जावे। उन्होंने मतगणना कक्षों में मजबूत वायरमेस लगाने, फर्नीचर आदि की व्यवस्था पर्याप्त संख्या में करने तथा गर्मी के मद्देनजर आवश्यकता अनुसार कूलिंग की व्यवस्था करने के निर्देश दिये। उन्होंने निर्देश दिये कि मतगणना स्थल पर बैरिकेटिंग, टेंट, कुर्सी आदि की व्यवस्था के साथ पेयजल की पर्याप्त व्यवस्था रखी जावे। मतगणना स्थल पर विद्युत की आपूर्ति निर्बाध रूप से सुनिश्चित करावे। उन्होंने नगर निगम के आयुक्त को निर्देश दिये कि मतगणना स्थल पर साफ-सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित करावे। उन्होंने डीओआईटी के संयुक्त निदेशक को निर्देश दिये कि ईटीपीबीएस गणना स्थल सहित इन सभी स्थानों पर ब्रॉड बैंड इंटरनेट कनेक्शन की व्यवस्था सुनिश्चित करावे। साथ ही निर्देश दिये कि मतगणना स्थल से बाहर आमजन को ट्रेंड टीवी के माध्यम से मतगणना की चरणवार सूचना की जानकारी हेतु एलईडी स्क्रीन लगाई जावे जहां छाया व कूलर आदि की व्यवस्था कराई जावे। इस दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी वीरेन्द्र वर्मा, प्रशिक्षु आईएएस सोनू कुमारी, एडीएम शहर बीना महावर, नगर निगम के आयुक्त बजरंग सिंह चौहान, डीटीओ सुरेश यादव, यूआईटी की विशेषाधिकारी संजय दीक्षित, पीडब्ल्यूडी के अधीक्षण अभियन्ता एम.एल मीना, सांख्यिकी विभाग के उप निदेशक सुरेन्द्र शर्मा, डीओआईटी के संयुक्त निदेशक चारू अग्रवाल सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

उदयपुर जिले में थाना प्रताप नगर पुलिस की बड़ी कार्रवाई

हाईवे पर कंटेनर लूट की वारदात का किया खुलासा, चार आरोपी गिरफ्तार

चमकता राजस्थान

जयपुर/उदयपुर, (खलील कुरैशी) 30 मई। उदयपुर जिले में हाईवे पर रेफ्रिजरेटर की कंप्रेशन एवं मशीनरी से लोड कंटेनर लूट की वारदात का थाना प्रताप नगर पुलिस ने खुलासा कर घटना में शामिल चार आरोपियों गौरव भारती पुत्र शिव भारती (19) निवासी सालेरा कला थाना डबोक, मुकेश मीणा पुत्र केवल राम (23) निवासी भंवरासिया घाटी थाना डबोक, महेन्द्रू डांगी पुत्र जीतमल (21) निवासी रणछोडपुरा थाना वल्लभनगर एवं मोतीलाल डांगी पुत्र दौलत राम (23) निवासी सालेरा कला थाना डबोक हाल धूणीमाता थाना डबोक को गिरफ्तार कर लिया हैएसपी योगेश गोयल ने बताया कि पुलिस ने इनके पास से लूटे गए कंटेनर सहित एक करोड़ कीमत के रेफ्रिजरेटर के कंप्रेसर व मशीनरी पार्ट्स एवं लूट का माल छुपाने में प्रयुक्त पिकअप जप्त की है। घटना में शामिल एक और आरोपी लोकेश डांगी की तलाश की जा रही है।घटना के संबंध में 18 मई को थाना खेतड़ी

झुंझुनूं निवासी ट्रक ड्राइवर उदय सिंह द्वारा रिपोर्ट दी गई कि 15 मई की सुबह 9:00 बजे वह मुंबई से गाड़ी में गोदरेज कंपनी के रेफ्रिजरेटर के कंप्रेसर भरकर मोहाली पंजाब ले जा रहा था। 17 मई को उदयपुर से आगे ढेबारी पावर हाउस के पास रोड का काम चलने के कारण उसकी गाड़ी धीरे-धीरे चल रही थी। रात करीब 9:00 बजे एक लड़के ने उससे कहा उस्ताद जी सुनो। यह सुनकर जैसे ही उसने कंटेनर से गर्दन बाहर निकाली लड़के ने उसके सिर पर लोहे के सरिए से मारा।जिससे उसके सिर से खून निकलने लगा तो उसने गाड़ी रोक दी। इतने में तीन-चार जवान लड़के ट्रक में चढ़ गए और हथियार जैसा गर्दन पर लगा उसे गाड़ी के केबिन के अंदर पटक दिया और ऊपर से कम्बल डाल दिया। साथ ही उसका मोबाइल व पर्स छीन लिया। मारपीट कर उसे ट्रक से नीचे पटक दिया और कंटेनर लूटकर फरार हो गये। इस रिपोर्ट पर थाना प्रताप नगर में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की गई। घटना की गंभीरता को देखते हुए एसपी गोयल द्वारा आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा व सीओ छगन पुरोहित के सुपरविजन एवं एसएचओ भरत योगी के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित की गई। जिसके द्वारा हाईवे पर स्थित होटल वालों से पूछताछ व मुखबिरों की सहायता से सन्दिग्ध महेंद्र डांगी व मोतीलाल डांगी को डिटेन कर पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर इनकी जानकारी पर आरोपी गौरव भारती व मुकेश मीणा को डिटेन कर गिरफ्तार किया गया।पूछताछ में सामने आया कि अभियुक्त गौरव भारती, मुकेश मीणा व साथी लोकेश डांगी ने मिलकर ट्रक ड्राइवर के साथ मारपीट कर कंटेनर को लूटकर साकरिया खेडी के पास सुनसान जगह पर छुपा दिया। इसके बाद अपने साथी महेंद्र डांगी व मोतीलाल डांगी से पिकअप मंगवा कर कंटेनर से कंप्रेसर व मशीनरी पार्ट्स निकालकर अपने खेत के बाड़े में चारे के अंदर छुपा दिया। इस घटना की खुलासे में थाना प्रताप नगर के हैड कांस्टेबल बाबूलाल व कांस्टेबल किरण एवं साइबर सेल के कांस्टेबल लोकेश रायकवाल की विशेष भूमिका रही जिन्हें पुरुस्कृत करने की कार्रवाई की जा रही है।

देश में इंडिया गठबंधन की बहुमत से सरकार बनेगी : मीर

चमकता राजस्थान, अजमेर। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं पश्चिम बंगाल के प्रभारी गुलाम अहमद मीर ने कहा कि देश में इंडिया गठबंधन की बहुमत से सरकार बनेगी ।राष्ट्रीय महासचिव मीर आज अजमेर प्रवास के दौरान पत्रकारों से औपचारिक बातचीत कर रहे थे । उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी एवं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चाल चरित्र चेहरा आम जनता के सामने बेनकाब हो गया है और जनता अब गुमराह होने वाली नहीं है । जनता ने बदलाव का मानस बना लिया है और बदलाव शीघ्र ही देखने को मिलेगा ।उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी महंगाई बेरोजगारी जैसे बुनियादी मुद्दों पर चर्चा नहीं कर मुस्लिम मछली मटन मुजरा जैसे अमर्यादित शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं जो की प्रधानमंत्री की गरिमा एवं मर्यादा के अनुकूल नही है।अबकी बार भाजपा चार.सौ पार पर तंज करते हुए मीर ने कहा कि भाजपा मुंगेरी लाल के सपने देख रही है कहीं ऐसा ना हो कि इंडिया गठबंधन की सीट 400 पार हो जाए।उन्होंने कहा कि देश की जनता ने कांग्रेस के पांच न्याय एवं 25 गारंटी पर अपने मोहर लगाई है और देश में बदलाव देखने को मिलेगा। देश मे युवाओं बेरोजगारों दलित महिला किसान श्रमिक वर्ग के उत्थान के लिए नई सरकार आएगी।राष्ट्रीय महासचिव गुलाम अहमद मीर ने आज अजमेर में के अल्प प्रवास के दौरान ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह में अकीदत के फूल एवं मखमली चादर पेश कर देश में अमन चैन की दुआ की। इस अवसर पर हाजी इंसाफ अली अजमेर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के निवर्तमान महासचिव शिवकुमार बंसल दिलीप सामतानी मुख्तार मिर्जा सलामुद्दीन रुस्तम अली घोसी मूलचंद प्रकाश आदि ने राष्ट्रीय महासचिव मीर का माल्यार्पण का स्वागत किया।राष्ट्रीय महासचिव मीर के अजमेर पहुंचने पर अजमेर उत्तर विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस कार्यालय पर महेंद्र सिंह रलावता के नेतृत्व में साफा एवं माला पहनकर भव्य स्वागत किया गया । इस अवसर पर पार्षद गजेंद्र सिंह रलावता राजेंद्र नरचल राज नारायण आसोपा संपत कोठारी अनीश खत्री अबरार कुरैशी शक्ति सिंह रलावता सहित कांग्रेस के कई पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

'विश्व तम्बाकू निषेध दिवस' पर आयोजित होगी तम्बाकू निषेध की शपथ

चमकता राजस्थान, जयपुर (खलील कुरैशी)। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर तम्बाकू निषेध की शपथ का आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर चिकित्साकर्मियों सहित आमजन तम्बाकू निषेध की शपथ लेंगे। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जयपुर प्रथम डॉ. रवि शेखावत ने बताया कि जिला कलक्टर महोदय के निर्देशानुसार विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर थीम पर जिले में चिकित्साकर्मियों और आमजन के द्वारा तम्बाकू निषेध की शपथ ली जाएगी। शपथ कार्यक्रम 31 मई से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 21 जून तक निरंतर आयोजित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि 31 मई से जिले के चिकित्सा संस्थानों, आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में आमजन की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 21 जून तक ''तम्बाकू निषेध की शपथ'' आयोजित की जाएगी। इसके अलावा जन जागरूकता गतिविधियों के साथ तम्बाकू उत्पाद अधिनियम,2003 के अंतर्गत चालान व सीजर की कार्यवाही की जाएगी।

संभागीय आयुक्त ने किया औचक निरीक्षण .....

श्री अन्नपूर्णा रसोई में जांची भोजन की गुणवत्ता

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी)। संभागीय आयुक्त आरुषि मालिक ने गुरुवार को बस्सी उपखंड के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, कानोता 132 के.वी. जी एस एस स्टेशन, बस्सी उपखंड कार्यालय, तहसील कार्यालय, एसीएम कोर्ट, अन्नपूर्णा रसोई योजना का निरीक्षण किया एवम उपखंड स्तरिये अधिकारियों की बैठक ली। राजकीय पशु चिकित्सालय मण्डाना व आयुष्मान आरोग्य मन्दिर मण्डाना जिला दौसा का निरीक्षण किया गया। इस दौरान आमजन की बिजली, पानी व अन्य कार्यों से जुड़ी समस्याओं का त्वरित निस्तारण करने, हीटवेव के प्रति जनता को जागरूक करने, गर्मी पानी बिजली की निर्बाध आपूर्ति बनाये रखने के निर्देश दिए। कार्यालयों में ई-फाइल सिस्टम की समीक्षा करते हुए कार्यालयों में कामकाज में पारदर्शिता, जवाबदेहिता सुनिश्चित करने के लिए सभी कार्य ऑनलाइन ई फाइल से ही किये जाने, ई-फाइल के कम से कम समयावधि में निस्तारण करने के निर्देश दिए। कार्यालय व कार्मिको के बैठक स्थान पर साफ- सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए। अन्नपूर्णा रसोई में भोजन की गुणवत्ता, सफाई व्यवस्था, बैठने की व्यवस्था एवं पेयजल सहित अन्य इंतजामों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने लाभार्थियों के साथ भोजन करते हुए संवाद कर भोजन सहित अन्य व्यवस्थाओं का फीडबैक भी लिया। इस दौरान रसोई व्यवस्था सुचारू मिली लेकिनसाफ-सफाई व्यवस्था, खाने की गुणवत्ता में कमी नजर आयी जिसको लेकर नगरपालिका के अधिशाषी अधिकारी एवं एसडीम को व्यवस्थाएं दुरस्त करने, अधिकारयों को महीने में कम से कम एक बार क्षेत्र की रसोई में भोजन जरूर खाने के लिए निर्देशित किया। साथ ही गर्मी को देखते हुए रसोई में आमजन के लिए पर्याप्त कूलर व पंखे की व्यवस्था किये जाने के भी निर्देश दिए।जिला कलक्टर दौसा के सभागार कक्ष में जिला स्तरीय अधिकारियों को निर्देश प्रदान किए गए कि जिले में वनीकरण/

अधिकारियों की ली बैठक, योजनाओं का लिया फीडबैक

वृक्षारोपण कार्यों की समीक्षा की गई, मानसून में पौधारोपण अभियान की तैयारियों एवं विभागवार पौधारोपण के निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार ही नहीं अपितु लक्ष्य से अधिक पौधारोपण किये जाने के प्रयासों के साथ साथ इनका रख रखाव भी सुनिश्चित करें। सार्वजनिक निर्माण विभाग, खड़क किनारे छायादार वृक्ष लगाये एवं प्रत्येक सरकारी कार्मिक कम से कम 2 पौधे लगाकर उनका रख रखाव करें। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, सी.एच.सी. में हीटवेव व मौसमी बीमारियों को देखते हुए भामाशाह को प्रोत्साहित कर उनके सहयोग से कूलर आदि एवं अन्य आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाने के प्रयास करने के निर्देश दिए गए।सभी सरकारी कार्मिक राजकाज पोर्टल पर ई फाईल प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करें एवं ई फाईल से संबंधित जानकारी को पढे एवं विडियो देखे। कार्मिक ई-फाईलों का प्राथमिकता से समयबद्धता के साथ निस्तारित करें। जिले में लगभग 17 पानी के स्त्रोत निर्माण उपरांत विद्युत कनेक्शन के अभाव में संचालित नहीं है। ऐसे पानी के स्त्रोत पर खश्शठछ, ढलएऊ विभाग के अधिकारी व जिला कलक्टर से समन्वय स्थापित कर शीघ्राशीघ्र विद्युत कनेक्शन करवाकर संचालित करें। बिजली-पानी की समस्याओं के लिए स्थापित कंट्रोल रुम पर समयबद्धता के साथ आमजन की समस्याओं का समाधान करें। राजस्थान सम्पर्क पोर्टल पर दर्ज प्रकरणों का शीघ्रता से निस्तारण करने एवं 30 दिन से अधिक लंबित प्रकरणों को चिन्हित कर परिवादों को समय सीमा में निस्तारित करने के निर्देश दिए गए।

एक नजर

नाईन एमएम पिस्टल के साथ तीन गिरफ्तार

पूर्वी चंपारण। जिला मुख्यालय मोतिहारी शहर के राजा बाजार पश्चिमी गोपालपुर मोहल्ले से पुलिस ने एक किराए के मकान में छिपे तीन अपराधियो को गिरफ्तार किया है। एसपी कान्तेश कुमार मिश्र के निर्देश पर पुलिस ने उक्त कार्रवाई की है। गिरफ्तार बादमाशों में नगर थाना क्षेत्र का ही हर्षित कुमार,मो मोसारिब खान व रोहित कुमार शामिल है। गिरफ्तार किए गए अपराधियो के पास से 9 एमएम का 1 आटोमेटिक पिस्टल,4 जिंदा कारतूस 1 किलो दस ग्राम चरस,2 चाकू,2 बाइक 4 मोबाइल व तीन एटीएम बरामद किया गया है। गिरफ्तार बदमाशो में हर्षित के विरुद्ध नगर थाने में वर्ष 2018 में आर्म्स एक्ट व वर्ष 19 में उत्पाद अधिनियम का मामला दर्ज है।

ओडिशा में आल इंडिया काइकोसिन काईकोन समर शिविर 2024 की आयोजन

ककोलकता। ओडिशा में आल इंडिया काइकोसिन कईकोन समर शिविर 2024 आयोजन हुआ । एनएस टाटा क्यूकोसिन कैरेट ऑर्गेनाइजेशन ऑल इंडिया के अध्यक्ष निर्मल साहा (सेंसेई टू सीहान) को ओडिशा में सम्मानित किया गया। ऑल इंडिया काइकोसिन पहल ने 27 मई से 30 मई 2024 तक ओडिशा पुरी में चार दिवसीय कराटे समर कैंपस का आयोजन किया। इस कराटे शिविर में ओडिशा पुरी के चार दिवसीय शिविर के 70 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इन पांच वर्षों में कराटे समर कैंप में सेहान निर्मल साहा, उनके विभिन्न छात्र सेंसेई पद्मार्यदापूर्ण कराटे दीक्षित गुरु परिमल दे, बुद्धदेव बोस, देबाशीष मंडल, प्रदीप कर्मकार, शेख एस, के सैफुद्दीन, अंकिता साहा, सायन द्वीप साहा, उत्तम सरकार, अमित मैती, गोविंदा बोस सहित कई अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

पैरागॉन ने अपने ब्रांड का किया मेकओवर

कोलकाता। भारत के अग्रणी फुटवियर ब्राण्ड पैरागॉन ने खुद को रिपोजिशन करने की घोषणा की है। यह नयापन भारतीयों की सोच के अनुरूप उन्हें ब्राण्ड के साथ जोड़ता भी है। यह बदलाव ऐसे वक्त में हुआ है, जब ब्राण्ड फुटवियर के बाजार में अपनी मौजूदगी के 50 साल पूरे करने जा रहा है। ब्राण्ड की नई पहचान आम आदमी के कभी खत्म न होने वाले उत्साह की सराहना करती है और इसकी टैगलाइन है जिद, चलते रहने की। इसमें हमारे देश के लिये रोजाना काम करने वाले नायकों पर रोशनी डाली गई है। यह लोग हर चुनौती में डटे रहते हैं और लगातार बने रहने वाले अपने उत्साह से नये भारत की सोच को संभव बनाते हैं। इस रिपोजिशनिंग के जरिये पैरागॉन अपने ढेरों समर्थकों के साथ भावनात्मक जुड़ाव बना रहा है। चिलचिलाती गर्मी से लेकर भीषण सर्दी में, बारिश और धूप में, दिन और रात में एक भारत है, जो अपने जरूरी काम करने से कभी रूकता नहीं है। इस तरह ब्राण्ड भारत के कार्यबल की लगन का सम्मान करता है। यह लोग मध्यम वर्ग और निम्न मध्यम वर्ग से लेकर स्वरोजगार करने वाले और कई दूसरे लोग हैं, जो नये भारत को बनाने वाले रोजमर्रा के नायक हैं। पैरागॉन के एक्जीक्यूटिव वीपी सचिन जोसेफ ने कहा, जिद, चलते रहने की का नारा पैरागॉन के मुख्य मूल्यों को साकार करता है। यह चौंका देने वाली मजबूती, हिम्मत और कभी खत्म न होने वाली उम्मीद को सम्मान देता है, जो भारत के लोगों में होती है। यह हमारी ओर से भारतीयों के अतुलनीय उत्साह को दिया गया सम्मान है।

हाजमोला के कार्तिक आर्यन बने ब्राण्ड अम्बेसडर

कोलकाता। भारत की अग्रणी विज्ञान-आधारित आयुर्वेद कंपनी डाबर इंडिया लिमिटेड ने हाजमोला मिस्टर आम के लॉन्च के साथ अपने हाजमोला पोर्टफोलियो का विस्तार किया है। तो हाजमोला के चटपटे स्वाद के साथ अब आम के मजेदार फ्लेवर का लुत्फ उठाने के लिए तैयार हो जाएं! साथ ही कंपनी ने जाने-माने बॉलीवुड एक्टर कार्तिक आर्यन को हाजमोला का ब्राण्ड अम्बेसडर भी बनाया है। हमें खुशी है कि हम अपनी हाजमोला रेंज में मिस्टर आम -हाजमोला में आम का चटकारा लेकर आए हैं। यह नया वेरिएन्ट हाजमोला के सिगनेचर चटकारा के साथ कच्चे आम के टैंगी फ्लेवर का बेहतरीन संयोजन है, जिसे उपभोक्ता खूब पसंद करेंगे। श्री अजय सिंह परिहार, मार्केटिंग हैड-ओटीसी हेल्थकेयर, डाबर इंडिया लिमिटेड ने कहा। कार्तिक आर्यन को ब्राण्ड अम्बेसडर बनाने से इस प्रोडक्ट की तरफ उपभोक्ताओं का खिंचाव निश्चित रूप से और अधिक बढ़ेगा। ब्राण्ड के साथ एसोसिएशन पर बात करते हुए श्री कार्तिक आर्यन ने कहा, इस नए इनोवेशन के साथ हाजमोला देश के डाइजेस्टिव स्पेस में बड़ा बदलाव लाने के लिए तैयार है। यह मजेदार, स्वादिष्ट और वास्तव में चटपटा है। मुझे खुशी है कि मैं अपने प्रशंसकों के लिए हाजमोला मिस्टर आम की चटपटी दुनिया के साथ जुड़ने जा रहा हूं।

एनजेपी से रियायत दर पर चलेगी पर्यटक ट्रेन

किशनगंज। भरतीय रेलवे की शाखा इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कारपोरेशन लिमिटेड पूर्वी क्षेत्र कोलकाता की पहल पर पर्यटक ट्रेन भारत गौरव 24 जून से एनजेपी से चलायी जाएगी। ट्रेन का ठहराव किशनगंज में भी होगा। जो वैष्णव देवी, हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन, अयोध्या की यात्रा करते हुए वापस किशनगंज पहुंचेगी। गुरुवार को किशनगंज रेलवे स्टेशन के वीआईपी लॉन्ज में प्रेसवार्ता के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी से आये एक्जीक्युटिव टूरिज्म डिपार्टमेंट के विश्वजीत दास ने कहा कि ट्रेन एनजेपी से सुबह 8 बजे खुलेगी इस ट्रेन में स्लीपर क्लास व थ्री ऐसी दो श्रेणी होगी। सबसे पहले ट्रेन माता वैष्णव देवी स्थान कटरा जाएगी, इसके बाद हरिद्वार, ऋषिकेश, त्रिवेणी घाट जाएगी। इसके बाद मथुरा जाएगी। अंत मे अयोध्या जाएगी।

कोलकाता में अशांति रोकने के लिए कड़ी सुरक्षा

संवाददाता

कोलकाता। चुनाव के दिन अशांति रोकने के लिए केंद्रीय बल की 324 विशेष क्यूआरटी कोलकाता में गश्त करेंगी। ये विशेष त्वरित प्रतिक्रिया दल या विशेष क्यूआरटी मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में गश्त करेंगे। कोलकाता के अलावा बराकपुर, बिधाननगर और बरसात के एक हिस्से में केंद्रीय बल की त्वरित प्रतिक्रिया टीम द्वारा गश्त की जाएगी।

ऐसी व्यवस्था की जा रही है कि कोलकाता में मतदान से पहले और मतदान के दौरान किसी भी शोर की सूचना मिलने पर पांच से दस मिनट के भीतर इस विशेष क्यूआरटी तक पहुंचा जा सके। साथ ही, यह सुनिश्चित करने के लिए कि रात में शहर में कोई अशांति या राजनीतिक संघर्ष न हो, 72 'रात्रि गश्ती वाहन' हैं, जिन पर केंद्रीय बल गश्त करेंगे। चुनाव आयोग के अधिकारी बुधवार को धनधान्य स्टेडियम में एक बैठक में शामिल हुए।

यहां कोलकाता पुलिस प्रमुख, प्रत्येक थाने के ओसी, सेक्टर मोबाइल के प्रभारी अधिकारी मौजूद थे। इस बैठक में चुनाव आयोग के अधिकारियों ने पुलिस अधिकारियों को कई निर्देश दिये। लालबाजार के सूत्रों ने बताया कि कोलकाता के हर बूथ पर केंद्रीय बलों की तैनाती की जा रही है। सेंट्रल आर्मी की कुल 246 कंपनियां कलकत्ता आ रही हैं। इनमें उत्तरी कोलकाता केंद्र के 1 हजार 869 बूथों के लिए 66.5 कंपनियां, दक्षिण कोलकाता केंद्र के 2 हजार 78 बूथों के लिए 82.61 कंपनियां, जादवपुर केंद्र के 943 बूथों के लिए 36.7 कंपनियां तैनात की जा रही हैं। इसके अलावा कोलकाता पुलिस के अंतर्गत आने वाले डायमंड हार्बर केंद्र के एक हिस्से में 144 बूथों के लिए 7.3 कंपनियां और जयनगर केंद्र के एक हिस्से में 124 बूथों के लिए 6 कंपनियां तैनात की जा रही हैं।

मतदान से दो दिन पहले केंद्रीय बल 45 नाकों, एफएसटी और एसएसटी नाकों पर आधे-आधे हिस्सों में तैनात हैं। मतदान के दौरान 185 त्वरित प्रतिक्रिया टीमें या क्यूआरटी कोलकाता की सड़कों पर गश्त करेंगी। इसके अलावा 324 विशेष क्यूआरटी गश्त करेंगी। प्रत्येक वाहन में एक कलकत्ता पुलिस अधिकारी के साथ एक अनुभाग या आठ केंद्रीय बल के जवान होंगे जो बल का मार्गदर्शन करेंगे। ये वाहन मुख्य रूप से ऊंचे रिहायशी और घनी आबादी वाले इलाकों में गश्त करेंगे, ताकि इलाकों से लोगों का एक समूह कोई गड़बड़ी पैदा न कर सके। ऐसे में केंद्रीय बल 'इलाके पर दबदबा बनाने' के लिए बार-बार उन जगहों पर जाएंगे।

मतदान से दो दिन पहले रात भर शहर में गश्त करने वाले 72 रात्रि गश्ती वाहनों में केंद्रीय बलों का एक वर्ग भी होगा। कोलकाता पुलिस अंतर्गत भांगड़ क्षेत्र में मतदान के दिन कानून-व्यवस्था बनाए रखेगी। भांगड़ इलाके में सेंट्रल आर्मी बूथ पर 14 कंपनियां मौजूद रहेंगी। पुलिस ने बताया कि इसके अलावा 36 विशेष क्यूआरटी, 10 रात्रि गश्ती वाहन, करीब 18 क्यूआरटी भांगड़ इलाके में गश्त करेंगे, जिसमें केंद्रीय बल भी होंगे।

'कितनी जेलें हैं देखूंगी', डायमंड हार्बर में अभिषेक की ढाल है वही ममता!

संवाददाता

कोलकात। इस बार ममता बनर्जी ने डायमंड हार्बर में चुनाव प्रचार किये। उन्होंने कहा, 'कभी-कभी हमें धमकाया जाता है। मुझे इसके लिए बाध्य नहीं होना पड़ेगा। मैं लड़ूंगी, मैं डरता नहीं हूं। वह कहता है कि वह मुझे और अभिषेक को गिरफ्तार कर लेगा। करके दिखाओ? कितनी जेलें हैं मैं देखूंगी। क्या होता है आप देखिए'। 2019 के बाद 2024। अभिषेक लगातार दो बार डायमंड हार्बर से सांसद चुने गए। इस बार भी वह उम्मीदवार हैं। उनके समर्थन में ममता ने बुधबार को मेटियाबुरुज में सभा की।

ममता ने कहा, 'कल 4 घंटे का जुलूस है। पूरा दक्षिण कोलकाता में मार्च। 12 किलोमीटर का जुलूस है। अभिषेक यहां नहीं आये। मैंने उससे कहा, मैं वहां जाउंगी, इसलिए मैं आ गया। आंधी हो या पानी, वह पूरे दिन अपने संसदीय क्षेत्र में व्यस्त रहते हैं। मैं उनसे बार-बार कहता हूं, आपके जैसा संसदीय क्षेत्र को कोई नहीं देख सकता। आप इतना कष्ट कैसे उठा सकते हैं?

इससे पहले, ममता ने भी श्यामबाजार पांच मथार मोड़ से शिमला स्ट्रीट पर स्वामीजी के घर तक रोड-शो किया, जैसा कि मोदी ने किया था। उन्होंने कहा, 'कल जहां मोदीजी ने बैठक की थी, आज मैंने श्यामबाजार से विवेकानंद के घर तक मार्च किया।

नेताजी ने आजाद हिंद फौज बनाई, योजना आयोग बनाया। वहीं नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जन्मदिन पर आज दिल्ली में राष्ट्रीय अवकाश की घोषणा नहीं की गई है। मोदी कल गये थे राजनीति करने, मैं आज गया प्रतिभा दिखाने। 'नेताजी' को सलाम।'

इस बीच लोकसभा चुनाव अब अंतिम चरण में है। शनिवार को कोलकाता समेत दो चौबीस परगना के 9 विधानसभा क्षेत्रों में सातवें और आखिरी दौर का मतदान होगा। ममता ने कहा, 'बांग्ला भारत को नेतृत्व देगा। मैं देश की जनता की समस्याओं का समाधान करुँगी। उससे ज्यादा कुछ नहीं।,में नेही झुकूँगी। बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ही एकमात्र पार्टी है जो लड़ रही है। जब वह कहते हैं कि उन्हें बंगाल में यूपी से ज्यादा सीटें मिलेंगी तो उनका मतलब 'चला गया' होता है।

बांग्लादेश सांसद मर्डर केसः बांग्लादेश के खुफिया विभाग के प्रमुख का

नेपाल-अमेरिका में छिपा है एक और आरोपी

संवाददाता

कोलकाता। बांग्लादेश के सांसद अनवारुल अजीम अनार हत्याकांड पर बांग्लादेश डिटेक्टिव डिपार्टमेंट के चीफ हारुन-ओर-राशिद ने कहा कि मैं सीआईडी पश्चिम बंगाल और पश्चिम बंगाल पुलिस के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को धन्यवाद देना चाहता हूं। पिछले कुछ दिनों में हम घटनास्थल पर गए और सीआईडी कार्यालय में आरोपियों से पूछताछ की, वहाँ से हमें जो जानकारी मिली, वह बांग्लादेश पुलिस की हिरासत में मौजूद एक अन्य आरोपी के बयान से मेल खाती थी। सीआईडी पश्चिम बंगाल की मदद से हमने सीवेज लाइन का निरीक्षण किया और सेप्टिक टैंक से मांस और बाल प्राप्त किए, जिन्हें फोरेंसिक जाँच के लिए भेजा गया।

बांग्लादेश के सांसद की बेटी डीएनए जाँच के लिए बहुत जल्द कोलकाता आएगी। एक अन्य आरोपी नेपाल या अमेरिका में छिपा हुआ है। सीआईडी पश्चिम बंगाल और हमारी टीम इंटरपोल से भी मदद मांग रही है। पश्चिम बंगाल सीआईडी के जांच अधिकारियों ने मंगलवार को दावा किया कि उन्हें कोलकाता के निकट न्यू टाउन इलाके में एक फ्लैट के सेप्टिक टैंक से मांस के टुकड़े और बाल बरामद हुए हैं। संदेह है कि फ्लैट में ही बांग्लादेश के सांसद अनवारुल अजीम अनार की हत्या की गई थी। उन्होंने फ्लैट से खून के नमूने भी बरामद किए हैं।

लापता सांसद की तलाश तब शुरू हुई जब उत्तर कोलकाता के वराहनगर निवासी और बांग्लादेशी राजनेता के परिचित गोपाल बिस्वास ने 18 मई को स्थानीय पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। सांसद कथित तौर पर 12 मई को इलाज के लिए कोलकाता पहुंचे थे। अनार बिश्वास के घर रह रहे थे। बिश्वास ने अपनी शिकायत में कहा कि अनार 13 मई की दोपहर को डॉक्टर से मिलने के लिए अपने वराहनगर स्थित घर से निकले थे और कहा था कि वह रात के खाने के लिए घर वापस आएंगे। बिस्वास ने दावा किया कि बांग्लादेश के सांसद से 17 मई को संपर्क नहीं हो पाया था, जिसके कारण उन्होंने एक दिन बाद गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कराई।

पश्चिम बंगाल में फिर शुरू हुई गर्मी

...और चढ़ेगा पारा

संवाददाता

कोलकाता। महानगर कोलकाता समेत राज्य के अन्य हिस्सों में एक बार फिर गर्मी का सिलसिला शुरू हो गया है। अलीपुर स्थित मौसम विभाग के क्षेत्रीय मुख्यालय की ओर से गुरुवार को इस बारे में जानकारी दी गई है। इसमें बताया गया है कि कोलकाता में न्यूनतम तापमान 30.2 डिग्री सेल्सियस है जो सामान्य से तीन डिग्री अधिक है। इसके अलावा अधिकतम तापमान सामान्य से दो डिग्री कम 33.3 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया है। कोलकाता के अलावा हावड़ा, हुगली, उत्तर और दक्षिण 24 परगना, पूर्व और पश्चिम मेदिनीपुर, पुरुलिया, बांकुड़ा समेत राज्य के अन्य हिस्सों में तापमान 29 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच बना हुआ है। मौसम विभाग ने बताया है कि आसमान में बादल छाए हुए हैं जिसकी वजह से गर्म हवाएं ऊपर नहीं उठ पा रहीं और उमस भरी गर्मी का एहसास लोगों को लगातार हो रहा है। इसी तरह से गर्मी का सिलसिला फिलहाल अगले हफ्ते तक जारी रहने वाला है। उत्तर बंगाल के अलीपुरद्वार, कूचबिहार, जलपाईगुड़ी, दार्जिलिंग और कलिमपोंग में मौसम सामान्य बना हुआ है।

आयरन हैंड ओपन आर्म रेसलिंग चैंपियनशिप 2024 का आयोजन

संवाददाता

कोलकाता। संतोष मित्रा स्मृति संघ, बागुईआटी में आयरन हैंड ओपन आर्म रेसलिंग चैंपियनशिप 2024 का आयोजन किया गया। आर्म रेसलिंग एसोसिएशन ऑफ बंगाल और व्यायाम मंदिर अशोक अखाड़ा द्वारा आयोजित। रविवार, 26 मई को चक्रवात रेमेला के दिन, तेज चक्रवात और मूसलाधार बारिश के बावजूद, आसनसोल, बर्दवान, आरामबाग, चंदननगर, हुगली, डायमंड हार्बर, बारासात, बनगांव सहित विभिन्न शहरों के पुरुषों और महिलाओं ने खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में कुल 61 महिला सदस्य भाग लिए थे ।

कार्यक्रम की शुरूआत में आयोजक एथलीट, निमार्ता निर्देशक और बॉलीवुड फिल्म अभिनेता अशोक राज ने गंभीर आपदा के बीच इस खेल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए खिलाड़ियों और उनके माता-पिता को धन्यवाद दिया। सबसे पहले, सोनाली घोष ने भरत नाट्यम के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरूआत की, जबकि सौरदीप दास और महेंद्र टैगोर ने फिजिकल फिटनेस का प्रदर्शन किया।

अभिप्रीता हलदर और आयशा राज ने कलाबाजी का प्रदर्शन किया, अमीषा राज ने संतुलन योग का प्रदर्शन किया। क्लब के सचिव आशीष साहा ने प्रतियोगियों एवं दर्शकों का स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर अतिथि के रूप में अनिर्बान नंदी, किशोर दास, राजीव बनर्जी, नंदन देबनाथ, लबनी बॉल, कोलकाता पुलिस सौरदीप दास, महेंद्र ठाकुर और बापी दास उपस्थित थे। इस दिन की प्रतियोगिता से 8 सफल प्रतियोगियों का चयन अगले जून में मुंबई में होने वाली आर्म स्पोर्ट्स चैम्पियनशिप के लिए किया गया है। जो खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए मुंबई जाएंगे, उनमें अभिरन नस्कर, अमित गराई, दीपक बर्मन, सायन पाइक, महफूर रहमान बिस्वास, आशुतोष परिदा और सैकत रॉय हैं। आर्म स्पोर्ट्स फेडरेशन के अध्यक्ष बिमल कुमार चंद और कोच अशोक राज प्रतियोगियों के साथ होंगे।

भीषण गर्मी से नौनिहाल हुए बेहाल

बिहारशरीफ। भीषण गर्मी का प्रकोप दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। बिहार सरकार के तानाशाह रवैया के कारण इस भीषण गर्मी में भी छोटे-छोटे बच्चे स्कूल जाने के लिए मजबूर है। बताया जाता है कि इस्लामपुर प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय पत्तिविगहा मे गुरुवार को सुबह 6 बजकर 45 मिनट मे चेतना सत्र के दौरान विद्यालय मे कक्षा 4 में पढ़ने वाला छात्र अमित रंजन कुमार भीषण गर्मी के कारण बेहोश होकर गिर गया। छात्र के बेहोश होकर गिरने पर विद्यालय के शिक्षकों के होश उड़ गए।आनफान मे बेहोश हुए छात्र को विद्यालय कक्षा मे लाकर पानी छीटकर होश मे लाकर उसके परिजन को बुलाकर इलाज के लिए निजी चिकित्सक के पास भेजा गया। इस मामले मे विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक अशोक कुमार ने बताया की विद्यालय मे सुबह चेतना सत्र के दौरान लाइन मे खड़े विद्यालय का अमित रंजन कुमार नामक छात्र भीषण गर्मी के कारण बेहोश होकर गिर गया था लेकिन छात्र अब पुरी तरह से ठीक है।

एक तो बेटा है, उसको भी नहीं संभाल सकते, बेटी गिनने पर नीतीश को राबड़ी का तीखा जवाब

राबड़ी देवी ने आरोप लगाया है कि नीतीश कुमार गाली गलौज करते हैं

हम परिवार के साथ राज्य भी चलाए हैं और देश भी चलाएंगे

एजेंसी

पटना। बिहार में लोकसभा चुनाव 2024 के प्रचार अभियान बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव और राबड़ी देवी के बाल बच्चों की संख्या का मामला छाया रहा। सीएम नीतीश कुमार खास तौर पर हमलावर रहे। अपनी लगभग सभी चुनावी जनसभाओं में नीतीश ने लालू राबड़ी को इतनी बड़ी संख्या में बच्चे पैदा करने के लिए निशाने पर लिया। तेजस्वी यादव ने बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर और अटल बिहारी वाजपेई के भाई बहनों की संख्या की चर्चा कर मामले को न्यूट्रलाइज करने की कोशिश की। अब राबड़ी देवी ने नीतीश कुमार के इस बयान पर पलटवार किया है। पाटलिपुत्र लोक सभा क्षेत्र में बेटी मीसा भारती के लिए चुनाव प्रचार करने के दौरान उन्होंने दो टूक अंदाज में कहा कि नीतीश कुमार से एक बेटा भी नहीं संभालता है हमारे बच्चे तो अच्छा कर रहे हैं।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश के बयान पर राबड़ी देवी भड़क उठी हैं। क्योंकि बार बार नीतीश कुमार ने यह सवाल खुले मंच से उठाया। राबड़ी देवी ने कहा कि नीतीश कुमार चुनाव प्रचार के दौरान गाली-गलौज कर रहे हैं। उन्हें इस बात से भी दिक्कत है कि हमारे 9 बच्चे हैं। इसमें उनका क्या बिगड़ता है। उन्हें पता होना चाहिए कि हमने अपने परिवार के साथ-साथ राज्य को भी चलाया है। अगर जरूरत पड़ी तो हम देश भी चला सकते हैं इसके लिए तैयार हैं। नीतीश कुमार पर बरसते हुए राबड़ी देवी ने कहा कि हमारे सभी बच्चे अच्छा कर रहे हैं। लेकिन नीतीश का एक बेटा है, जिसे वो संभाल नहीं सकते हैं। पहले अपना देख लें तब दूसरे की बात करें।

दरअसल लालू यादव और राबड़ी देवी के 9 बेटे बेटियां हैं। इनमें से दो बेटे और एक बेटी को लालू यादव राजनीति में सेट कर चुके हैं। एक अन्य बेटी को सारण से लोकसभा का चुनाव लड़ा रहे हैं। विधायक बेटे तेजस्वी यादव को सीएम बनाने के लिए लालू यादव कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। बड़े बेटे तेजप्रताप यादव दो बार मंत्री बन चुके हैं और वर्तमान में विधायक हैं। जेल जाने से पहले उन्होंने पत्नी राबड़ी देवी को सीएम बना दिया। नीतीश कुमार ने इस चुनाव में लालू के परिवार प्रेम को बड़ा मुद्दा बना दिया और जमकर भुनाया।

रोजवैली के बाद इस बार राशन भ्रष्टाचार मामले में

रितुपर्णा को ईडी ने जारी किया समन!

संवाददाता

कोलकाता। राशन भ्रष्टाचार मामले में अभिनेत्री रितुपर्णा सेनगुप्ता को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने तलब किया। 2019 में रोजवैली वित्तीय गबन मामले में पूछताछ के लगभग पांच साल बाद, ईडी ने उन्हें एक अन्य मामले में तलब किया। गुरुवार को ईडी सूत्रों के मुताबिक, उन्हें 5 जून को ईडी दफ्तर में बुलाया गया है।

ईडी के एक सूत्र के मुताबिक, रितुपर्णा फिलहाल अमेरिका में हैं। उन्हें बुधवार को ई-मेल के जरिये तलब किया गया है। यह सम्मन क्यों? सूत्र के मुताबिक, जांच में टॉलीवुड अभिनेत्री और राशन भ्रष्टाचार मामले में गिरफ्तार एक आरोपी के बीच लगभग एक करोड़ रुपये के नकद लेनदेन का पता चला। उन्हें उस पैसे का कारण और 'गंतव्य' जानने के लिए बुलाया गया है।

हालांकि, ईडी के नोटिस को लेकर रितुपर्णा की ओर से अब तक कोई जवाब नहीं आया है। संयोग से, राशन भ्रष्टाचार मामले में ईडी पहले ही राज्य के पूर्व खाद्य मंत्री ज्योतिप्रिय मल्लिक, बनगांव नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष शंकर आध्या, राशन व्यापारी बकीबुर रहमान और उनके करीबी सहयोगियों सहित सत्तारूढ़ दल के कुछ नेताओं को गिरफ्तार कर चुकी है। 5 जनवरी को राशन भ्रष्टाचार की जांच के दौरान संदेशखाली के तृणमूल नेता शाहजहां शेख के घर गए ईडी अधिकारियों पर हमला किया गया था। इससे पहले जुलाई 2019 में रितुपर्णा और अभिनेता प्रसेनजीत चटर्जी से रोजवैली मामले की जांच कर रही ईडी ने पूछताछ की थी। एक समय में रोज वैली कंपनी द्वारा कई बांग्ला फिल्मों का निर्माण किया जाता था।

एक नजर

छात्रों के लिए मशीन लर्निंग का निःशुल्क कोर्स

नई दिल्ली। टेक्नोलॉजी के इस दौर में आर्टिफिशल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग को काफी बढ़ावा मिल रहा है। यही वजह है कि इन विषयों में पढ़ाई करने को लेकर छात्रों का रुझान भी काफी तेजी से बढ़ रहा है। वे इस क्षेत्र में अपनी स्किल्स और नॉलेज को बढ़ा सकें, इस उद्देश्य से एमेजॉन इंडिया मशीन लर्निंग (एमएल) समर स्कूल के चौथे संस्करण की शुरूआत कर रहा है। मशीन लर्निंग में अपना करियर बनाने के इच्छुक छात्र 31 मई से 21 जून, 2024 तक अपना रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। एमएलएसएस 2022 बैच के प्रभाश माले, जो वर्तमान में एमेजॉन में एप्लाईड साइंटिस्ट के रूप में काम कर रहे हैं, ने कहा कि एमेजॉन एमएल समर स्कूल द्वारा हमारा उदेश्य इस कमी को दूर करना और छात्रों को विज्ञान में करियर बनाने के लिए इंडस्ट्री-रेडी बनाना है। यह एजुकेशनल कोर्स पूरी तरह निःशुल्क है, जिसे जुलाई माह में 4 वीकेंड तक चलाया जाएगा। इसके तहत आठ मॉड्यूल्स में छात्रों को मशीन लर्निंग की गहरी समझ और कौशल प्रदान किए जाएंगे। इस कोर्स में सुपरवाईज्ड लर्निंग, डीप न्यूरल नेटवर्क्स, डायमेंशन रिडक्शन, अनसुपरवाईज्ड लर्निंग, सीक्वेंशल मॉडल, रि-इन्फोर्समेंट लर्निंग, जनरेटिव एआई और एलएलएम तथा कैज्युअल इन्फेरेंस शामिल हैं। मशीन लर्निंग समर स्कूल में भारत के किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान से बैचलर, मास्टर्स या पीएचडी की पढ़ाई कर रहे इंजीनियरिंग के वे सभी छात्र हिस्सा ले सकते हैं, जो वर्ष 2025 या 2026 में अपनी डिग्री पूरी करने वाले हैं। पात्र छात्रों का एक विशेष टेस्ट होगा, जिसमें सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले 3000 छात्रों को एमएल समर स्कूल में प्रवेश दिया जाएगा।

राष्ट्रपति ने इजराइल से राजदूत को वापस बुलाया

रियो डी जेनेरियो। गाजा में युद्ध को लेकर ब्राजील और इजराइल के बीच महीनों से जारी तनाव के बाद बुधवार को राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा ने तेल अवीव से अपने राजदूत को वापस बुला लिया है। ब्राजील ने इस कदम की आधिकारिक रूप से जानकारी दी है। इससे पहले गाजा पर हमले की राष्ट्रपति लूला इजराइल की आलोचना कर चुके हैं। इस साल की शुरूआत में उन्होंने गाजा युद्ध की तुलना यहूदियों के नरसंहार से की थी। इजराइल के विदेश मंत्री इजराइल काट्स ने ब्राजील के राजदूत को यरूशलम में स्थित राष्ट्रीय होलोकॉस्ट संग्रहालय में बुलाकर सार्वजनिक रूप से नाराजगी जाहिर की थी। मामले से अवगत ब्राजील विदेश मंत्रालय के एक अधिकारी के अनुसार ब्राजील ने काट्स के कदम के जवाब में और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए अपने राजदूत को वापस बुलाया है कि उस घटनाक्रम के बाद से कोई सकारात्मक बदलाव नहीं हुआ है।

गाजा और मिस्र की सीमा से लगे अहम सामरिक गलियारे पर इजराइली सेना का नियंत्रण

तेल अवीव। गाजा की मिस्र से लगती सीमा पर स्थित अहम सामरिक गलियारे पर इजराइली सेना ने नियंत्रण स्थापित कर लिया है। इसकी पुष्टि बुधवार को इजराइली सेना की है। फिलाडेल्फी के नाम से जाना जाने वाला यह गलियारा पड़ोसी देश मिस्र की सीमा पर दक्षिणी गाजा शहर रफाह के पास है, जहां हाल ही में इजराइली सेनाएं लड़ रही हैं। मिस्र से गाजा में तस्करी करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सुरंगें इसी इलाके में स्थित हैं। हालांकि, सेना ने इस बारे में विस्तृत जानकारी नहीं दी है।

लाखों रुपयों की लागत से बनी पिच पर आग लगाने के कारण हुआ भारी नुकसान

दमोह। नगर के अति प्राचीन सरोवर बेलाताल में लाखों रूपयों की लागत से बनी पिच पर आग लगाने के कारण भारी नुकसान हो रहा है। पर्यावरण के साथ सौन्द्रर्य पर भी इसका असर देखा जा सकता है। ज्ञात हो की दमोह के तत्कालीन सांसद एवं भारत सरकार के केन्द्रीय राज्य मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने दमोह नगर के लिये करोडों रूपयों की सौगात दी थी जिसके कारण यहां पर आधुनिकता के साथ प्राकृतिकता को जोडकर एक पार्क, फूड प्लाजा, जिम, हस्तनिर्मित वस्तु विक्रय, ओपन थियेटर और सरोवर में संगीत पर चलने वाले फोहारों का निर्माण प्रारंभ कराया गया था।

मंडलायुक्त ने रवाना किया लोकतंत्र उत्सव वाहन

धर्मशाला। मंडलायुक्त कांगड़ा ए. शाइनामोल ने स्वीप के अन्तर्गत चल रहे मतदाता जागरूकता अभियान के तहत वीरवार को अपने कार्यालय परिसर से 'लोकतंत्र उत्सव वाहन' को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान भारत निर्वाचन आयोग के सचिव संतोष कुमार और उपायुक्त कांगड़ा हेमराज बैरवा भी मौजूद रहे।
मंडलायुक्त ने बताया कि आगामी एक जून को होने वाले चुनावों के लिए निर्वाचण आयोग द्वारा मतदाता जागरूकता के लिए व्यापक स्तर पर अभियान चलाए गए हैं, जिनमें विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से लोगों को मतदान के लिए जागरूक किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इसी कड़ी में आज यहां लोकतंत्र उत्सव वाहन को रवाना किया गया है। इस प्रचार वाहन के जरिए जिले में विभिन्न क्षेत्रों में मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक किया जाएगा। उन्होंने बताया कि यह जागरूकता वाहन पूरे जिले में घूमकर लोगों को 1 जून को भारी संख्या में मतदान करने का संदेश देगा।

कांग्रेस के मैनिफेस्टो में तुष्टीकरण और विशेष वर्ग को लाभ पहुंचाने की नीति: धामी

● मोदी ने देश के विकास के लिए एक-एक पल और क्षण समर्पित किया है

शिमला। एजेंसी

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कांग्रेस के मैनिफेस्टो को लेकर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के मैनिफेस्टो में तुष्टीकरण और एक वर्ग विशेष को लाभ पहुंचाने की नीति का उल्लेख किया गया। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री धामी गुरुवार को शिमला में बोल रहे थे। उत्तर, दक्षिण, पश्चिम, कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक, सभी जगहों पर लोगों ने पिछले 10 सालों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल को सकारात्मक रूप से देखा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने अपने पूरे कार्यकाल में देश के विकास के लिए एक-एक पल और क्षण समर्पित किया है, जिससे देश तेजी से प्रगति कर रहा है। भारतीय जनता पार्टी ने इस लोकसभा चुनाव को सकारात्मक मुद्दों पर लड़ने का प्रयास किया है और पिछले 10 वर्षों का रिपोर्ट कार्ड जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है। धामी ने कहा कि कांग्रेस के मैनिफेस्टो में तुष्टीकरण और एक वर्ग विशेष को लाभ पहुंचाने की नीति का उल्लेख किया गया था। एक सशक्त राजनीतिक दल होने के नाते हमारी जिम्मेदारी है कि देश में चल रहे तुष्टीकरण और कांग्रेस पार्टी के मनसूबों को जनता के समक्ष उजागर करें। उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में देश में इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास तेजी से हुआ है। एक्सप्रेसवे, वंदे भारत जैसी स्वदेशी ट्रेन, नए विश्वविद्यालय, आईआईटी, आईआईएम और हवाई अड्डों का निर्माण हुआ है। सोलर एनर्जी पर भी विशेष ध्यान दिया गया है।
धामी ने कहा कि गठबंधन और विपक्षी नेता चाहे वह राहुल गांधी हों या अखिलेश यादव, इनके प्रयास सत्ता प्राप्ति तक ही सीमित रहे हैं। ये नेता विशेष वर्ग के वोट बैंक को साधने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। उन्होंने बताया कि कर्नाटक में अन्य पिछड़ा वर्ग में मुस्लिम जातियों को शामिल कर आरक्षण देने का कार्य इसी का प्रमाण है। यह संविधान की भावना के विरुद्ध है, जिसमें धर्म के आधार पर आरक्षण की मनाही है। मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि कांग्रेस और उनके सहयोगी दल समय-समय पर ऐसे निर्णय लेते हैं, जो संविधान के विपरीत हैं। उन्होंने कर्नाटक, संयुक्त आंध्र और अन्य राज्यों में भी ऐसे ही निर्णय लिए हैं। राहुल गांधी जैसे नेताओं के लिए परीक्षा में बैठने की स्थिति होती है, जहां उनका परिणाम सदैव असफलता ही होता है। इस बार भी परिणाम वही आएगा जो पिछले 10 वर्षों से आता रहा है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के लोगों ने हमेशा प्रधानमंत्री मोदी को समर्थन दिया है। हिमाचल प्रदेश के लोग इस बार भी मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए समर्थन देंगे और प्रचंड बहुमत से चारों लोकसभा सीटों को जिताएंगे। इसके साथ ही छह विधानसभा क्षेत्रों के उपचुनाव में भी भाजपा बड़े अंतर से विजयी होगी।

बाइक से टक्कर मारने के बाद दो पक्षों के बीच वाद-विवाद

उज्जैन। गुरुवार सुबह कुष्ठ बस्ती में बच्ची को बाइक से टक्कर मारने के बाद दो पक्षों के बीच विवाद हो गया। दोनों पक्षों के लोग चाकू, लट्ठ लेकर एक दूसरे पर टूट पड़े जिसमें 8 से अधिक लोग घायल हो गये। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घायलों को जिला अस्पताल भिजवाया। अंतर सिंह पिता भागीरथ 35 वर्ष निवासी कुष्ठ बस्ती ने बताया कि उसकी डेढ़ वर्ष की बेटी शीतल घर के बाहर सड़क पर खेल रही थी तभी सामने से पंकज तेज गति से अपनी बाइक चलाकर लाया। उसे बाइक धीरे चलाने का इशारा किया, लेकिन पंकज ने उसकी बाइक से बेटी शीतल को टक्कर मार दी। इसी बात को लेकर पंकज से विवाद हुआ तो उसने अपने साथी मोहन खरे पुत्र काशीराम 40 वर्ष निवासी छोटी मायापुरी, पंकज पुत्र सुनील 18 वर्ष और चेतन पुत्र सुनील 19 वर्ष दोनों निवासी हीरामिल की चाल सहित अन्य लोगों को फोन कर बुला लिया। सभी लोगों ने मारपीट शुरू कर दी और घरों में भी तोडफोड़ की। वहीं जवाबी हमले में अंतर सिंह के साथी अजय प्रजापति पिता बाबूलाल 37 वर्ष निवासी शांति नगर, अंकित पिता चंदन सिंह 24 वर्ष, कन्हैयालाल पिता नरेश 32 वर्ष निवासी कुष्ठ बस्ती ने भी मारपीट की।

वित्त वर्ष 2026 तक राजस्व को 2.5 गुना बढ़ाकर 5,000 करोड़ रुपए करने का लक्ष्य

वित्त वर्ष 2024 -25 में, 2,000 करोड़ रुपए से अधिक का सकल राजस्व रिकॉर्ड

● यूनिलीवर के पूर्व एग्जीक्यूटिव आशीष राय को बनाया गया चीफ बिजनेस ऑफिसर

संवाददाता

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख इको-फ्रेंडली पेंट कंपनी और 24 अरब यूएस डॉलर वाले जेएसडब्ल्यू समूह का हिस्सा जेएसडब्ल्यू पेंट्स ने पिछले वित्तीय वर्ष में 3% से अधिक (लगभग 67 करोड़ रुपए) के एबिटा मार्जिन के साथ अपना पहला पूर्ण वर्ष परिचालन लाभ दर्ज किया। यह जेएसडब्ल्यू पेंट्स को सबसे कम अवधि में परिचालन लाभ दर्ज करने वाली पहली और सबसे युवा भारतीय पेंट्स कंपनी बनाता है। उद्योग में अपनी 10 गुना से अधिक विकास दर दर्ज करते हुए कंपनी का सकल राजस्व 2,000 करोड़ रुपए के लक्ष्य को पार कर चुका है। सकल राजस्व में वृद्धि को डेकोरेटिव पेंट और इंडस्ट्रियल कोटिंग्स दोनों व्यवसायों से समर्थन मिला है। मौजूदा विकास दर को ध्यान में रखते हुए जेएसडब्ल्यू पेंट्स अगले दो वर्षों के भीतर (यानी वित्त वर्ष 2026 तक) 5,000 करोड़ रुपए के लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रयासरत है। व्यवसाय में डेकोरेटिव पेंट्स सेगमेंट द्वारा महत्वपूर्ण बदलाव करके इसे मजबूती दी जाएगी। कंपनी ने आशीष रॉय को चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर-डेकोरेटिव नियुक्त किया है, जिन्हें यूनिलीवर जैसे वैश्विक संगठनों में डिस्ट्रीब्यूशन बिजनेस में दो दशकों से अधिक वर्षों का अनुभव है। आशीष जेएसडब्ल्यू पेंट्स में डेकोरेटिव पेंट्स बिजनेस में परिवर्तन और विकास का नेतृत्व करेंगे और लाभदायक टॉप लाइन डेवलपमेंट देंगे। जेएसडब्ल्यू पेंट्स के मैनेजिंग डायरेक्टर पार्थ जिंदल ने कहा,"जेएसडब्ल्यू पेंट्स के लिए सबसे कम समय में मुनाफा कमाने वाली सबसे युवा पेंट कंपनी बनना बड़ी उपलब्धि रहा है। अब हम नए अवसरों का लाभ उठाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, क्योंकि भारतीय उपभोक्ता उद्देश्यपूर्ण जीवन और पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों के प्रति अपनी प्राथमिकताएं विकसित कर रहे हैं। मुझे अपने मैन्युफैक्चरिंग और मार्केटिंग निवेश में विकास का नेतृत्व करने के लिए आशीष राय का स्वागत करते हुए खुशी हो रही है। जेएसडब्ल्यू पेंट्स 29 साल की औसत कामकाजी उम्र के साथ उद्योग में सबसे युवा, सबसे अधिक लैंगिक विविध और जोरदार टीम के साथ अपना बिजनेस आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।
जेएसडब्ल्यू पेंट्स के जॉइंट मैनेजिंग डायरेक्टर और सीईओ श्री सुंदरेसन एएस के अनुसार, हम एक युवा टीम हैं और ऐसे काम करने की इच्छा रखते हैं जो पहले कभी नहीं किए गए। हमें खुशी है कि हम जो बदलाव लाना चाहते हैं, उसे अच्छी प्रतिक्रिया मिली है, जिसने हमें तेज गति से तरक्की करने के लिए प्रोत्साहित किया।

- जेएसडब्ल्यू पेंट्स भारत की एकमात्र कंपनी है, जो भारतीय पेंट बाजार में अद्वितीय 'कोई भी रंग, एक कीमत' की पेशकश करती है।
- लग्जरी इंटीरियर इमल्शन 'हेलो' भारत का सर्वश्रेष्ठ पेंट है, क्योंकि यह अपने समकक्ष या तुलनात्मक पेंट्स से तुलना में अधिक खरा उतरा है।
- जेएसडब्ल्यू पेंट्स वॉटरप्रूफिंग रेंज आईब्लॉक घरों को वॉटरप्रूफ करने का सबसे अचूक तरीका है। कंपनी देश भर में लॉन्च किए गए एक नए विज्ञापन अभियान के साथ इसकी मार्केटिंग कर रही है।
- पानी आधारित इनेमल 'एक्वाग्लो' घर पर लकड़ी और धातु के लिए एकमात्र गैर-बदबूदार पेंट के रूप में उपभोक्ताओं को पसंद है।
- जेएसडब्ल्यू पेंट्स ने लग्जरी वुड फिनिश की ओपेरा रेंज लॉन्च की है, जो आयातित इटालियन वुड फिनिश को टक्कर देने के लिए भारत में निर्मित है।
- इंडस्ट्रियल कोटिंग में जेएसडब्ल्यू पेंट्स 'कॉइल कोटिंग्स' में अग्रणी है और सुरक्षात्मक, पाइप, पवन चक्की, फर्श और सामान्य औद्योगिक कोटिंग्स जैसे अन्य क्षेत्रों में अपनी पेशकश का विस्तार कर रही है।

लोककलाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए कार्यरत है संस्कार भारती : विजय

मेरठ। एजेंसी

संस्कार भारती के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विजय ने कहा कि लोककलाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए संस्कार भारती कार्य कर रही है। पुराने और नवोदित कलाकारों को देश-विदेश में मंच प्रदान कर रही है।
संस्कार भारती मेरठ प्रान्त की प्रबन्ध कार्यकारिणी की बैठक गुरुवार को प्रांत अध्यक्ष डॉ. वागीश दिनकर की अध्यक्षता में आइआइएमटी विश्वविद्यालय के होटल प्रबंधन संस्थान सभागार में आयोजित की गयी। बैठक में प्रांतीय कार्यकारिणी द्वारा गतवर्ष बैठक कार्यवाही का वाचन एवं पुष्टि की गई। वर्ष भर का लेखा-जोखा प्रस्तुत कर आगामी वर्ष में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों और संगठन विस्तार पर विचार किया गया।
बैठक में संस्कार भारती के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विजय ने लोककला के क्षेत्र में बढ़ते पाश्चात्य प्रभाव पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि लोककला क्षेत्र में बढ़ते पाश्चात्य प्रभाव को रोकने का प्रयास करते हुए भारतीय लोककलाओं को जीवित रखने केलिए प्रतिबद्ध रहते हुए संस्कार भारती को अग्रसर रहना है । कार्यक्रम का संचालन इन्द्र पाल शर्मा ने किया। बैठक में डॉ. सुधाकर आशावादी, डॉ. वागीश दिनकर ने भी अपने विचार रखे। बैठक में महानगर अध्यक्ष डॉ. मयंक अग्रवाल, डॉ. दिशा दिनेश, डॉ. शीलवर्द्धन, राकेश जैन आदि उपस्थित रहे ।

झूठे आरोपों से जनता को भ्रमित कर रहे सुक्खू : सुरेश कश्यप

शिमला। एजेंसी

हिमाचल प्रदेश में चुनावी लहर को भाजपा के पक्ष में देखकर मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू बौखलाहट में हैं। वे जिम्मेदार पद पर होने के बावजूद असंवेदनशील बयानबाजी कर रहे हैं, जो दशार्ता है कि वे अभी भी छात्र राजनीति की मानसिकता से ऊपर नहीं उठ पाए हैं। भारतीय जनता पार्टी लोकसभा सांसद एंव प्रत्याशी सुरेश कश्यप ने गुरूवार को सिरमौर जिला में जनसंपर्क कार्यक्रम के दौरान यह बात कही। उन्होंने कहा कि अपनी संभावित हार को भांपते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री ने बड़सर के विधायक पर निराधार आरोप लगाए हैं और अपनी जनसभाओं में बार-बार झूठी बातें करके जनता को भ्रमित करने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे उनकी बौखलाहट स्पष्ट दिखाई दे रही है। सुरेश कश्यप ने कहा कि मुख्यमंत्री सुक्खू ने अपनी जनसभाओं में कहा है कि बड़सर में 55 लाख रुपये बरामद हुए हैं।

राष्ट्रीय व प्रदेश स्तरीय सरकारों को चुनने के लिए लोगों ने किया मतदान

जोहानिसबर्ग। एजेंसी

दक्षिण अफ्रीका में राष्ट्रीय व प्रदेश स्तरीय सरकारों को चुनने के लिए बुधवार को लाखों लोगों ने मतदान किया। इस बीच यह अनुमान लगाया जा रहा है कि राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा के नेतृत्व वाली अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस (एएनसी) 30 साल पहले नेल्सन मंडेला के निर्वाचित होने के बाद पहली बार अपने बहुमत से दूर हो सकती है। मतदान स्थानीय समयानुसार सुबह सात बजे शुरू हुआ और रात नौ बजे तक चला। अंतिम परिणाम रविवार तक आने की उम्मीद है। हालांकि, राष्ट्रपति रामाफोसा (71) को पूरा विश्वास है कि उनकी पार्टी चुनाव में सत्ता में वापस आएगी। रामाफोसा ने वोट डालने के बाद मीडिया से कहा, दक्षिण अफ्रीका के लोग आज मतदान करके एएनसी को पूर्ण बहुमत देंगे। इसे लेकर मेरे मन और मस्तिष्क में कोई संदेह नहीं है। इन चुनाव में तीन दशक से प्रभुत्व रखने वाली एएनसी की प्रतिष्ठा दांव पर है। पार्टी ने दक्षिण अफ्रीका को रंगभेद के क्रूर श्वेत अल्पसंख्यक शासन से 1994 में बाहर निकालने में अहम भूमिका निभाई थी। सभी के लिए बेहतर जीवन के नारे के साथ रंगभेद को समाप्त करने का वादा करने वाली इस पार्टी के सामने असमानता, गरीबी और बेरोजगारी जैसी विकट समस्याएं हैं और इनसे परेशान अश्वेत बहुसंख्यकों ने पार्टी को सत्ता से बेदखल करने की चेतावनी दी है। चुनाव में अगर एएनसी को बहुमत नहीं मिला तो उसे सरकार बनाने और पार्टी के नेता एवं राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा को शीर्ष पद पर बनाए रखने के लिए अन्य दल के साथ गठबंधन करना पड़ सकता है। इससे पहले एएनसी को कभी ऐसी परिस्थिति का सामना नहीं करना पड़ा।
रामाफोसा ने कहा कि उनके नेतृत्व में एएनसी ने एक जबरदस्त प्रचार अभियान चलाया था और पार्टी कार्यकर्ताओं ने देश के कोने-कोने में जाकर लोगों से संपर्क किया तथा उन लोगों को भी मतदान के लिए प्रोत्साहित किया। जो मतदान करने के बारे में संशय में थे। उन्होंने कहा, हमें इस बात को लेकर प्रसन्नता हुई कि ज्यादातर संख्या में युवा लोग मतदान के लिए पंजीकरण करा रहे हैं।

लोकआस्था

उपराष्ट्रपति ने पत्नी संग बाबा नीब करौरी महाराज के दर्शन किए

धार्मिकता और आध्यात्मिकता के संगम का अनुभव हुआ है : धनखड़

नैनीताल। एजेंसी

● भारत की 5000 वर्ष की सांस्कृतिक विरासत दुनिया में बेमिसाल है और वैश्विक समस्याओं के समाधान में भारतीय संस्कृति एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है

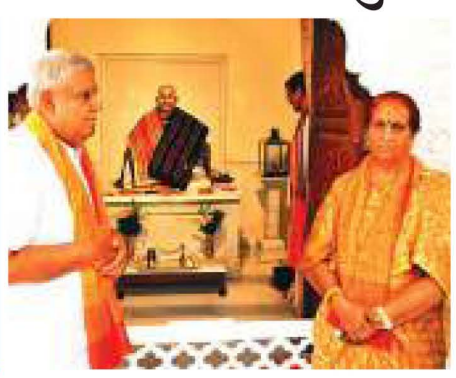

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ पत्नि डॉ. सुदेश धनखड़ संग गुरुवार को उत्तराखंड के नैनीताल जिले में स्थित कैंची धाम पहुंचे। उपराष्ट्रपति ने यहां पत्नी संग बाबा नीब करौरी महाराज के दर्शन किए और आश्रमवासियों के साथ समय व्यतीत किया। दर्शन के उपरांत उपराष्ट्रपति ने कहा कि इस पवित्र जगह पर आकर मन में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना में बढ़ोतरी हुई है। उन्होंने कहा कि इस जगह आकर उन्हें धार्मिकता, उदात्तता और आध्यात्मिकता के संगम का आभास हुआ है। ये वो जगह है जहां ऐसे महापुरुष हुए हैं जिनके द्वारा निर्धारित उच्चतम सिद्धांत सभी के लिए अनुकरणीय हैं। उपराष्ट्रपति ने भारत की उत्कृष्ट सांस्कृतिक विरासत की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि भारत की 5000 वर्ष की सांस्कृतिक विरासत दुनिया में बेमिसाल है और वैश्विक समस्याओं के समाधान में भारतीय संस्कृति एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ कड़ी सुरक्षा के बीच गुरुवार सुबह साढ़े 10 बजे के करीब कैंची धाम पहुंचे। उन्होंने बाबा नीब करौरी महाराज के दर्शन कर पूजा अर्चना की। स्थानीय युवतियों मीरा तिवारी और भावना तिवारी ने उपराष्ट्रपति व उनकी पत्नी सुदेश धनखड़ का तिलक चंदन लगाकर पारंपरिक तरीके से स्वागत किया। मंदिर समिति और प्रशासन की ओर से उपराष्ट्रपति को बाबा नीब करौरी की मूर्ति स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट की गई। जिलाधिकारी वंदना सिंह व एसएसपी पीएन मीणा ने भी यहां उपराष्ट्रपति का औपचारिक स्वागत किया। उपराष्ट्रपति ने इस दौरान बाबा नीब करौरी की सजीव सी लगने वाली आदमकद मूर्ति के सामने शीष झुकाकर उन्हें प्रणाम किया। उनका लाया हुआ कंबल बाबा को ओढ़ाया और फूल व अन्य प्रसाद चढ़ाया गया। उपराष्ट्रपति ने मंदिर में स्थित हनुमान जी एवं अन्य देवी-देवताओं के भी दर्शन किये ओरं पूजा अर्चना की। साथ ही बाबा नीब करौरी के तपस्या स्थल पर भी नमन किया। उन्होंने मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारियों के साथ भी बात की।

शिमला : हिमाचल की जनता फिर रोकेगी भाजपा का रथ: नरेश चौहान

शिमला। एजेंसी

एक जून को होने वाले लोकसभा चुनाव में प्रदेश की जनता कांग्रेस के पक्ष में मतदान कर भाजपा के रथ को रोकेगी। एक माह के चुनाव प्रचार के दौरान जिस तरह का समर्थन कांग्रेस को जनसभाओं में मिला है। उससे साफ पता चलता है कि चार जून को केंद्र और प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनेगी। यह बात शिमला में आयोजित एक पत्रकार वार्ता के दौरान कांग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष नरेश चौहान ने कही। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता का जिस तरह सहयोग और फीडबैक मिला है। उससे यह सुनिश्चित है कि सीएम सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व में कांग्रेस सरकार ने बेहतरीन कार्य किए हैं।
नरेश चौहान ने कहा कि चुनाव प्रचार के दौरान पार्टी के स्टार प्रचारकों और सीएम सुखविंदर सिंह सुक्खू और डिप्टी सीएम मुकेश अग्निहोत्री ने रिकॉर्डतोड़ चुनावी सभाएं की हैं। उन्होंने बताया कि स्टार प्रचारकों में राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने एक ,पार्टी राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी ने सात, वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने दो जनसभाएं कर जनता से वोट देने की अपील की तो वहीं पार्टी के वरिष्ठ नेता व स्टार प्रचारक सचिन पायलट, भूपेंद्र सिंह हुड्डा, भूपेश बघेल, शशिथरूर जैसे बड़े नेताओं ने चुनाव प्रचार किया।

एक नजर

ग्रीस फुटबॉल क्लब ओलंपियाकोस ने यूरोपा कॉन्फ्रेंस लीग का खिताब जीता

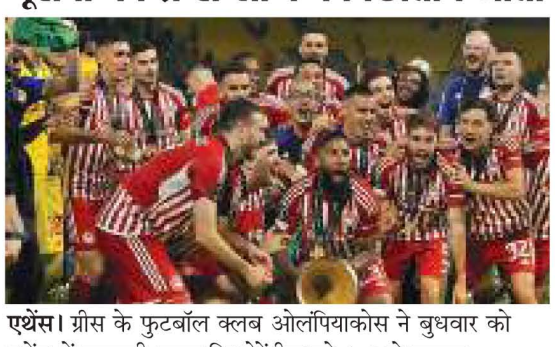

एथेंस। ग्रीस के फुटबॉल क्लब ओलंपियाकोस ने बुधवार को एथेंस में इतालवी क्लब फिओरेंटीना को 1-0 से हराकर 2023/24 यूईएफए यूरोपा कॉन्फ्रेंस लीग का खिताब जीत लिया है। ओलंपियाकोस के फॉरवर्ड अयूब एल काबी ने अतिरिक्त समय के 115वें मिनट में गोल करके एईके एरिना स्टेडियम में रेड्स ऑफ पिरियस को जीत दिलाई। यह जीत ओलंपियाकोस के इतिहास में पहली यूरोपीय ट्रॉफी और किसी भी ग्रीक फुटबॉल क्लब के लिए पहला यूरोपीय खिताब है। ग्रीक प्रधानमंत्री किरियाकोस मित्सोताकिस ने एक्स पर लिखा ओलंपियाकोस ने इतिहास रच दिया। क्लब और पूरे ग्रीक फुटबॉल के लिए एक शानदार शाम। जब रेफरी ने अंतिम सीटी बजाई, तो ग्रीक प्रशंसक स्टेडियम के अंदर और बाहर जश्न मनाने लगे। हजारों लोग नगरपालिका द्वारा स्थापित विशाल स्क्रीन पर फाइनल देखने के लिए पिरियस के केंद्रीय चौक में एकत्र हुए थे। दूसरी ओर, पिछले सीजन की उपविजेता टीम फिओरेंटीना 2023 में प्राग में खेले गए खिताबी मुकाबले में वेस्ट हैम के खिलाफ 2-1 से मिली हार से उबरने में विफल रही।

चेन्नई में आयोजित इंडियन ग्रां प्री में अब्दुल्ला अबूबकर, रोजी पॉलराज पर होंगी निगाहें

चेन्नई। एथलेटिक फेडरेशन ऑफ इंडिया (एएफआई) के तत्वावधान में तमिलनाडु एथलेटिक एसोसिएशन (टीएनएए) द्वारा आयोजित सीजन का दूसरा इंडियन ग्रां प्री यहां जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित किया जाएगा। मुख्य अतिथि विश्व एथलेटिक्स के उपाध्यक्ष आदिल सुमारिवाला प्रतियोगिता को हरी झंडी दिखाएंगे। देश भर के शीर्ष एथलीट, 200 मीटर, 400 मीटर, 400 मीटर बाधा दौड़, 1500 मीटर, 5000 मीटर, पोल वॉल्ट, ट्रिपल जंप, शॉट पुट और जेवलिन थ्रो में प्रतिस्पर्धा करेंगे। यह प्रतियोगिता इस साल के पेरिस ओलंपिक के लिए चयन ट्रायल में से एक है। कुल चार ग्रैंड प्रिक्स प्रतियोगिताएं हैं, और पहली अप्रैल में बेंगलुरु में हुई थी।

बांग्लादेश के खिलाफ अभ्यास मैच से शुरू होगा भारत का अभियान, ये है पूरा कार्यक्रम

नई दिल्ली। आईसीसी टी20 विश्व कप 2024 वेस्टइंडीज और अमेरिका में 1 जून से शुरू होगा, जिसके उद्घाटन मुकाबले में मेजबान अमेरिका का सामना टेक्सास के डलास में कनाडा से होगा। भारत का अभियान शनिवार 1 जून को न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में बांग्लादेश के खिलाफ अभ्यास मैच से शुरू होगा। ग्रुप ए में भारत का पहला मैच 5 जून को न्यूयॉर्क में आयरलैंड के खिलाफ होगा, जिसके बाद 9 जून को उसी नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में भारतीय टीम पाकिस्तान से भिड़ेगी।

एफसी गोवा ने ब्रैंडन फर्नांडिस को दी भावनात्मक विदाई

नई दिल्ली। एफसी गोवा ने स्थानीय खिलाड़ी और अपने सबसे लंबे समय तक खेलने वाले खिलाड़ियों में से एक ब्रैंडन फर्नांडिस को भावभीनी और भावनात्मक विदाई दी, जिनका अनुबंध इस गर्मियों में समाप्त होने वाला है। ब्रैंडन प्रतिष्ठित नारंगी शर्ट पहनने वाले सबसे सम्मानित सम्मानित फुटबॉलरों में से एक हैं। 2017 की गर्मियों में गोवा में शामिल होने के बाद, भारतीय अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी ने सभी प्रतियोगिताओं में क्लब के लिए 130 मैच खेले हैं, जो आज तक किसी भी खिलाड़ी के लिए दूसरा सबसे अधिक मैच है। 29 वर्षीय ब्रैंडन ने गोवा के लिए 31 गोल करने में सहायता की है जो एक रिकॉर्ड है। इसके अलावा उन्होंने गोवा के लिए 17 गोल भी किये हैं, जिसमें इस वर्ष के शुरू में चेन्नईयिन एफसी के खिलाफ किया गया गोल भी शामिल है, जिसने टीम को दो वर्ष के अंतराल के बाद इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) कप प्लेऑफ के सेमीफाइनल में पहुंचाया था।

इंडियन ओपन ऑफ सर्फिंग का पांचवां संस्करण आज से शुरू, देश के शीर्ष सर्फर्स मंगलूरू पहुंचे

मंगलूरू। एजेंसी

इंडियन ओपन ऑफ सर्फिंग (आईओएस) का 5वां संस्करण 31 मई को तटीय शहर मंगलूरू में शुरू होने जा रहा है। सर्फिंग स्वामी फाउंडेशन द्वारा आयोजित और सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वावधान में मंत्रा सर्फ क्लब द्वारा आयोजित, इस बहुप्रतीक्षित इवेंट में देश के शीर्ष रैंक वाले सर्फर्स तीन दिवसीय प्रतियोगिता में अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए प्रतिष्ठित ससिहिथलू समुद्र तट परप्रतिस्पर्धा करते नजर आएंगे। एक्शन में नजर आने वाले कुछ शीर्ष नामों में श्रीकांत डी, सूर्या पी, अजीश अली, शिवराज बाबू, सूर्या पी, कमली मूर्ति, इशिता मालविया, सृष्टि सेल्वम जैसे सर्फर्स शामिल हैं। आईओएस में पूर्वी और पश्चिमी तटों के सर्फरों के बीच तीव्र प्रतिद्वंद्विता होगी, जिसमें महत्वपूर्ण रैंकिंग अंक होंगे जो सीजन के

अंत में सर्फरों की रैंकिंग निर्धारित करेंगे।

इस आयोजन को न्यू मैंगलोर पोर्ट अथॉरिटी से बड़ा समर्थन मिला है, जो पहली बार शीर्षक प्रायोजक के रूप में साथ आया है। 'प्रेजेंटेड बाय' प्रायोजक कर्नाटक सरकार ने लगातार पांचवें वर्ष इस आयोजन को अपना समर्थन दिया है। तीन दिवसीय सर्फिंग प्रतियोगिता में चार श्रेणियों पुरुष ओपन, महिला ओपन, ग्रोम्स (अंडर-16 लड़के), और ग्रोम्स (अंडर-16 लड़कियां) में गहन प्रतिस्पर्धा होगी। पुरुष ओपन वर्ग में सभी की निगाहें हरीश एम, श्रीकांत डी और शिवराज बाबू पर होंगी, जिन्होंने हाल ही में

- अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए प्रतिष्ठित ससिहिथलू समुद्र तट परप्रतिस्पर्धा करते नजर आएंगे

आयोजित इंटरनेशनल सर्फिंग फेस्टिवल केरल 2024, कैलेंडर वर्ष की पहली राष्ट्रीय चैंपियनशिप में अच्छा प्रदर्शन किया था।

कमली मूर्ति, संध्या अरुण, इशिता मालविया और सृष्टि सेल्वम के हालिया प्रदर्शन को देखते हुए महिला ओपन वर्ग में कड़ी प्रतिस्पर्धा की उम्मीद है। अंडर-16 लड़कों की श्रेणी में, तैयिन अरुण, प्रह्लाद श्रीराम और सोम सेठी शीर्ष सम्मान के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे, जबकि स्थानीय सर्फर तनिष्का मेंडन और सानवी हेगड़े अंडर-16 लड़कियों की श्रेणी में कौशल और प्रतिभा के रोमांचक प्रदर्शन करने को तैयार हैं। अजीश अली, जिन्होंने अल साल्वाडोर में 2023 आईएसए विश्व सर्फिंग खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया था, पुरुष ओपन वर्ग में प्रतियोगियों के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा कर सकते हैं।

सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के वाईस प्रेज़िडेंट और मंत्रा सर्फ क्लब के पार्टनर, राममोहन परांजपे ने एक बयान में कहा हम इंडियन ओपन ऑफ सर्फिंग के पांचवें संस्करण के लिए तैयार हैं और मैं आपको तीन दिवसीय चुनौती में शीर्ष स्तरीय प्रतियोगिता और मनोरंजन का वादा कर सकता हूं। देश के शीर्ष सर्फर मंगलुरु पहुंचे हैं और खिताब जीतकर अपनी प्रतिभा और कौशल दिखाने के लिए कृतसंकल्प हैं। इसके अतिरिक्त, शहर के हालिया मौसम ने प्रतिस्पर्धा में जान डाल दी है, जिससे लहरें एक ही समय में चुनौतीपूर्ण और सर्फिंग के लिए अनुकूल दोनों हो गई हैं। मैं सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देता हूं।',

सर्फिंग खेल के लिए वैश्विक शासी निकाय, इंटरनेशनल सर्फिंग फेडरेशन द्वारा मान्यता प्राप्त प्रतियोगिता, भारतीय सर्फर्स के लिए अपने कौशल को निखारने और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के लिए तैयारी करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, साथ ही ओलंपिक खेल के रूप में सर्फिंग को शामिल करने से एवं विश्व स्तर पर खेल की पहचान को और बढ़ावा मिलेगा। मार्च में वर्कला के खूबसूरत चट्टानी समुद्र तट पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सर्फिंग महोत्सव केरल 2024 के बाद, इंडियन ओपन ऑफ सर्फिंग 2024 कैलेंडर वर्ष की राष्ट्रीय चैम्पियनशिप श्रृंखला का दूसरा पड़ाव होगा।

कैरोलिना मारिन से हारीं पीवी सिंधु निशिमोटो ने प्रणय को किया बाहर

सिंगापुर। एजेंसी

दो बार की ओलंपिक पदक विजेता शटलर पीवी सिंधु और एचएस प्रणय का गुरुवार को सिंगापुर ओपन में सफर समाप्त हो गया। सिंधु को जहां स्पेन की कैरोलिना मारिन ने शिकस्त दी, वहीं, प्रणय को जापान के केंटा निशिमोटो ने हराया। सिंधु ने महिला एकल प्री-क्वार्टर फाइनल में रोमांचक मुकाबले में 18-15 की बढ़त गंवा दी और चिर परिचित प्रतिद्वंद्वी कैरोलिना मारिन से तीन गेम तक चले मैच में हार गईं। पिछले सप्ताह थाईलैंड ओपन में उपविजेता रहने के बाद, इस शीर्ष भारतीय शटलर ने रियो ओलंपिक फाइनल की अपनी प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ पहला गेम जीता, लेकिन स्पेनिश खिलाड़ी ने वापसी करते हुए एक घंटे, आठ मिनट तक चले संघर्ष में 21-13, 11-21, 20-22 से जीत हासिल

की। डेनमार्क ओपन सेमीफाइनल में हुई तीखी टक्कर के बाद सात महीनों में पहली बार एक-दूसरे का सामना करते हुए, दो बार की ओलंपिक पदक विजेता भारतीय ने लगातार पांच अंक हासिल करते हुए पहला गेम अपने नाम किया।

लेकिन स्पेन की विश्व नंबर 3 खिलाड़ी ने दूसरे गेम में जोरदार वापसी की, जिसमें उन्होंने लगातार छह अंक जीते और 17-7 की बढ़त हासिल की, फिर खेल को बराबरी पर ला दिया। सिंधु ने निर्णायक गेम में बढ़त हासिल की और पूरे गेम में अपनी बढ़त बनाए रखी, लेकिन मारिन ने शानदार वापसी करते हुए भारतीय खिलाड़ी के खिलाफ अपने 17वें मैच में 12वीं जीत दर्ज की। वहीं, पुरुष एकल में भारतीय शटलर एचएस प्रणय को,जापान के केंटा निशिमोटो ने तीन सेटों तक चले मुकाबले में 21-13, 14-21, 21-15 से हराया। यह मैच 1 घंटा 18 मिनट तक चला।

युवा प्रतिभाओं को बढ़ावा देने की आधारशिला है बंगाल प्रो टी 20 लीग : आकाशदीप

कोलकाता। एजेंसी

बंगाल प्रो टी 20 लीग का उद्घाटन संस्करण 11 जून से कोलकाता के ईडेन गार्डेन में शुरू हो रहा है, जो न सिर्फ प्रशंसकों के मनोरंजन का साधन है बल्कि युवा प्रतिभाओं को उभारने का भी मजबूत प्लेटफार्म है। लीग में हिस्सा ले रही फ्रेंजाइजी सिलीगुड़ी स्ट्राइकर्स के तेज गेंदबाज आकाशदीप ने इस टूर्नामेंट की सराहना करते हुए कहा मैं सिलीगुड़ी के लिए खेलने को लेकर बहुत ज्यादा उत्साहित हूं। सिलीगुड़ी कोलकाता से काफी दूरी पर स्थित है और बंगाल प्रो टी 20 लीग में इसका प्रतिनिधित्व करना

मेरे लिए गर्व की बात है। यह लीग बंगाल की युवा प्रतिभाओं के लिए तो एक मजबूत प्लेटफार्म है ही साथ ही सिलीगुड़ी के खिलाड़ियों के भविष्य की भी मजबूत नींव है। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर टीम का हिस्सा रहे 27 वर्षीय आकाशदीप ने हाल ही में भारतीय टेस्ट टीम में भी पदार्पण किया है। आकाशदीप ने गुरुवार को फ्रेंचाइजी द्वारा जारी एक आधिकारिक बयान में कहा, मैं पिछले दो महीने से आईपीएल खेल रहा हूं और पूरी कोशिश करूंगा कि इस अनुभव का फायदा अपनी टीम को पहुंचा पाऊं और हम एक कड़े प्रतिस्पर्धी बन कर उभरें। मैं इस साल पूरी तरह से अपने खेल का मजा ले रहा हूं और इस लीग के लिए पूरी तरह से आश्वस्त हूं। अपने अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने कहा, सबसे पहले मुझे दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ भारत ए के लिए चुना गया, तब मैं बंगाल के लिए रणजी ट्रॉफी में खेल रहा था, तभी मुझे अपने भारत कॉल-अप के बारे में पता चला। मैं वह खिलाड़ी नहीं हूं जो टीम इंडिया में चुने जाने से खुश हो जाऊं, बल्कि मैं अपने देश के लिए कम से कम 50 से 100 टेस्ट खेलना चाहता हूं।" तेज गेंदबाज ने आगे कहा, "ट्रॉफी जीतना तभी संभव है जब आपका फोकस ट्रॉफी पर नहीं, बल्कि सारे मैच जीतने पर हो और इसके लिए मैं लगातार सिलीगुड़ी स्ट्राइकर्स प्रबंधन, कोचों और खिलाड़ियों से बातचीत करके रणनीतियां तैयार कर रहा हूं।

पुरुष हॉकी टीम ने जीत के साथ किया यूरोप दौरे का समापन

ब्रेडा। एजेंसी

भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम ने जर्मनी को शूटआउट में हराकर, जबकि महिला टीम ने ओरांजे रूड के खिलाफ ड्रॉ खेलकर यूरोप दौरे का समापन किया। भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम ने मुकेश टोप्पो (33') द्वारा निर्धारित समय में गोल करने के बाद शूटआउट में 3-1 (1-1) से जीत हासिल की। वहीं, ओरांजे रूड के साथ 2-2 से ड्रॉ हुए मैच में भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम के लिए, संजना होरो (18') और अनीशा साहू (58') ने गोल किया। भारत और

जर्मनी दोनों टीमों ने पहले हाफ में कोई गोल नहीं किया। दूसरे हाफ के तीसरे मिनट में मुकेश टोप्पो (33') ने पेनल्टी कॉर्नर के जरिये गोल कर भारत को 1-0 की बढ़त दिला दी। हालांकि चौथे क्वार्टर के चौथे मिनट में जर्मनी ने गोल कर 1-1 की बराबरी हासिल कर ली, जिससे मैच में रोमांच बढ़ गया। दोनों टीमों द्वारा बढ़त लेने के प्रयासों के बावजूद, नियमित समय के अंत में स्कोर 1-1 की बराबरी पर रहा, जिसके कारण पेनल्टी शूटआउट की नौबत आ गई। भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम ने शूटआउट 3-1 से जीता, जिसमें गुरजोत सिंह, दिलराज सिंह और मनमीत सिंह ने भारत के लिए गोल किए। इसके साथ ही भारत ने जीत के साथ अपने यूरोप दौरे का समापन किया।

फ्रेंच ओपन : स्विएटेक ने रोमांचक मैच में ओसाका को हराया, अल्कराज भी आगे बढ़े

पेरिस। गत चैंपियन इगा स्विएटेक ने बुधवार को एक मैच प्वाइंट बचाते हुए दूसरे दौर के रोमांचक मैच में नाओमी ओसाका को शिकस्त दी। यह रोमांचक मुकाबला लगभग तीन घंटे तक चला, जिसके बाद 22 वर्षीय पोलिश खिलाड़ी स्विएटेक ने वापसी करते हुए 7-6 (7-1), 1-6, 7-5 से जीत हासिल की। ओसाका ने बेसलाइन पर कई शक्तिशाली हमले किए, जिससे वह टूर्नामेंट में सबसे बड़ा उलटफेर करने और क्ले कोर्ट पर शीर्ष 10 खिलाड़ियों पर अपनी पहली जीत दर्ज करने के करीब पहुंच गईं, हालांकि, शीर्ष वरीयता प्राप्त स्विएटेक ने अच्छी चुनौती देते हुए वापसी की और जीत दर्ज की। मैच के बाद स्विएटेक ने कहा यह बहुत ही जोरदार मुकाबला था, दूसरे दौर के मैच के लिए मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक जोरदार। हमने कुछ बेहतरीन टेनिस खेला। पूर्व विश्व नंबर 1 ओसाका अपनी बेटी के जन्म के बाद चार महीने पहले ही खेल में लौटी हैं और पहले क्ले पर संघर्ष करती रही हैं, जबकि वर्तमान विश्व नंबर 1 स्विएटेक क्ले विशेषज्ञ हैं, जिन्होंने रोलांड गैरोस में अपने चार ग्रैंड स्लैम खिताबों में से तीन जीते हैं।

वाणिज्य

वैश्विक दबाव में लुढ़का शेयर बाजार

नई दिल्ली। एजेंसी

वैश्विक दबाव के कारण घरेलू शेयर बाजार में लगातार पांचवें कारोबारी दिन गिरावट का माहौल बना हुआ नजर आ रहा है। कारोबार की शुरूआत भी कमजोरी के साथ हुई थी। बाजार खुलने के बाद शेयर बाजार में खरीदारी के सपोर्ट से मामूली तेजी का रुख भी बना। लेकिन इसके बाद बिकवाली का दबाव बढ़ जाने के कारण सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक लगातार गिरते चले गए। पहले एक घंटे का कारोबार होने के बाद सेंसेक्स 0.59 प्रतिशत और निफ्टी 0.62 प्रतिशत की कमजोरी के साथ कारोबार कर रहे थे। शुरूआती एक घंटे का कारोबार होने के बाद स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से एक्सिस बैंक, कोटक महिंद्रा, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, इंडसइंड बैंक और आईसीआईसीआई बैंक के शेयर 0.96 प्रतिशत से लेकर 0.52 प्रतिशत की मजबूती के साथ कारोबार कर रहे थे। दूसरी

ओर टाटा स्टील, जेएसडब्ल्यू स्टील, नेस्ले, टाइटन कंपनी और पावर ग्रिड कॉरपोरेशन के शेयर 4.16 प्रतिशत से लेकर 2.20 प्रतिशत की गिरावट के साथ कारोबार करते नजर आ रहे थे।

अभी तक के कारोबार में स्टॉक मार्केट में 2,114 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हो रही थी। इनमें से 716 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में कारोबार कर रहे थे, जबकि 1,398 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में कारोबार कर रहे थे। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 7 शेयर लिवाली के सपोर्ट से हरे निशान में बने हुए थे। दूसरी ओर 23 शेयर बिकवाली के दबाव में लाल निशान में कारोबार कर रहे थे। जबकि निफ्टी में शामिल शेयरों में से 8 शेयर हरे निशान में और 42 शेयर लाल निशान में कारोबार करते नजर आ रहे थे।

बीएसई का सेंसेक्स आज 137.02 अंक की कमजोरी के साथ 74,365.88 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरूआत होते ही खरीदारी का सपोर्ट मिलने के कारण ये सूचकांक उछल कर 74,493.55 अंक तक पहुंच गया। लेकिन इसके बाद बाजार में चौतरफा बिकवाली शुरू हो गई, जिसके कारण ये सूचकांक लगातार गिरता चला गया।

ग्लोबल मार्केट से लगातार दूसरे दिन कमजोरी के संकेत

नई दिल्ली। एजेंसी

ग्लोबल मार्केट से लगातार दूसरे दिन कमजोरी के संकेत मिल रहे हैं। अमेरिकी बाजार में पिछले सत्र के दौरान निराशा का माहौल बना रहा, जिसके कारण वॉल स्ट्रीट के सूचकांक गिरावट के साथ बंद हुए। डाउ जॉन्स फ्यूचर्स भी फिलहाल कमजोरी के साथ कारोबार करता नजर आ रहा है। अमेरिकी बाजार की तरह ही यूरोपीय बाजार में भी पिछले सत्र के दौरान बड़ी गिरावट दर्ज की गई। एशियाई बाजारों में भी चौतरफा बिकवाली का दबाव बना हुआ नजर आ रहा है। अमेरिका में ब्याज दरों में कटौती की बात को लेकर बनी अनिश्चितता की वजह से पिछले सत्र के दौरान अमेरिकी बाजार लगातार दबाव में कारोबार करते रहे। डाउ जॉन्स 411 अंक की गिरावट के साथ बंद हुआ। इसी तरह एसएंडपी 500 इंडेक्स ने 0.74 प्रतिशत टूट कर 5,266.95

अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया।

इसके अलावा नैस्डेक 0.58 प्रतिशत गिर कर 16,920.58 अंक के स्तर पर बंद हुआ। डाउ जॉन्स फ्यूचर्स फिलहाल 282.44 अंक यानी 0.73 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 38,158.11 अंक के स्तर पर कारोबार करता नजर आ रहा है। अमेरिकी बाजार की तरह ही यूरोपीय बाजार में भी पिछले सत्र में लगातार दबाव बना रहा, जिसके कारण यहां के तीनों प्रमुख सूचकांक गिरावट के साथ बंद हुए। एफटीएसई इंडेक्स 0.87 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 8,183.07 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

आरबीआई का 2024-25 में आर्थिक वृद्धि दर 7 फीसदी रहने का अनुमान

मुंबई। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने चालू वित्त वर्ष 2024-25 में भारतीय अर्थव्यवस्था सात फीसदी की दर से बढ़ने का अनुमान जताया है। वित्त वर्ष 2023-24 में अर्थव्यवस्था ने लगातार चुनौतियों के बावजूद जुझारुपन दिखाया है। रिजर्व बैंक ने अपनी इस रिपोर्ट में अप्रैल 2023 से मार्च 2024 की अवधि के लिए केंद्रीय बैंक के कामकाज को शामिल किया गया है।रिजर्व बैंक ने गुरुवार को वित्त वर्ष 2023-24 के लिए जारी अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा कि चालू वित्त वर्ष 2024-25 के लिए वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 7.0 फीसदी में जोखिम दोनों तरफ समान रूप से संतुलित होंगे। ताजा रिपोर्ट में कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था एक अप्रैल, 2023 से 31 मार्च, 2024 को समाप्त वित्त 2023-24 में मजबूत गति से विस्तार किया, जिससे वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर बढ़कर 7.6 फीसदी हो गई, जो वित्त वर्ष 2022-23 में 7.0 फीसदी थी। ये लगातार तीसरे वित्त वर्ष में सात फीसदी या उससे अधिक रही है।

खान मंत्रालय का केंद्र व राज्य के बीच सामूहिक पहल पर जोर

नई दिल्ली। एजेंसी

केंद्रीय खान मंत्रालय ने बेंगलरु में ग्रेनाइट और संगमरमर खनन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। खान सचिव वीएल कांता राव ने इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए लघु खनिज क्षेत्र में सुधार के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के बीच सामूहिक पहल पर जोर दिया। खान मंत्रालय ने गुरुवार को एक बयान में बताया कि कर्नाटक के बेंगलुरु में ग्रेनाइट और संगमरमर खनन पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस दौरान खान सचिव ने खनन क्षेत्र में केंद्र सरकार द्वारा की गई विभिन्न पहलों और सुधारों को रेखांकित किया। उन्होंने राज्य सरकारों से लघु खनिज क्षेत्र में भी ऐसे सुधार करने का अनुरोध किया। खान सचिव ने कहा कि केंद्र ने नेशनल जियो-डेटा रिपोजिटरी मंच के जरिए व्यापक डेटा और अन्वेषण संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई है, जिससे सभी हितधारकों के लिए डेटा तक पहुंच आसान हो गई है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय एजेंसियों से एकत्रित आंकड़ों पर आधारित इस पहल का उद्देश्य खनन क्षेत्र में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाना है।

संक्षिप्त समाचार

'भाजपा सरकार भीषण गर्मी में पेयजल एवं बिजली उपलब्ध कराने में विफल'

चमकता राजस्थान। जयपुर। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के महासचिव एवं प्रवक्ता स्वर्णिम चतुर्वेदी ने भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष एवं राजस्थान सरकार के विधि एवं संसदीय कार्य मंत्री द्वारा प्रेस वार्ता में दिए गए वक्तव्य को भारतीय जनता पार्टी की सरकार द्वारा प्रदेशवासियों को भीषण गर्मी में पेयजल एवं बिजली उपलब्ध करवाने की विफलता को छुपाने की नाकाम कोशिश बताया है।

स्वर्णिम चतुर्वेदी ने कहा कि राजस्थान की पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के शासन में प्रदेशवासियों को बिजली एवं पेयजल की निर्बाध सप्लाई होती थी तथा प्रदेश के 80 प्रतिशत उपभोक्ताओं के बिजली बिल राजस्थान की योजना के परिणामस्वरूप शून्य आते थे। उन्होंने कहा कि भाजपा की प्रदेश सरकार ने समय रहते भीषण गर्मी में पेयजल एवं बिजली की आवशयकता का आंकलन नहीं किया तथा बिजली प्रदेशवासियों को मिलती रहे, इसकी कोई कार्ययोजना नहीं बनायी । इस से पूरा प्रदेश बिजली संकट का सामना कर रहा है एवं प्रदेशवासियों को भीषण गर्मी में भाजपा सरकार की अघोषित बिजली कटौती से परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि भीषण गर्मी में जल स्त्रोतों में पानी कम होने पर आपदा प्रबन्धन के तहत सरकार द्वारा अन्य जिलों से पानी टैंकर द्वारा आपदाग्रस्त क्षेत्रों के निवासियों को सप्लाई किया जाता है किन्तु भाजपा की सरकार ने इस हेतु कोई निर्णय समय पर नहीं लिया जिस कारण तपती गर्मी में प्रदेश की ग्रामीण जनता मीलों दूर पैदल जाकर पानी लाने को मजबूर है तथा शहरवासी महंगे दामों पर निजी टैंकरों से पानी खरीद रहे है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश सरकार प्रदेशवासियों को पेयजल एवं बिजली उपलब्ध कराने में विफल रही है ।

उपमुख्यमंत्री से किसानों के प्रतिनिधि मण्डल ने मुलाकात कर की मुआवजे की मांग

चमकता राजस्थान। जयपुर। जयपुर, 30 मई। उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचन्द बैरवा से गुरूवार को फागी एवं दूदु से आए सैकडों किसानों के प्रतिनिधि मण्डल ने मुलाकात की। किसानों ने उपमुख्यमंत्री को फसलों से हुए नुकसान से अवगत कराया। किसानो ने उपमुख्यमंत्री से फसलों को हुए नुकसान के लिए प्रधानमंत्री कृषि योजना के तहत मुआवजा दिलवाने की मांग की। उप मुख्यमंत्री ने कहा की राजस्थान अन्नदाताओं का प्रदेश है। प्रदेश सरकार किसानों के प्रति संवेदनशील है। उन्होने किसानों को उनकी हर संभव मदद का आश्वासन दिया।

कांग्रेस और आम आदमी पार्टी की नूराकुश्ती देखकर पंजाब की जनता में आक्रोशः रवि नैय्यर

चमकता राजस्थान

जयपुर। लोक सभा चुनाव प्रचार के अंतिम दिन आज गुरदासपुर (पंजाब) के डेरा बाबा नानक में आयोजित विशाल रैली एवं जनसभा को संबोधित करते हुए भाजपा प्रत्याशी दिनेश सिंह बब्बू और पिछले दस दिनों से प्रचार की कमान संभाल रहे राजस्थान के भाजपा नेता रवि नैय्यर ने कहा कि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी की नूराकुश्ती देखकर पंजाब की जनता में बहुत आक्रोश है। पंजाब की जनता यह देखकर हैरान है कि दिल्ली में दोनों पार्टियां एक दूसरे के कंधे पर बैठकर चुनाव लड़ रही हैं और पंजाब में एक दूसरे के कपड़े फाड़ने का नाटक कर रही हैं। असलियत में एक ही थाली की चट्टे बट्टे दोनों पार्टियां पंजाब की जनता को मूर्ख बनाने का काम कर रही हैं लेकिन जनता इनकी हकीकत जान चुकी है इसलिए चुनाव में सबक सिखाने को तैयार है।

रवि नैय्यर ने कहा कि महिला सम्मान और भ्रटाचार के मुद्दों पर दोनों पार्टियों की असलियत जनता के सामने है। भ्रष्टाचार की जननी रही कांग्रेस पार्टी ने वर्षों तक पंजाब और देश को लुटा है लेकिन आम आदमी पार्टी ने तो भ्रष्टाचार में कांग्रेस पार्टी के रिकॉर्ड भी तोड़ दिए हैं। भ्रष्टाचार पर इनका दोहरा चरित्र ऐसा है कि एक आरोप लगने पर मान सरकार के मंत्री को पार्टी से निकाल दिया, दिल्ली सरकार के मंत्री सत्येंद्र जैन और मनीष सिसोदिया का इस्तीफा ले लिया लेकिन दिल्ली शराब घोटाले में जेल जाने के बावजूद अरविंद केजरीवाल ने इस्तीफा नहीं दिया बल्कि पद से चिपके हुए हैं।

पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि महिलाओं के मुद्दे पर बार बार प्रेस कॉन्फ्रेंस करके दुसरे नेताओं पर आरोप लगाने वाले अरविंद केजरीवाल अपनी ही पार्टी की सांसद स्वाति मालीवाल से मारपीट के मामले में कुछ बोलने को तैयार नहीं हैं। हैरानी तो तब होती है जब सीएम आवास पर उनकी उपस्थिति में उन्हीं का पीए स्वाति मालीवाल के साथ मारपीट करता है अभ्रदता करता है और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल अपनी महिला सांसद को न्याय दिलवाने के बजाय घटना के आरोपी बिभव कुमार को अपने संरक्षण में लखनऊ से अमृतसर और मुंबई तक अपने साथ लेकर घूमते रहते हैं। महिला उत्पीडन के मामले में आम आदमी पार्टी का पुराना इतिहास रहा है, आपको ध्यान होगा जब एक महिला पत्रकार को पंजाब की मान सरकार ने झूठी एफआईआर लगाकर पुलिस कस्टडी में प्रताड़ित करने का घृणित काम किया था। लेकिन बाद में हाईकोर्ट ने मान सरकार को झटका देते हुए एफआईआर को गैर कानूनी बताया एवं रद्द करने का आदेश दिया और उस महिला पत्रकार को इनके जुल्मों से आजाद करवाया। हैरान करने वाली बात यह भी है कि ₹लड़की हूं लड़ सकती हूं₹ का नारा लगाने वाली कांग्रेस की नेता प्रियंका वाड्रा ने भी इस मामले में बिल्कुल चुप्पी साध रखी है। रैली एवं जनसभा के दौरान पूर्व चेयरमैन रवि करन काहलो, एडवोकेट परमजीत सिंह बेदी, निर्मल रता सहित पार्टी के सभी वरिष्ठ नेता, कार्यकर्ता उपस्थित रहे।*

पिछले दस दिनों से पंजाब में प्रवास कर रहे रवि नैय्यर ने श्री गंगानगर से लोकसभा चुनाव के लिए पंजाब पहुंचे राकेश वधवा, अभि वधवा, बृजेश महाजन के साथ मनसूर और सहजादा चुनाव कार्यालय में जम्मू कश्मीर के पूर्व मंत्री श्याम चौधरी, अमन भट्टा, सरपंच इंद्रजीत सिंह, राजीव चांडक, परमजीत दुबे, पूर्व सरपंच जसवंत सिंह, दिलीप सिंह की उपस्थिति में बूथ कार्यकर्ताओं की मीटिंग में मतदान दिवस की तैयारियों पर चर्चा करते हुए कहा कि पंजाब की जनता के सामने कांग्रेस और आम आदमी पार्टी की पार्टियों की पोल खुल चुकी है और जनता इस चुनाव में इन दोनों पार्टियों को सबक सिखाने के लिए तैयार है। अपने इतिहास में सबसे कम सीटों पर चुनाव लडने वाली कांग्रेस पार्टी की हालत यह है कि कई राज्यों में तो वह जूनियर पार्टनर के रूप में लड़ रही है। इस बार कांग्रेस पार्टी को 40 सीटें भी मिलने वाली नहीं है। इसी तरह देश के सामने पूरी तरह से एक्सपोज हो चुकी आम आदमी पार्टी को तो चार सीटें भी नहीं मिलने वाली हैं। देश की जनता एक बार फिर भाजपा को अपना पूरा आशिर्वाद देकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में तीसरी बार 400 से ज्यादा सीटों के साथ केंद्र में एनडीए की सरकार बनवाने जा रही है।

आईपीएल 2024: जियोसिनेमा ने 62 करोड़ दर्शक, 2,600 करोड़ व्यूज और 35,000 करोड़ मिनट वॉच-टाइम से बनाया नया रिकॉर्ड

चमकता राजस्थान

जयपुर। मुंबई, 30 मई 2024: जियोसिनेमा ने टाटा आईपीएल 2024 के दौरान शानदार प्रदर्शन करते हुए 2,600 करोड़ व्यूज और 35,000 करोड़ मिनट वॉच-टाइम के साथ नया रिकॉर्ड बनाया है। आईपीएल 2023 की तुलना में 53 फीसदी की वृद्धि दर्ज करते हुए इस साल जियोसिनेमा की पहुंच 38 प्रतिशत बढ़ी और 62 करोड़ से अधिक दर्शकों तक पहुंची।

कनेक्टेड टीवी दर्शकों में भी भारी वृद्धि हुई, जहां 12 भाषाओं में फीड, 4के व्यूइंग, मल्टी-कैम व्यू और एआर, वीआर, 360-डिग्री व्यूइंग जैसे फीचर्स ने दर्शकों को स्टेडियम जैसा अनुभव प्रदान किया। औसत व्यूइंग टाइम भी 60 मिनट से बढ़कर 75 मिनट हो गया।

टाटा आईपीएल 2024 के पहले दिन, जियोसिनेमा ने 11.3 करोड़ दर्शकों और 59 करोड़ वीडियो व्यूज दर्ज किए, जो पिछले वर्ष की तुलना में 51 फीसदी अधिक थे। वॉच-टाइम 660 करोड़ मिनट तक पहुंच गया। इस सीजन में जियोसिनेमा ने 28 प्रायोजक और 1400 से अधिक विज्ञापनदाता जुटाए।

वायकॉम18 के प्रवक्ता ने बताया कि हम टाटा आईपीएल 2024 का समापन स्पोर्ट्स कंजम्पशन के तरीके को फिर से परिभाषित करने के वादे के साथ कर रहे हैं। हम साल-दर-साल जो वृद्धि देख रहे हैं, वह हमें आश्वस्त करती है कि हमारी व्यूअर सेंट्रिक प्रेजेंटेशन लोगों को

पसंद आ रही है और उसकी सराहना की जा रही है। दर्शक जियोसिनेमा डाउनलोड करके भी अपने पसंदीदा खेल देखना जारी रख सकते हैं और जियोसिनेमा व स्पोर्ट्स18 के सोशल मीडिया चैनलों पर भी नवीनतम अपडेट ले सकते हैं।

राष्ट्र सेविका समिति का पथसंचलन

चमकता राजस्थान

जयपुर। राष्ट्र सेविका समिति वायव्य क्षेत्र प्रबोध वर्ग का पथ संचलन गुरुवार को आगरा रोड के अग्रसेन मार्ग स्थित अग्रवाल पीजी कॉलेज से निकला। देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जन्म शताब्दी वर्ष की पूर्व संध्या पर आयोजित संचलन में 260 युवतियों और किशोरियों ने भाग लिया। संगठन गढ़े चलो सुपंथ पर बढ़े चलो गीत की स्वर लहरियों के बीच कदमताल करती युवतियां हाथ में ध्वज थामे सधे कदमों से पंथ संचलन करती निकली तो हर किसी का गर्व से सीना चौड़ा हो गया। अग्रवाल कॉलेज, घाटगेट, रामगंज बाजार, बड़ी चौपड़, जौहरी बाजार, सांगानेरी गेट होते हुए पथ संचलन अग्रवाल कॉलेज पहुंचा। मार्ग में समाज के अलग-अलग समूहों ने पुष्प वर्षा कर संचलन का स्वागत किया।

अग्रवाल कॉलेज में राष्ट्र सेविका समिति की अखिल भारतीय सह शारीरिक प्रमुख वसुधा सुमन ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि युवतियों पर समाज की दोहरी जिम्मेदारी है। उसे दोनों जिम्मेदारियों को कर्तव्य और निष्ठा से पालन करना होगा। इसी में उनका गौरव है। युवतियों और किशोरियों को मातृत्व के गुणों का विकास करते हुए राष्ट्र निर्माण में भी जुटना है। ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए गुणों को विकसित करते हुए अपने व्यक्तित्व का विकास ही सच्चे अर्थों में महिला सशक्तिकरण है। इस अवसर पर क्षेत्र कार्यवाहिका प्रमिला शर्मा, वर्गाधिकारी नर्मदा इंदौरिया, प्रांत कार्यवाहिका संगीता जांगिड़ उपस्थित रही।

● प्रशिक्षण वर्ग का समापन आज

उल्लेखनीय है कि राष्ट्र सेविका समिति का जयपुर प्रांत का 15 दिवसीय वर्ग जवाहर नगर स्थित सरस्वती बालिका विद्यालय में आयोजित किया जा रहा है। इसमें युवतियों और किशोरियों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए सुबह से शाम तक अनेक गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। वर्ग का समापन शुक्रवार सुबह होगा।

पूर्व सीएम गहलोत की गलत नीतियों का परिणाम भुगत रही प्रदेश की जनता, "बोया पेड़ बबूल का तो आम कहां से होय": अरूण चतुर्वेदी

सामाजिक सुरक्षा पेंशन को लेकर कांग्रेसी नेताओं ने फैलाया भ्रम, भाजपा सरकार ने मार्च 2024 तक जारी की सभी की पेंशनः जोगाराम पटेल

चमकता राजस्थान

जयपुर। प्रदेश में भीषण गर्मी के चलते पैदा हुए पानी बिजली के संकट पर कांग्रेस नेताओं द्वारा की जा रही ओछी राजनीति पर पलटवार करते हुए भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी, कैबिनेट मंत्री जोगाराम पटेल और भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं विधायक कुलदीप धनखड़ ने प्रेसवार्ता को संबोधित किया। इस दौरान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि जब मुख्यमंत्री गहलोत के पास प्रदेश के लिए कुछ करने का अवसर था तब उन्होने कुछ किया नहीं, और अब प्राकृतिक प्रकोप पर राजनीति कर रहे हैं। गहलोत और डोटासरा को बंद ऐसी कमरों में बैठकर ट्वीट करने के बजाय फिल्ड में जनता के बीच जाना चाहिए और उनकी समस्याएं सुननी चाहिएं। गहलोत एक घोषणावीर मुख्यमंत्री है उनके लिए यह मुहावरा सटीक है, ''बोया पेड़ बबूल का तो आम कहां से होय''। 15 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में जल समस्या के समाधान की दिशा में ऐतिहासिक जल जीवन मिशन शुरू करने की घोषणा की थी। इस मिशन में भी गहलोत सरकार ने टेंडर घोटाला कर प्रदेश की जनता के साथ अन्याय किया। केंद्र सरकार की ओर से जल जीवन मिशन योजना के तहत राजस्थान को 27 हजार करोड़ फंड दिया गया था, लेकिन गहलोत सरकार ने इस फंड में से महज 6 हजार करोड़ ही खर्च किया। वहीं जल जीवन मिशन के तहत भाजपा सरकार ने 14,361 करोड़ के 42 टेंडर निकाले हैं। राजस्थान देश की कुल जनसंख्या का 10 प्रतिशत पानी खर्च करता है, जबकि हमारे पास पानी की उपलब्धता केवल 1 प्रतिशत ही है।

पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि कांग्रेस सरकार के समय प्रदेश में औसत जल कनेक्शन 986 थे, जबकि वर्तमान में भाजपा की भजनलाल सरकार के नेतृत्व में केवल तीन महिने में इन कनेक्शनों की संख्या बढ़कर 3877 कनेक्शन प्रतिदिन करने का काम किया है। पानी और बिजली दोनों विषयों को लेकर अशोक गहलोत सरकार ने कोई

काम नहीं किया। आज भाजपा की सरकार बनने के बाद केवल भ्रम का माहौल पैदा करने के लिए कांग्रेसी नेताओं द्वारा ओछी राजनीति की जा रही है। प्रदेश में कांग्रेस सरकार द्वारा बिजली की सुचारू सप्लाई के लिए कोई काम नहीं किया गया। राजस्थान में बिजली के कई प्रोजेक्ट कॉल आधारित है, ऐसे में छत्तीसगढ़ और राजस्थान दोनों जगह कांग्रेस की सरकार होने के बावजूद पूर्व सीएम अशोक गहलोत के कार्यकाल में प्रदेश में कोयला संकट बना रहा। प्रदेश के कई थर्मल पावर प्लांट बंद हो गए थे। वहीं राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार बनते ही आपसी सामंजस्य से महज तीन माह में कॉल को लेकर कई महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट पर एग्रीमेंट किए गए, जिनसे प्रदेश को 3325 मेगावाट बिजली मिलेगी। इसके साथ ही भाजपा की भजनलाल सरकार ने सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा के क्षेत्र में भी कई प्रोजेक्ट पर काम शुरू कर दिया। वर्तमान भाजपा सरकार ने कुसुम योजना के तहत अगले दो वर्षों में 5200 मेगावाट के संयंत्र लगाने का लक्ष्य रखा है, जिस पर काम शुरू हो गया। वहीं दूसरी ओर पूर्व सीएम अशोक गहलोत और उनकी पार्टी के नेता लगातार 5 साल तक शासन में रह कर झूठ पर झूठ बोलते रहे और प्रदेश की जनता को झूठा आश्वासन देते रहे।

भाजपा सरकार में कैबिनेट मंत्री जोगाराम पटेल ने प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश में सामाजिक सुरक्षा पेंशन की राशि बकाया होने को लेकर कांग्रेसी नेताओं द्वारा पूर्ण रूप से भ्रम फैलाया जा रहा है। जबकि भाजपा की भजनलाल सरकार ने सत्ता में आने के बाद सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रतिमाह पहुंचाने का कार्य किया। मार्च 2024 तक सभी पात्र पेंशनधारियों को सरकार ने पेंशन दी है। इतना ही नहीं, भाजपा द्वारा संकल्प पत्र में किए गए वादें को पूरा करते हुए 1 अप्रैल 2024 से 15 प्रतिशत बढ़ोतरी के साथ पेंशन देने की दिशा में भी काम पूरा किया जा चुका है। 4 जून के बाद आचार संहिता हटने के साथ ही पेंशनधारियों को बढ़ी हुई पेंशन मिलेगी। भाजपा सरकार पर पेंशन की पेंडेंसी को लेकर आरोप लगाने वाले कांग्रेसी नेता ये भूल गए है कि उनके कार्यकाल में तीन से चार माह देरी से पेंशन मिलती थी। भाजपा सरकार ने इस काम को मिशन के रूप में लिया और पेंडेंसी को खत्म करने का काम किया। पूर्व सीएम अशोक गहलोत लोकसभा चुनावों की संभावित हार को देखकर बोखलाए हुए है, वे अपनी झेंप मिटाने के लिए अनर्गल बयानबाजी कर रहे हैं।

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं विधायक कुलदीप धनखड़ ने प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश में भीषण गर्मी को देखते हुए भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशन में भाजपा प्रदेश मुख्यालय पर कंट्रोल रूम बनाया गया है। कंट्रोल रूम में प्रतिदिन मॉनिटरिंग के लिए भाजपा प्रदेश पदाधिकारी एंव अन्य कार्यकर्ता आमजन की शिकायतें सुनकर उनका समाधान करेंगे। प्रदेशवासी 0141-2220841 नंबरों पर फोन कर अपनी शिकायत दर्ज करवा सकते है।

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं विधायक कुलदीप धनखड़ ने कहा कि भाजपा वह राजनैतिक दल है जिसमें सत्ता और संगठन मानवता के लिए सदैव तत्पर रहते है। एक ओर जहां सरकार के स्तर पर कंट्रोल रूम बनाया गया है वहीं भाजपा संगठन की ओर से भी आमजन को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से कंट्रोल रूम बनाया गया है। प्रदेश में पहली बार विधायकों को अपनी विधानसभाओं में जाकर आमजन की पानी, बिजली सहित अन्य समस्याओं के निस्तारण का जिम्मा दिया गया है। पहले केवल संभाग स्तर पर या जिला स्तर पर इस तरह की कवायद होती थी। विशेष रूप से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बेजुबान पशु-पक्षियों के लिए चुग्गा-पानी की व्यवस्था करने की अपील की है। इसके तहत प्रदेशभर में पक्षियों के लिए परिंड़े लगाने के साथ ही उन्हें भीषण गर्मी से कैसे बचाया जाए इसके उपाय किए जा रहे है।

सीएम भजनलाल शर्मा और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी की प्रदेश की जनता से अपील, पशु-पक्षियों के लिए चुग्गा-पानी की करें व्यवस्थाः कुलदीप धनखड़

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए एम बी प्रिंटर्स, सी 74 सुदर्शन पूरा, जयपुर से मुद्रित एवं 1ए देवी नगर विस्तार, देवी नगर गली नं. 6 जयपुर 302019 से प्रकाशित। सम्पादक : अभय सिंह चौहान,
मोबाइल : 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार) संपादक : खलील कुरैशी, मोबाइल : 7891542929